+2
M.I.L.
हिन्दी
गाईड

+2 M.I.L. (हिन्दी)

आलोचनात्मक अध्ययन

(ARTS/COMMERCE/SCIENCE)

लेखिका

डा० कुमुदिनी पाणिग्राही

ममता वर्मा (एम.ए)

प्रकाशक

विद्या ज्योति

माणिक घोष बजार, कटक - 2

+2 M.I.L. (हिन्दी)

प्रकाशक
विद्या ज्योति
माणिक घोष बजार, कटक - 2
दूरभाष : 2619173

Distributors
VIDYA SAGAR
ManikGhosh Bazar
Cuttack : 753002
Ph : 2619173
Mobile : 9437019173

Price : 50/

सूची

COURSES OF STUDIES
HINDI – M.I.L.
FIRST YEAR

गद्यगौरव : सम्पादक डॉ० अजय कुमार पटनायक

१. ईर्ष्या तु न गई मेरे मन से – रामधारी सींह दिंनका

२. सोना हिरनी – महादेवी वर्मा

हिन्दी काव्यधारा :

१. कबीर

२. सूरदास

३. तुलसी दास

४. बिहारी

चर्चित कहानियाँ

१. ठाकुर का कुआँ – प्रेमचन्द

२. हार की जीत – सुदर्शन

३. आदमी का बच्चा – यशपाल

Mark Distribution (50 marks)

गद्यगौरव

One Explanation – 04 marks
One Long Question – 06 marks
One Short Question – 03 marks

हिन्दी काव्य धारा

One Explanation – 04 marks
One Long Question – 06 marks
One Short Question – 02 marks

चर्चित कहानी

One Long question – 05 marks

Essay : One to write from given Topic 08 marks
Grammer & Retranslation – 12 marks

Total – 50 marks

COURSES OF STUDIES
HINDI – M.I.L.
SECOND YEAR

गद्यगौरव :

१. अतिथि – रामविलास शर्मा
२. आधुनिकता और साहित्य – डॉ० नगेन्द्र

हिन्दी काव्यधारा :

१. किरण – ~~जयराम प्रसाद~~ जयशंकर प्रसाद
२. जागो फिर एकबार – निरांला
३. औ मेघ – मुक्तिबोध
४. कालिदास से – नागार्जुन
५. चेक हुए कलाकार से – धर्मेवीर भारती

चर्चित कहानियाँ

१. पुरस्कार – जयशंकर प्रसाद
२. सदाचार का तावीज – हरिशंकर परसाई
३. हार – ~~मन्द भण्डारी~~ मन्नु भण्डारी

<u>Mark Distribution (50 marks)</u>

गद्यगौरव

One Explanation – 04 marks
One Long Question – 06 marks
One Short Question – 03 marks

हिन्दी काव्य धारा

One Explanation – 04 marks
One Long Question – 06 marks
One Short Question – 02 marks

चर्चित कहानीयाँ

One Long question – 05 marks
Essay : – 08 marks
Grammer – 07 marks
Re-Translation (From English to Hindi – 05 marks

Total – 50 marks

कबीरदास (दोहा)

कवि परिचय -

कबीर हिन्दी साहित्य के सन्त शिरोमणि हैं । संत कबीर का स्थान हिन्दी कवियों में विशेषतः भक्त और समाज-सुधारक संत कवियों में बड़ा ही सम्मानपूर्ण है, इनके दोहे न केवल हिन्दी कवियों में अपिंतु पूरे हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ हैं, कबीरदास भक्तिकाल के कवि थे । अपनी प्रत्येक रचनाओं में उन्होंने भक्ति रस को ही स्थान दिया है और इसी कारण वे हिन्दी साहित्य में सूर्य और चन्द्रमा के समान अमर हैं । उनका जन्म १३६८ से १५१८ ई० के अन्तर्गत माना जाता है । इनके जन्म के बारे में यही कहा जाता है कि नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पति ने उन्हें लहरतारा तलाब के निकट से लाकर उनका पालन-पोषण किया था । कबीर सांसारिक थे । उनकी पत्नी का नाम लोई और पुत्र-पुत्री का नाम क्रमशः कमाल और कमाली था । कबीर अपने परिवार के पालन-पोषण के लिये अपने मौरूसी पेशे (सूत और वस्त्र निर्माण) से ही अपना भरण-पोषण करते थे । स्वामी रामानन्द के सम्पर्क में आकर उन्होंने रामानन्द को अपना गुरु बनाया और स्वामी रामानन्द का शिष्यत्व ग्रहण करने के पश्चात् वे भक्ति भाव में मग्न हो गये और संत कबीर कहलाए ।

कबीरदास ने मध्ययुग में पण्डितों और मुल्लाओं के धार्मिक साम्राज्य के विरुद्ध सर्वहारा सन्तों ने जो प्रबल साहित्यिक क्रांति की थी, उसका नेतृत्व और स्वर वहन ही किया था । उन्होंने हमेशा वर्ण-धर्म, ऊँच-नीच और धर्मसमाज के स्थित बाह्यचारों और ब्राह्मणवादी प्रवृति का तिरस्कार करते हुए, अपने अन्दर के ज्ञान को प्रकट करने की जिज्ञासा जागृत करने की कोशिश की थी।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तकवि कबीरदास द्वारा रचित 'दोहे' शीर्षक कविता से अवतरित की गई हैं । यहाँ ईश्वर शक्ति, प्रभु की कृपा की लहर किस तरह जनता के सम्पूर्ण दुःख, कष्ट , क्लेषों को नष्ट करने के लिये पर्याप्त हैं, उसके बारे में वर्णन किया गया है ।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते हैं कि जिस मानव के हृदय में ईश्वर का वास है, वह बेकार में क्यों दुःखी होगा ? अर्थात् उसे किसी प्रकार का दुःख चिन्ता होनी ही नहीं चाहिये। वह दुःखी हो ही नहीं सकता। समुद्र की एक लहर ही मुक्ताओं का ढेर लगा कर दुःख-दरिद्र मिटा देती है, उसी दयालु प्रभु की अनुकम्पा की एक लहर, नजर ही मनुष्य के सारे क्लेशों को नाश कर देने के लिये पर्याप्त है। इसलिए हे मनुष्य ! प्रभु का नाम जाप कर, आस्था, विश्वास रख , नहीं तो बिना विश्वास से प्रभु भक्ति के समस्त साधन व्यर्थ हो जाएंगे ।

विशेष - रूपकातिशयोक्ति अलंकार का वर्णन है । इन पंक्तियों में कवि ने मानव को ईश्वर भक्ति, शक्ति और आस्था, विश्वास की ओर प्रेरित किया है।

२) **जहाँ न चींटी ....पहुँचे जाई ॥**

शब्दार्थ - राई - सरसों जैसा दाना । **गमि** - गमन करना ।

व्याख्या - इन पंक्तियों में कबीर ने ईश्वर शक्ति,ईश्वरीय सत्ता को प्राप्त करने का संदेश दिया है ।

कबीर ने यहाँ अपने भाव का वर्णन किया है । वे कहते हैं कि उस निराकार ब्रह्म को प्राप्त करने का मार्ग बड़ा ही कठिन है । जहाँ चींटी भी नहीं चढ़ सकती और राई का दाना भी जहाँ ठहर नहीं सकता, जहाँ मन भी गति नहीं कर सकता, किन्तु वहाँ कबीर पहुँच चुके हैं,उन्होंने सारे कष्टों को सहकर ब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया है।जहाँ कोई भी आज तक पहुँच नहीं पाया है,उस अनन्त सत्ता को प्राप्त करने का मार्ग अत्यंत कठिन है, जहाँ किसी का भी

पहुँचना दुर्लभ है, जहाँ पवन तथा मन भी गति नहीं कर सकते वहाँ, उस अवस्था में मैं पहुँच गया हूँ ।

कहने का तात्पर्य है सच्चे भक्त ही ब्रह्म का साक्षात्कार कर सकते हैं, मन में लगन, विश्वास और सच्ची भक्ति ईश्वर के प्रति होनी चाहिये, जो भक्त है, वही उस तक पहुँच सकता है ।

(३) बैद मुवा राग मुवा........जिन के राम अधार ।

शब्दार्थ -**मुवा**- *मर गया या नष्ट हो गया ।*

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर दास कहते हैं कि वैद्य जो सारे संसार के रोगी को दुःख-कष्ट से बचाता है वह समाप्त हो गया, नष्ट हो गया और रोगी का रोग भी ठीक ना हुआ किन्तु वह भी काल के मुँह अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हुआ और संसार भी उसके उपचार से नष्ट हो गया। कबीर कहते हैं कि कोई जीवित है तो कबीर है जिसका एक मात्र आश्रय राम हैं। वे कहते हैं कि जो प्रभु की अनुकम्पा पर भरोसा करते हैं, जो सच्चे मन से प्रभु की आराधना करते हैं उनकी इस संसाररूपी रोग से रक्षा हो सकती है । केवल एक मात्र राम, ईश्वर का स्मरण ही मनुष्य को सांसारिक रोगों से मुक्ति प्रदान कर सकता है ।

तात्पर्य यही है कि रोगों को ठीक करने वाला वैद्य मर गया है, वे रोगी भी मर गये हैं, संसार भी समाप्त हो गया है पर बचा कबीर है, प्रभु राम की अनन्य भक्ति ने उन्हें जीवित रखा है। यहाँ ईश्वरीय महिमा और नाम स्मरण के बारे में वर्णन किया है ।

विशेष - विरोधाभास

(४) यह तन जालों मसि करूँ ..... बरसि बुझावै अग्गि ।

शब्दार्थ* - *मसि*=*क्षार, राख । सरग्गि = स्वर्ग ।मति=संभव है । अग्गि = आग। विरह =जुदाई, दुःख । धुवाँ = धुआँ ।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों में कबीरदास ने ईश्वर को पाने की व्याकुलता प्रकट की है ।

कवि कहते हैं कि "मैं अपना शरीर भस्म कर लूँ ताकि उसका धुँआ स्वर्ग जाकर ईश्वर को मुझे दर्शन देने के लिये विवश कर दे" । वे कहते हैं "आशा है वे अपनी कृपादृष्टि रूपी जल से मेरी विराहाग्नि को शान्त कर दें ।" यहाँ आत्मा से परमात्मा का साक्षात्कार करने के लिये कह रहे हैं तन भस्म हो कर उसके धुआँ को देख, शायद वे दयानिधि राम अपनी कृपा दृष्टि के जल से उस विरहाग्नि और शरीर के ताप को बुझा दें । कबीर ईश्वर की दयादृष्टि पाने के लिये व्याकुलता व्यक्त कर रहे हैं । तभी जीव रूपी आत्मा को शान्ति मिल सकती है ।

(५) ऊँचे कुल का जनमियाँ .... साधु निन्दा सोइ ।

शब्दार्थ - **कुल** =खानदान । **जनमियाँ** = जन्म लेना । **करनी** = काम। **सोवन** =स्वर्ण । **सुरै** =मदिरा । **निद्या** = निंदा करते है ।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कबीरदास ने उज्ज्वल चरित्र की महत्ता का प्रतिपादन किया है । वे कहते हैं कि जिस प्रकार सोने का कलश यदि मदिरा से भरा हुआ है तो वह निंदनीय है उसकी कोई भी व्यक्ति प्रशंसा नहीं करेगा । साधु व्यक्ति भी उसकी निन्दा करते हैं । उसी प्रकार अगर कोई उच्च कुल का है परन्तु उसका कर्म अच्छा नहीं तो वह निन्दनीय होता है । उसकी कोई प्रशंसा नहीं करता। इसलिए उच्च कुल का होना महत्व नहीं रखता, केवल उच्चकर्म और अच्छा चरित्र ही महत्व रखता है ।

कहने का तात्पर्य है कि इंसान कर्म से उँचा होता है, ऊँचे कुल से नहीं जितना भी धनवान व्यक्ति ही क्यों न हो । ठीक उसी प्रकार मदिरा से युक्त स्वर्ण कलश साधुओं द्वारा प्रशंसा के योग्य नहीं रह जाता ।

विशेष - दृष्टान्त और अर्थान्तरन्यास का संकट हैं ।

(६) कबीर सोई दिन ....पाप सरीरौ जाहिं ।

शब्दार्थ - मिलहि =मिलना । सरीरौ =शरीर का ।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कबीर ने साधु की महत्ता का प्रतिपादन किया है । वे कहते हैं व्यक्ति के लिये वह दिन बहुत शुभ एवं मूल्यवान होता है जिस दिन उसके दर्शन साधु महात्मा से हो जाएँ क्यों कि उनसे मिलने पर, उनका आशीर्वाद प्राप्त करने से मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं । साधुओं के उपदेश का पालन कर वे सही दिशा की ओर अग्रसर होते हैं ।

कबीर कहते हैं कि मनुष्य के लिये वह दिन शुभ होता है जब वह किसी साधु महात्मा से मिल कर उनको प्रेमपूर्वक आलिंगन करता है क्यों कि इससे मनुष्य के शरीर का सारा पाप नष्ट हो जाता है। संतो के दर्शन से जीवन धन्य एवं उज्ज्वल हो जाता है ।

(७) संत न बाँधे गाँठड़ी .... जहाँ माँगे तहाँ देइ ॥

शब्दार्थ - गाठड़ =गठिया, पोटली । सन्मुख = सम्मुख, पास । देइ = देन ।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यह बतलाना चाहते हैं कि साधुओं का एक मात्र लक्ष्य भगवान की प्राप्ति होता है ।

कबीर कहते हैं कि साधु-महात्मा अपने जीवन संचय के लिये गांठड़ी बाँध कर नहीं रखते । वे उतना ही लाते हैं जितनी उनको आवश्यकता है। वे कभी कल के विषय में नहीं सोचते क्योंकि ईश्वर की उन पर असीम अनुकम्पा रहती है । वे जब जो माँगते हैं, ईश्वर उनकी सारी मनोकामना पूर्ण करता है क्यों कि वे सच्चे भक्त होते हैं। ईश्वर पर भरोसा करने से सारी मनोकामना पूर्ण होती है।

कहने का तात्पर्य है कि साधु उतनी ही सामग्री लाता है जितनी उसकी आवश्यकता है। वह कल के विषय में नहीं सोचता। सांसारिक सुखों की कामना

नहीं करता । उसे ईश्वर पर पूर्ण विश्वास है इसलिए जब उसे जो जरूरत होती है ईश्वर उसकी सारी इच्छा पूर्ण करता है। वे भी कोई वस्तु संचय करके नहीं रखते ।

विशेष - साधु का लक्ष्य भगवान की प्राप्ति होती है । सांसारिक मोह-माया बन्धन नहीं ।

(८) प्रेम न खेतों नीपजै .... सिर दे सो ले आई ।

***शब्दार्थ - खेतों** = खेत । **नीपजें** - उत्पन्न होता है ।*

व्याख्या - कबीरदास जी इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहते हैं कि प्रेमभाव से रहना चाहिये । अहंकार का त्याग ही सच्चा प्रेम है ।

कवि कहता है कि प्रेम न तो पौधों की तरह खेतों में उपजता है , नहीं तो कोई बाजार में बिक्री होता है यह प्रभू प्रेम-अहंकार त्याग से प्राप्त होता है । मन में अपना- पराया, मैं-तू, हिंसा, द्वेष, अहंकार अगर ना हो तो कोई भी इस प्रेम को प्राप्त कर सकता है , चाहे वह राजा हो या प्रजा या कोई निर्धन । सच्चा प्रेम वही होता है जिसमें समर्पण हो एवं अहंकार का त्याग हो ।

कवि का तात्पर्य है सच्चा प्रेम या प्रभु प्रेम कहीं बिकता नहीं और न खेतों में उगता है। इसे हर जाति-धर्म, वर्ण, गरीब,अमीर सब प्राप्त कर सकते हैं पर मन से अहंभाव का त्याग करना होगा । समर्पण एवं अहंकार का त्याग ही सच्चा प्रेम है । प्रभु को पाने के लिये सच्ची भक्ति करनी पड़ती है जो केवल समर्पण से प्राप्त हो सकती है ।

विशेष - रूपकातिशयोक्ति अलंकार ।

(९) ज्यूँ नैनूं में पुतली .... बाहरि ढूँढण जाहिं ।

***शब्दार्थ - वलिक** =प्रभु । **जाणहीं** = जानना ।*

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने निर्गुण निराकार ब्रह्म की प्राप्ति के बारे में बताया है ।

कवि कहते हैं कि जिस प्रकार आँखों के अन्दर पुतली होती है पर स्वयं हम उसे देख नहीं पाते, उसी प्रकार मनुष्य के भीतर ही ईश्वर वास करते हैं, प्रत्येक व्यक्ति के कण-कण में ब्रह्म का वास है, फिर भी वह मंदिर और मस्जिद में तलाश के लिये घूमता रहता है, उसका खोजना उसकी मूर्खता हैं, ईश्वर सर्वत्र हैं, उन्हें बाहर खोजना नहीं चाहिये, क्योंकि वह उस पुतली के समान हमारे हृदय में हमेशा विद्यमान रहते हैं ।

कहने का तात्पर्य है मोह-माया, भेद-भाव, अहंकार के कारण मानव भ्रम में घूम रहा है. मूर्ख हो रहा है । इस कारण हृदय में बसे भगवान को वह साक्षात्कार नहीं कर पाता । जो लोग उन्हें बाहर मंदिर-मस्जिद में खोजते हैं वे मूर्ख होते हैं ।

(१०) दोस पराये देखि करि .....जिनको आदि न अंत ।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कबीर ने परनिन्दा से बचने का उपदेश दिया हैं ।

व्याख्या - कवि कहता हैं कि हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ बुराई होती है । उसे हमेशा अपने अन्दर छिपी बुराई को देखना चाहिये । उसे दूसरों की बुराइयाँ नहीं देखनी चाहिये । उसे स्वंय के अवगुणों को पहचानना चाहिये । उसे सुधारना चाहिये । दूसरों के अवगुणों पर हँसना नहीं चाहिए । परनिन्दा महापाप है ।

कहने का तात्पर्य है दूसरों की बुराई अथवा गलतियाँ देख कर मनुष्य हँसता है। किन्तु उसके मन में कितनी बुराइयाँ, कितने अवगुण हैं वह नहीं देखता, जिनका कोई अंत नहीं। इसलिए परनिन्दा नहीं करनी चाहिये ।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर :

प्रश्न १ किस प्रकार का मनुष्य दुःखी नहीं हो सकता ?

उत्तर -जिस मनुष्य का मन परमेश्वर से मिलने के लिये हमेशा तत्पर रहता है , जो दिन-रात, ईश्वर का स्मरण करता है, जो उसकी सत्ता पर विश्वास

करता है वह दुःखी हो ही नहीं सकता, क्योंकि प्रभु कि अनुकम्पा की एक लहर मनुष्य के सारे संताप, क्लेशों को विनष्ट कर देने के लिये पर्याप्त है ।

प्रश्न २-समुद्र की लहर के साथ किसकी तुलना की गई है ?

उत्तर - समुद्र की लहर के साथ प्रभु की महिमा, दया, अनुकम्पा की तुलना की गई है । समुद्र की एक लहर जिस प्रकार मुक्ताओं की भरमार कर दुःख दारिद्रय मिटा देती हैं, उसी प्रकार प्रभु की दया-दृष्टि की लहर सारे दुःख दर्द मिटा देती है ।

प्र.३ - कबीर संसार को नश्वर और अपने को अमर क्यों कहते हैं ?

उत्तर - कबीर संसार को नश्वर और अपने को अमर कहते हैं क्यों कि जो सबके रोग दूर करता है वह वैद्य भी मर जाता है,पर उससे रोग ठीक नहीं होता क्योंकि वैद्य का उपचार सही उपचार नहीं है । कहने का तात्पर्य है कि कबीर को जीवन अमृत 'राम' का सहारा मिल गया है उन्हें काल छू भीं नहीं सकता किन्तु संसार आज भी मोह-माया में बंधा है जिससे वह नश्वर है ।

प्र.४. कबीर ने ईश्वर को प्राप्त करने की व्याकुलता को किस प्रकार प्रकट किया है ?

उत्तर - भक्त को भगवान के सिवा कहीं आस्था नहीं होती । कवि कहते हैं–विरही आत्मा को भगवान के दर्शन से ही परमशांति मिलती है, इसलिये जीवात्मा परमात्मा को पाने के लिये अपने आप को राख कर देगी, जिससे उस राख की धुआँ ऊपर आकाश मण्डल को छूकर भगवान की आँखें खोलने में कामयाब होगी । इस प्रकार प्रभु की दयादृष्टि प्राप्त हो जायेगी ।

प्र.५. उज्वल चरित्र की महत्ता किस प्रकार कबीर ने प्रतिपादित की है ?

उत्तर -उज्ज्वल चरित्र कर्म से होता है । मनुष्य के चरित्र की पहचान उसके संस्कार, व्यवहार, गुण आदि से होती है ना कि ऊँचे कुल, धनी वर्ग में

जन्म लेने से । इसलिए कबीर ने उज्ज्वल चरित्र कर्मशील व्यक्ति को कहा है । उच्च कुल से उज्ज्वल चरित्र नहीं होता, केवल उच्च कर्म और अच्छा चरित्र ही महत्व रखता है ।

प्र०६ कब मनुष्य अपने को महान या गौरवशाली समझता है ?

उत्तर- उच्च कर्म और अच्छे चरित्र से ही वह अपने को गौरव मंडित करता है । ऊँचे खानदान में पालन-पोषण से कोई महान नहीं होता ।

प्र०७ किस दिन को कबीर ने उत्तम या महान दिन कहा है ?

उत्तर - कबीर कहते हैं जिसे दिन साधु-संत की संगति प्राप्त हो वही दिन महान है वहीं ईश्वर का साक्षात्कार हो जाता है । इससे पापी व्यक्ति भी सही मार्ग का अनुसरण करते हैं उन्हें उससे प्रेरणा मिलती है ।

प्र.८. साधु का व्यक्तित्व कैसा होता है ?

उत्तर - साधु में धैर्य होता है वह शान्त प्रवृत्ति का होता हैं । लोभ-माया, मोह-से वह सौ गुना दूर होता है। वह कल के बारे में सोचना और जोड़-जोड़कर रखना पसन्द नहीं करता । वह आज पर विश्वास करता है क्योंकि भगवान पर उसे पूरा विश्वास है । इसलिए जब जरूरत होती है ईश्वर शीघ्र उसकी सुनता है ।

प्र.९. सच्चे प्रेम को प्राप्त करने के लिये अहंकार का त्याग आवश्यक है, क्यों ?

उत्तर - सच्चा प्रेम अर्थात् ईश्वर कृपा को प्राप्त करना या ईश्वर प्रेम को प्राप्त करना। प्रेम में अहंकार, घृणा, अपना-पराया, ऊँच-नीच का कोई स्थान नहीं होता वह तो सत्य है, शिव है और सुन्दर है । अहंकार को बिना त्यागे सच्चा प्रेम नहीं मिल सकता इसलिये अहंकार का त्याग आवश्यक है, तभी प्रेम प्राप्त होगा ।

प्र.१०. ईश्वर का दर्शन प्राप्त करने के लिये मनुष्य को अन्तर्मुखी होने की प्रेरणा क्यों दी है ?

उत्तर -अन्तर्मुखी होने की प्रेरणा कबीर ने इसलिये दी है कि ईश्वर हमारे हृदय में रहता है। कण-कण में वह विद्यमान है पर मोह-माया का परदा आँखों पर होने के कारण मनुष्य अपने हृदय में नहीं ढूँढता और मंदिर-मस्जिद में खोजता, आवाज लगाता रहता है । इसलिये जो चीज हम खाली आँखों से नहीं देख पाते उसे हम अन्तर की आँखों से मन से देख सकते हैं ।

प्र.११. नेत्रों की पुतली के साथ किसकी तुलना की गई है और क्यों ?

उत्तर - नेत्रों की पुतली के साथ निराकार ब्रह्म अर्थात् भगवान की तुलना की गई है क्योंकि हम अपनी पुतली को अपनी आँखों से नहीं देख पाते पर वह हमारे हृदय में रहती है । उसी प्रकार आत्मा के रूप में निवास करने वाले ईश्वर भी हमें दिखाई नहीं देते और हम उन्हें मंदिर-मंदिर ढूँढते रहते हैं।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्र.१- कबीरदास तथा उनके विचारों पर संक्षिप्त में प्रकाश डालिये?

उत्तर - भक्ति काल के कवि कबीरदास ने अपनी मधुर वाणी से समाज मे व्याप्त बुराइयों को दूर कर आर्दश समाज के निर्माण का प्रयास किया । वे हिन्दी साहित्य के शिरोमणि हैं । उन्होंने अपनी आवाज से सारे संसार में क्रांति कर दी । कवि का जीवन-वृत्त किम्वदंतियों पर आधारित है । इनका जन्म १४००ई० से लेकर १५१७ तक के अन्तर्गत माना जाता है । नीरू तथा नीमा नामक जुलाहा दम्पति ने लहरतारा नामक तलाब के पास इन्हें पाया । प्रारम्भ से ही 'राम' नाम का जप करते एवं ततूपश्चात रामानन्द को उन्होंने अपना गुरु बनाया । वे अपनी बोली के धनी थे , कहते समय जरा भी भय नहीं करते थे, समाज की बुराई, अन्धविश्वास, कुसंस्कार, धार्मिक अन्धविश्वास को देख कबीर की आत्मा रोती थी । समाज की इस प्रकार की अवस्था को देखकर

उनसे रहा न गया और फिर उन्होंने जन जागरण आरम्भ किया । निर्भीक हो वह बुराइयों का विरोध करते थे ।

कबीर को अक्षर ज्ञान न था। उन्हें अनुभवजन्य ज्ञान था। उन्होंने समाज सुधार एवं लोगों को सही रास्ता दिखाने के लिये अपनी भावना और विचारों को कविता के माध्यम से रखा । समाज में फैली बुराइयों को दूर करने के लिये इन्होंने अपना तन-मन लगा दिया । जहाँ उदास, दुःखी, दरिद्र लोग दिखाई देते थे वे दौड़ कर उनकी समस्या को सुलझाने के लिये जाते थे ।

कबीर के समय समाज में तरह-तरह की समस्याएँ थीं। उन्होंने संसार को वह मार्ग दिखाया जिस मार्ग पर सच्चा ज्ञान, सच्चा प्रेम, आत्मा -परमात्मा का जहाँ साक्षात्कार होता है । धर्म को लेकर हिन्दू-मुसलमान आपस में लड़ते थे । कबीर ने ईश्वर को एक बताकर धर्म में एकता जाग्रत की । वे समाज में व्याप्त अन्धविश्वास को दूर करने के लिये पुरानी मान्यताओं को तोड़ते हुए संस्कार लाने के लिये आवाज बुलन्द करते थे । वे मठ, मन्दिर, मस्जिद आदि की स्थापना का विरोध करते थे । वे कहते थे अगर ईश्वर का साक्षात्कार करना है और सच्चे धर्म को जानना है तो मन के भगवान को देखो अन्तर्मुखी बनो । अहंकार, आडम्बरों का त्याग करो । उनके काव्य के मूल विषय - ढ़ोंग का खंडन, ईश्वर प्रेम, गुरु महिमा, सच्चा ज्ञान, ईश्वर से साक्षात्कार और जाति विरोध ही रहे हैं ।

कबीर ने अपने विचारों को हमेशा दूसरों तक पहुँचाया,वे एक क्रांतिकारी कवि थे । कहते हैं कबीर कवि कम संत अधिक हैं । सच्चे समाज सुधारक के रूप में समाज में अपनी नींव जमाई । भ्रमण करते हुए उनकी भाषा में अवधी, ब्रज, खड़ी-बोली , फारसी, अरबी, गुजराती, राजस्थानी और पंजाबी भाषा के शब्द समाहित हो गये । इसलिये इनकी भाषा को सधुक्कड़ी अथवा खिचड़ी भाषा कहते है ।

प्र.२ कबीर की भक्ति भावना का वर्णन कीजिये ?

उत्तर - भक्ति-भाव हृदय की मधुरता और आत्मा के उन्नयन की बोधक भावदशा है । मानव हृदय की मनोरम और शुद्ध भावना ही भक्ति की प्रेरक है, जो अपने आराध्य को परम सुन्दर और आत्मा को शुद्ध बनाती है । रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार 'श्रद्धा और प्रेम' के योग का नाम भक्ति है । सामान्य रूप से भक्ति भगवद्विषयक प्रेम को कहते हैं । भक्ति काल के कवि कबीर का स्थान निर्गुण भक्ति धारा में है। कबीर को निर्गुण साधना का भक्त कहा जाता है। कबीर ने निर्गुण संत होने के नाते अपनी भक्ति को 'भाव भगति' कहा है । इस भवसागर से पार होने के लिये भगवान के प्रति भक्ति भावना आवश्यक है । इसलिये इन्हें कवि कम भक्त अधिक कहते है -

'जब लगि भाव-भगति नहीं करिहौं,
तब लगि भवसागर क्यों तरिहौ ।''

कविता करना कबीर का लक्ष्य नहीं था, अपितु साधना था। वे अपने भावों, विचारों को सरल वाणी से जनता के सामने उजागर करते थे । कबीर की भक्ति ने भारतीय जन-मानस को उस समय अवलम्बन प्रदान किया जब वह सिद्धों और योगियों की साधना से ऊब रही थी ।

कबीर को एक साधारण मनुष्य से भक्त बनाने का श्रेय उनके गुरु रामानन्द को जाता है । उन्हें गुरु के कारण इतनी प्रेरणा मिली कि 'राम राम के प्रचार से धर्म-धर्म के भेद भाव समाप्त हो गये । इन्होंने भक्ति को मुक्ति का एक मात्र साधन माना है, स्थान-स्थान पर भक्ति की महत्ता प्रतिपादित की है ।

'भक्ति नसैनी मुक्ति की '

मुक्ति के साथ-साथ संसार के दुःख-शमन का भी साधन प्रभु ही है ।

'भाव भगति विसवास बिन, कटै न संसे मूल ।
कहे कबीर हरि भगति बिन, मुकति नहीं रे मूल ।'

भक्ति मार्ग में तो एक मात्र मार्गदर्शक गुरु ही है, गुरु के बिना तो भक्ति सम्भव नहीं ।

'सतगुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपकार ।
लोचन अनत उघाडिया, अनत दिखावन हार ॥'

कबीर की भक्ति किसी एक सम्प्रदाय के द्वारा प्रभावित नहीं थी । वह जो सोचते, विचारते, अनुभव करते थे, उसे वाणी के रूप में प्रदान करते थे या कविता का रंग उस पर चढ़ा देते थे । उनके प्रभु का रूप कहीं सगुण है तो कहीं निर्गुण है । उनके अनुभव के द्वारा ईश्वर या ब्रह्म के स्वरुप का परिवर्त्तन हो जाता है । वह पुस्तकीय ज्ञान से अगम्य पर प्रेम से प्राप्य हैं । अनुभूति का विषय है, सहज भाव से भक्ति है । कहते हैं कबीर पहले भक्त हैं फिर कवि हैं । कबीर ईश्वर की अद्वैत सत्ता को स्वीकार करते हुये लिखते हैं -

"कस्तुरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन माहिं
ऐसे घट-घट राम है, दुनिया देखे नाहिं"

स्वार्थ भावना से की गयी भक्ति के कबीर घोर विरोधी थे । वे निष्काम भाव की भक्ति को मानते हैं । स्वार्थभाव से अहंकार, द्वेष जन्म लेता है । भक्ति में स्वार्थ कामना के वे सख्त विरोधी थे, तभी वे कहते हैं -

जब लगि भगति सकामता तब लगि निष्फल सेव ।

इसलिये अन्त समय तक प्रभु की भक्ति करने , नाम जपने का उपदेश उन्होंने दिया था । कबीर कहते हैं -

"कबीर निरभे राम जपि, जब लग दीवे बाति ।
तेल घटया बाती बुझी, सोवेगा दिन राति ।"

कबीर की भक्ति भावना में किताबी ज्ञान का कोई स्थान नहीं । वे कहते हैं कि किताबों से मानव में अहंकार जाग्रत होता है । वे ज्ञान तो सांसारिक बंधन

में उलझा देता है । पर भक्त के लिये इतना ही ज्ञान पर्याप्त है कि वह विषय वासनाओं से मुक्त हो , ईश्वर भजन करे -

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोय ।

ढाई आखर प्रेम का , पढ़ैं सो पंडित होय ।।"

कबीर दास जी ने भक्ति के प्रमुख तीन सहायक साधन बताये हैं (१) मानव शरीर (२) गुरु (३) सत्संग ।

चौरासी लाख योनियों में मानव जीवन एक ऐसा है जिसमें प्रभु के नाम -स्मरण से उनकी भक्ति की जा सकती है । अगर इस जीवन को भी व्यर्थ में नष्ट कर दिया तो ईश्वर का साक्षात्कार नहीं हो पायेगा । अतः अन्त समय में पश्चाताप के अलावा कुछ हाथ न लगेगा ।

"कबीरा हरि की भक्ति करू, तजि विषया रस चौज ।

बार-बार न पाई है मानुस जन्म की मौज ।"

भक्ति मार्ग में गुरु का स्थान भी महत्वपूर्ण है क्यों कि ब्रह्म का साक्षात्कार बिना गुरु के असम्भव है, वही हमें उसकी लीला के बारे में अवगत कराता है । भक्ति मार्ग का ग्रहण करने को प्रेरित करता है एवं गुरु के मधुर वचन के स्मरण से ही व्यक्ति भक्त बन जाता है । साधु-संगति की महिमा अपार है। भक्ति का वह आवश्यक अंग है । इसे कबीर ने स्वर्ग से भी अधिक महत्व प्रदान किया है।

"राम-बुलावा भजिया, दिया कबीरा रोय ।

जो सुख साधु-संग में, सो बैकुंठ न होय ।"

भक्ति मार्ग पर तो एक मात्र मार्गदर्शक गुरु ही है । गुरु के बिना तो भक्ति सम्भव नहीं है। गुरु ही भक्त को भगवान की ओर प्रेरित करने का मार्ग दिखाता है ।

"सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार ।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावन हार ।"

कबीर कहते हैं, भगवान को पाने के लिये पूर्ण समर्पण की भावना होनी चाहिये। निस्वार्थ भाव से की गई भक्ति शीघ्र ईश्वर मार्ग दिखाती है । अपने को सम्पूर्ण न्यौछावर करते ही भक्त ईश्वर -प्रेम को प्राप्त कर सकता है ।

"प्रेम न खेतों नीपजै, प्रेम न हाटि बिकाई ।
राजा परजा, जित रूचै, सिर देसों ले जाइ ।"

कवि की भक्ति भावना इतनी तीव्र है कि कवि अपने आप को आग में नष्ट कर देने तक की इच्छा प्रकट करता है । जिससे ईश्वर (प्रियतम) अपने कृपा अश्रु से उस आग के ताप को शायद बुझा दे । कबीर कहते हैं -

" यह तन जालैं मसि करूँ, ज्यूँ धुँआ जाई सरगि ।
मति वे राम दया करै बरसि बुझावै अग्गि ॥"

यह प्रेम अनन्त है अमर है, किसी भी अवस्था में भक्त प्रभु से मिलने के लिये कोशिश करता है । जो प्रभु-प्रियतम के अभाव में भी आत्मा परमात्मा, भक्त-भगवान के अटूट प्रेम की उद्घोषणा कर रहा है ।

इस प्रकार प्रभु की भक्ति-शक्ति किसी भी सम्प्रदाय, जाति, धर्म की नहीं, वह तो निराकार है सर्वव्यापी है। जो सांसारिक बंधनों से ऊपर है, विराट हैं, जिसे कोई भी सहज रूप से पा सकता हैं, इस प्रकार इनकी भक्ति पीयूष-सलिला भागीरथी के समान पावन है, जिसके पुनीत फूलों पर न जाने कितनों को विश्रांति मिली हैं ।

प्र.३. कबीरदास ने अपने दोहों के माध्यम से समाज को क्या उपदेश दिया है ?

उत्तर - कबीरदास का जन्म ऐसे समय में हुआ जब राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियाँ चरमरा गई थीं। तब देश विदेशियों के अव्यवस्थित शासन में गुजर रहा था। चारों तरफ असफलता, हिंसा का बोलबाला था। अन्धविश्वास के कारण मानव अपने भविष्य को नरक बना रहा था। ऐसे ही समय कबीर का जन्म हुआ। हर वक्त धर्म सम्प्रदाय को लेकर क्रांति होती रहती थी। अपने धर्म को श्रेष्ठ मान परधर्म की लोग निन्दा करते थे। ऐसे में भोले-भाले लोग पिस रहे थे। उनपर अत्याचार का पहाड़ टूट रहा था। कर्मकाण्ड का बोल-बाला था। हर व्यक्ति अपना उल्लू सीधा करने में लगा हुआ था। कबीर का भावुक हृदय इन सब व्यवस्था को देख सहन नहीं कर पाता था। उनका मन चीत्कार करने लगा और समाज में सुख-शान्ति आने तथा सुधार करने के लिये कबीर कमर कस तैयार हो गये। बिना समाज की परवाह किये उन्होंने अपने विचारों को कविता का रूप दे दिया। उनके लिये हर धर्म समान था, हर जाति समान, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब सबको समान दृष्टि से देखते थे। वे लोगों को सही रास्ता दिखाने के लिये गीत गाकर समझाते थे।

पुस्तकीय शिक्षा न मिलने पर भी उन्होंने सतसंग से जो कुछ सिखा उसे अपनी सधुक्कड़ी भाषा के माध्यम से लोगों तक पहुँचाते थे। उन्हें अनुभवजन्य ज्ञान था। उन्हें समाज में फैली हुई विसंगतियाँ देखी न जाती थी। वे झट से अपने विचार दे डालते थे। वे मिथ्या पूजा को नहीं मानेते थे, वे कहते थे कि वह व्यक्ति कभी दुःखी नहीं रह सकता जो सच्चे मन से प्रभु का नाम जपे, वह हमेशा शांति से परिपूर्ण होता है। आज मानव दुःखी है क्योंकि मोह-माया में स्वार्थ भावना से वह ईश्वर की पूजा करता है। मिथ्या पूजा पर उन्होंने व्यग्य किया है -

"जाकी दिल में हरि बसै, सो नर कलपें काँई।

एक लहरि समंद की, दुःख दलिद्र सब जाई।"

कबीर ने धनी वर्ग , ऊँचे कुल का भी विरोध किया है, उनके विचारों का खण्डन किया है । वे कहते हैं कि ऊँचे कुल में जन्म लेने वाला व्यक्ति ही ऊँचा नहीं होता , धन-दौलत, कुल खानदान से मनुष्य बड़ा नहीं होता । बड़ा वह अपने व्यवहार ज्ञान, और कर्म से होता है । उन्होंने अपने दोहे में उज्ज्वल चरित्र की महत्ता का प्रतिपादन किया है और धनी समाज और ऊँचे कुल पर करारी चोट की है ।

"ऊँचे कुल का जनमियाँ, जो करनी ऊँच न होई ।
सुवरन कलस सुरा भरया, साधु निन्दा सोइ ।।

वे कहते हैं, तेरे-मेरे की भावना में नहीं भटकना चाहिए । तेरे-मेरे का बन्धन अच्छा नहीं होता । जब सबका आधार ही भगवान हैं तब क्या मेरा और क्या तेरा। जैसे -

"मोर तोर की जेवरी, वहि बांधा संसार ।
दास कबीरा क्यों बंधे, जाके नाम आधार ।"

कबीर अपने दोहे के माध्यम से झूठी खुशी से खुश होना बेकार बताते हुए कहते हैं कि अच्छा दिन वही है जिस दिन तुम्हें साधु महात्मा मिल जाये, क्योंकि उनसे मिलने पर उनका आशीर्वाद प्राप्त करने से मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और तभी भक्त का भगवान से साक्षात्कार होता है और वही दिन शुभ है वही सच्ची खुशी है बाकी खुशी मोह-माया , संसार के बंधन में बंध कर दुःख, कष्ट ही देती है ।

"कबीर सोई दिन भला, जा दिन संत मिलहिं ।
अंक भरे भरि भेटिया, पाप सरीरौ जाहि ॥"

उन्होंने अपने दोहे में यह संदेश भी दिया है कि अहंकार का त्याग ही सच्चा प्रेम है । मनुष्य घमण्ड में अहंकार में रहे और फिर दूसरों से प्रेम से बात

करे तो व ह सच्चा प्रेम नहीं, इसलिये बिना स्वार्थ के लोभ-माया मोह के सबसे प्रेमभाव रखना चाहिए ।

उनका यह भी संदेश है कि ईश्वर को मंदिर-मस्जिद में ढूंढना बेकार है । वह तो हर व्यक्ति के मन में कण-कण में घट-घट में वास करते हैं, पर मनुष्य संसारिक बंधन में बंध जाने के कारण स्वयं को भूल गया है। अपने अन्दर के भगवान को देख नहीं पाता, इसलिये उन्होंने अन्तर्मुखी बनने को कहा है ।

कबीर ने दूसरों की निन्दा, परनिन्दा का भी विरोध किया है। वे कहते है कि हर व्यक्ति के अन्दर बुराई है, अवगुण है। इसलिये कभी भी अपने को महान और दूसरे को छोटा या तुच्छ नहीं समझना चाहिए ।

"दोस पराये देखि करि, चल्या हंसत-हंसत ।
अपनै चित न आवई, जिनका आदि न अंत ॥"

इस प्रकार कबीर ने अपने नीतिपरक दोहों से जन-जन के मानस में क्रांति उत्पन्न की। हर गलत बात पर ऊँगली उठायी और प्रेम, कर्मशील होने के प्रति प्रेरित किया ।

प्रश्न.४. कबीर का परिचय देते हुए उनकी काव्य-कला पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर - कबीर हिन्दी साहित्य के संत शिरोमणि हैं। हिन्दी साहित्य की लगभग बारह सौ वर्षों के इतिहास में तुलसीदास को छोड़कर अगर दूसरा कोई महिमामंडित व्यक्तित्व है तो वह कबीर का ही है। हिन्दी के अधिकांश प्राचीन कवियों की भाँति कबीर का भी जीवन-व्रत किंवदन्तियों पर आधारित है। उनके जीवन पर आधारित निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रचलित हैं -

चौदह से पचपन साल गये चन्द्रवार एक ठाठ ठये।
जेठ सुदी बरसायत को पुरनमासी विधि प्रकट भये ।।

धन गरजे दामिनि दमके बूँदै सरसें झर भाग गये।

लहर तालाब में कमल खिले वह कबीर भानु परकास गये॥

कहते हैं लगभग चौदह सौ के आसपास काशी के निकट लहरतारा नामक स्थान में जुलाहा परिवार में इनका जन्म हुआ था। नीरु, नीमा केवल पालने वाले मात्र थे। एक ओर किंवतन्ती के अनुसार रामानन्द ने एक ब्राह्मणी पर प्रसन्न होकर यह जानते हुए भी कि वह विधवा है उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया और वह समाज के डर से उसे लहरतारा में फेंक आयी। नीरु और नीमा नामक जुलाहा परिवार ने उसे उठा लिया।

कहा जाता है कि कबीर बचपन से ही हिन्दू धर्म की ओर आकृष्ट हो गए थे और राम नाम का जप करते थे तथा माथे पर तिलक लगाया करते थे। एक बार रामानन्द जब स्नान करके लौटे तो उनका पैर सीढ़ियों पर सोये हुए कबीर पर पड़ गया और उनके मुँह से राम-राम निकल पड़ा, बस कबीर के लिए यह शब्द गुरु-मंत्र हो गया और रामानन्द उनके गुरु हो गए। कबीर जाति के जुलाहा थे और कपड़े बुनने का उद्गम करते थे। कबीर अत्यधिक भक्ति-भजन में लगे रहते थे जिससे कपड़े बुनने का काम ठीक-ठांक नहीं चलता था। इससे कबीर की माता दुःखी रहा करती थी। कबीर हमेशा उन्हें भगवान पर भरोसा रखने को कहते थे-

तनना, बुनना तज्या कबीर रामनाथ लिखि लिया सरीर।

ठाढ़ी रौवे कबीर की माई, से उरिका क्यूँ जीवै खुदाई।

कहहिं कबीर सुनहँ री माई, पूरनहारा त्रिभुवन राई॥

कबीर अपने को न हिन्दू कहते थे न मुसलमान। वे एक ईश्वर पर विश्वास करते थे एवं सर्वव्यापक निर्गुण ब्रह्म को मानते थे। वे मानते थे कि भगवान एक हैं। अलग-अलग सम्प्रदायों का अलग-अलग भगवान नहीं हो सकता। इसलिए उन्होंने कहा-

दूई जगदीश कहाँ ते आये, कहु कोन भरमाया

उल्ला राम करीमा केसो हरि हजरत नाम धराया ।

कबीर में जन्मजात प्रतिभा थी। वे एक महान साधक थे और उनकी साधना पद्धति की मूल विशेषता यह थी कि उन्होंने राम और रहीम दोनों को ही एक माना है। उनकी दृष्टि में हिन्दू और मुसलमान का भेद-भाव नहीं था। वे सच्चे आध्यात्मिक नेता थे। सामाजिक कुरीतियों के प्रति निर्भीकता से आलोचना करने में कभी नहीं हिचकते थे । कबीर को पुस्तकों का ज्ञान नहीं था। वे अपने अनुभूतिजन्य ज्ञान को ही सच्चा ज्ञान मानते थे। इस संदर्भ में यह दोहा प्रचलित है -

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय॥

भक्ति काल की ज्ञानमयी शाखा के प्रवर्त्तक कबीर ने भक्ति का भी निरादर कभी नहीं किया तथा रामानन्द के प्रधान उपदेश अनन्य भक्ति को भी स्वीकार किया। लेकिन अवतारवाद का खंडन किया। कबीर के भगवान घट-घटवासी हैं, उनके अनुसार भगवान अत्यंत सूक्ष्म तथा नाम, रूप और गुण से अतीत हैं और ऐसा भगवान मनुष्य के मन में ही रह सकता है, मंदिर-मस्जिद में नहीं। इस संदर्भ में कबीर कहते हैं-

ना मैं मन्दिर ना मैं मस्जिद ना छुरी गरास में।

मुझको कहाँ ढूढें बन्दे मैं तो तेरे पास में ॥

इसी प्रकार कबीर का यह भी सिद्धान्त है कि जीव-जगत और ब्रह्म अभिन्न हैं। इसलिए इस दृष्टि से वे अद्वैतवादी हैं। इसलिए उनके अनुसार आत्मा और परमात्मा अभिन्न हैं इनमें तब तक ही अन्तर दिखाई देता है जब तक सत्य और ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती और ज्ञान की प्राप्ति हो जाने के बाद जीव और बह्म का भेद-भाव मिट जाता है -

जब मैं था तब गुरु नहीं, जब गुरु है तब मैं नाहिं
प्रेम गली अति सांकरी, ता में दो न समाहि ॥

उनके अनुसार मुक्ति के लिए सन्यास की आवश्यकता नहीं है, गृहस्थी के अन्दर रहकर भी ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। उनके अनुसार प्रेममय ज्ञान से ही भगवान की प्राप्ति हो सकती है। अहंकारमय ज्ञान से नहीं । इसलिए उन्होंने कहा है कि सच्चा तत्वदर्शी वह नहीं है जो केवल शास्त्रों के अनुशीलन में ही लगा रहता है और आत्मा की अनुभूति नहीं कर पाता। जो आत्मा में सहज अनुभूति को अर्जित करता है और प्रेम के ढाई अक्षर लेकर भगवान के सम्मुख खड़ा हो जाता है, वही द्रष्टा होता है।

पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार कबीर साधना के युग में युग कवि थे और साहित्य के क्षेत्र में भविष्य सृष्टा। कबीर के मानस में सच्चाई थी तथा आत्मा में असीम साहस। इसलिए उनमें अनुभूति की गहराई इतनी थी कि सीधे हृदय को चोट करती थी।

उनके कलापक्ष पर विचार किया जाए तो उनकी कविताओं में अलंकार, छन्द गौण हैं, फिर भी उनकी कमी महसूस नहीं होती। उनके काव्य जीवन के अत्यंत निकट हैं, जो रहस्यवाद की अनुभूति देते हुए भी स्वच्छ और काँच की भाँति पारदर्शी हैं। भाषा की दृष्टि से कबीर का मूल्यांकन करना थोड़ा कठिन हो जाता है क्योंकि उनका कोई निश्चित भाषा नहीं है, उन्हें भाषा का बादशाह कहा जा सकता है या उनकी भाषा को साधुओं की भाषा कही जा सकती है । साधारणत: देखा जाए तो उनकी भाषा को खड़ीबोली कही जा सकती है, लेकिन इसमें कई बोलियों का समावेश है, इसलिए इनकी भाषा को सधुक्कड़ी भाषा कही जाती है । वे भाषा के नहीं, भाषा उनकी गुलाम थी। उनकी भाषा

की विशेष चरम स्पष्टवादिता और उनकी कविता की भाषा चरमस्पर्शिता कही जाती है। उन्होंने भाषा के बहते नीर में सरस्वती को स्नान कराया ।

कबीर स्वयं ग्रन्थ रचना नहीं करते थे, उनके शिष्यों ने समय समय पर उनकी वाणी का संग्रह किया है। उनकी कविता अनायास नहीं सायास है। एक मात्र "बीजक" को ही विद्वान कबीर की प्रामाणिक रचना मानते हैं।

निस्संदेह काव्य-कला की दृष्टि में कबीर का स्थान हिन्दी-साहित्य में और हिन्दू-समाज में सर्वोपरि है और वे सही मायने में सन्त कहे जा सकते हैं।

सूरदास (बाल-वर्णन)पद

कवि परिचय :

सूरदास कृष्ण काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं । हिन्दी साहित्य में यदि तुलसी चन्द्रमा हैं तो सूरदास सूर्य । हिन्दी में विरह और बालसाहित्य का अनूठा रस केवल सूरदास के पदों में ही मिल सकता है ।

सूरदास जी का जन्म सं० १५३५ में दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव में बसने वाले एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ । सूरदास जन्म से अंधे थे । परन्तु यह तथ्य विवादास्पद है । विद्वानों का कहना है कि सूर ने जैसी मनोरम कल्पनाएँ की और जिस सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का परिचय दिया है वैसा कोई अंधा कवि नहीं कर सकता है । हो सकता है कि अपने ज्ञान चक्षुओं के अभाव का द्योतन करने के लिए ही सूर ने आपने अपको जन्मान्ध कहा है ।

सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे । सूरदास वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टि सम्प्रदाय के सर्वश्रेष्ठ कवि भक्त थे । वल्लभाचार्य जी के बाद उनके सुपुत्र विट्ठलनाथ जी ने पुष्टि सम्प्रदाय के सर्वश्रेष्ठ आठ कवियों की एक मण्डली बनायो जो 'अष्टछाप' के नाम से प्रसिद्ध है । सूरदास 'अष्टछाप' के सर्वाधिक महत्वपूर्ण सदस्य थे ।

सूरदास ने अपने हृदय के सुन्दरतम और श्रेष्ठतम भाव प्रसंगों से बालकृष्ण को सुशोभित किया । उनका 'सूरसागर' लीलागान का महान् सागर बन गया । सूरदास जी वात्सल्य रस के आचार्य हैं । उन जैसा वात्सल्य स्नेह का भावुक कवि शायद ही कहीं मिले । उन्होने राधा और कृष्ण के बालपन के असंख्य मनोहर चित्र रचे हैं । सूर साहित्य में कृष्ण का पालने पर झूलना, घुटनो के बल चलना, चाँद के लिए मचलना, नहाते समय रुठ जाना, मक्खन चोरी

करना, मिट्टी खाना, आदि के अतिरिक्त गोचारण, दान लीला, मान लीला के असंख्य रसपूर्ण चित्र हैं । सूरदास जी ने अपनी बन्द आँखों से वात्सल्य के क्षेत्र का जितना उद्घाटन किया है उतना आँखवाले कवि भी नहीं कर सके । ऐसा लगता है कि सूरदास जी बालक कृष्ण के हृदय में उतरकर उनकी मनोदशाओं का चित्रण कर रहे हैं । सूरदास ने बालकों के अनुरूप सीधी सादी देशज शब्दों से भरी हुई भाषा का प्रयोग किया है । अतः उनके वर्णन में सर्वत्र स्वाभाविकता है । इस प्रकार वे वात्सल्य रस के भावुक कवि हैं ।

भ्रमरगीत 'सूर सागर' का सर्वश्रेष्ठ प्रसंग है । यह एक प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें भागवत की कथा कही गई है । श्रृंगार के संयोग और वियोग पक्षों के चित्रण में सूरदास हिन्दी साहित्य में बेजोड़ है। गोपियों के विरह में व्यापकता के साथ इतनी तनमयता है कि लगता है यह केवल गोपियों का विरह नही बल्कि विश्व विरहनी का अनन्त काल से चलने बाला विश्वजनीत विरह है ।

सूरदास जी के रचे २५ ग्रन्थ कहे जाते हैं, पर इनमें से अनेक प्रामाणिक सिद्ध नहीं होते और कुछ 'सूरसागर' के ही अंश मात्र हैं । उनकी प्रामाणिक रचनाएँ हैं – सूरसागर, सूर-सरावली, साहित्य लहरी, सूर पच्चीसी, सूर साठी, सेवाफल और सूरदास के विनय के पद ।

सूरदास जी वैष्णव भक्तों की परम्परा में उत्पन्न हुए थे । वैष्णव सम्प्रदाय का मूल्य सिद्धान्त है भक्ति । इस सिद्धान्त के अनुसार भगवान एक है । वह संसार के कल्याण के लिए अवतार ग्रहण करता है । उस भगवान की प्राप्ति ज्ञान से नहीं भक्ति से हो सकती है ।

सूरदास भगवान की पावन लीलाओं का गुणगान करते रहे । अन्त में अपना मरणकाल निकट जानकर ये रासलीला की पवित्र भूमि पारसोली चले आये । गुसाई बिट्ठलदास वहाँ उपस्थित थे । उनके ही सामने सूरदास जी ने अपनी जीवनलीला समाप्त की ।

व्याख्या भाग

(१) यशोदा हरिपालने .... नन्द भामिनि पावै ।

शब्दार्थ - पालने = झूला, दुलरावैं =दुलार करना, मल्हावे = गीतगाना, निदरिया=नींद, बेगि =शीघ्र, फरकावै = फड़काना, बत्यावै = बतलाना, अकलाप = व्याकुल होना ।

प्रसंग - प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित बालवर्णन प्रसंग से लिया गया है।

संदर्भ - प्रस्तुत पद में कवि ने वात्सल्य रस क़ा वर्णन माता यशोदा और कृष्ण के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों में सूरदास जी कहते है कि यशोदा मैया बालक श्रीकृष्ण को कभी पालने में झुलाती है, कभी हिलाती है । कभी-कभी कन्हैया को गीत गाकर सुलाने की कोशिश करती है । वे निंदियारानी से कहती हैं कि तू जल्दी से आक़र मेरे बाल गोपाल को सुला जा। वह तुझे बुला रहा है, तू क्यों जल्दी आकर उसे नहीं सुलाती । लेकिन कभी अन्जाने से कृष्ण आँखे बंद कर लेते हैं तो कभी दूध पीने की लालसा में होंठ फड़फड़ाते हैं । कृष्ण को देख यशोदा चुप हो जाती हैं और अपने साथ सभी को चुप रहने का इशारा करती हैं ताकि लाडले कान्हा की नींद न टूटे । इतने में ही कृष्ण की नींद टूट जाती है वे पुनः उसे लोरी गाकर सुलाने की कोशिश करती हैं । सूरदास जी कहते हैं कि जिस वात्सल्य रस का सुख यशोदा को उपलब्ध है वह सुख देवताओं , ऋषियों तक को दुर्लभ है ।

विशेष - यहाँ यशोदा और कृष्ण के माध्यम से सूरदास जी ने वात्सल्य रस का हृदयस्पर्शी चित्र वर्णन किया है ।

(२) मैया मोहि ....माता तू पुन ।

शब्दार्थ - खिझायौ - चिढ़ाना, गीनौ =लेना, इहिरिस =इसी गुस्से से, गात - शरीर, धूत = शैतान ।

प्रसंग - प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित बालवर्णन प्रसंग से लिया गया है।

संदर्भ - प्रस्तुत पद में अपने दाऊ बलराम की शिकायत कृष्ण माता यशोदा से किस प्रकार करते हैं तथा यशोदा कृष्ण को किस प्रकार समझाती है। इसी का वर्णन यहाँ किया गया है ।

व्याख्या - यहाँ कृष्ण यशोदा से बलराम की शिकायत करते हुए कहते हैं कि मैया मुझे दाऊ बहुत चिढ़ाते हैं और कहते हैं -तू यशोदा का पुत्र नहीं है , तुझे माता ने कहीं से मोल लाया है । इस बात पर मैं क्रोधित हो जाता हूँ और बलदाऊ के साथ खेलने भी नहीं जाता हूँ । बार-बार वे मुझसे मेरे माता -पिता के बारे में पूछते रहते हैं और चिढ़ाते रहते हैं । कहते हैं - नन्द तो गोरे हैं और माता यशोदा भी गोरी हैं , मैं क्यों काला हूँ। इन बातों को सुन कर सभी ग्वाल बाल मुझपर हँसते हैं तथा चुटकी बजाकर मुझे नचाते हैं परन्तु तू हमेशा मुझे ही मारती रहती है, दाऊ को कभी कुछ नहीं कहती । मुझे कभी ऐसा लगता है कि दाऊ की बातें सच हैं । कान्हा की इन बातों को सुनकर यशोदा मन ही मन मुस्कुराती हैं और सोचती हैं कि मेरा कान्हा इतना बड़ा हो गया है कि शिकायत भी करने लगा है । यशोदा कृष्ण को सान्त्वना देते हुए कहती है कि तेरा दाऊ तो बचपन से ही झूठा और शैतान है । फिर वह कृष्ण को विश्वास दिलाने के लिये गोधन की सौगन्ध खाकर कहती हैं कि तू ही मेरा पुत्र है और मैं ही तेरी माता हूँ ।

(३) मैया री, मोहि ....ग्वालिनि मन की जानी ।

शब्दार्थ - पकवान = स्वादिष्ट भोजन, **ठाढी** - खड़े होना , **मघनियाँ** - दही फेंटने वाली ।

प्रसंग - प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित बालवर्णन प्रसंग से लिया गया है।

संदर्भ - प्रस्तुत पद में सूरदास जी कृष्ण की भोजन के प्रति अरुचि तथा माखन के प्रति लोभ का बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया है ।

व्याख्या - कृष्ण कहते हैं कि हे मैया, मुझे माखन बहुत पसंद है, पर तू हमेशा मुझे विभिन्न प्रकार के पकवान ही देती है, लेकिन मुझे वे कुछ भी नहीं भाते । कृष्ण-यशोदा की बातें छुपकर एक ग्वालिन सुन रही थी और मन ही मन सोचने लगी कि काश मेरे घर में भी कृष्ण को माखन खाते देखूँ तथा वह कल्पना करती है कि कृष्ण मेरी दही की मखनी के पास बैठकर चोरी छुपे माखन खा रहा है और मैं छिपकर देख रही हूँ । सूरदास जी कहते हैं कि मेरे प्रभु कृष्ण तो अंतर्यामी हैं, वे शीघ्र ही ग्वालिन के मन की बात जान लेते हैं ।

(४) मैया हौं ना .... मारत जाहिं

शब्दार्थ - **चरैं हो** - चराना, **सिगरे** -सारे, **पत्याहि**- विश्वास, **गारी** -गाली, **सिमाई**-गुस्सा होगा, **लटिका**- लड़का, **बहराई** -बहलाना, **रिगाई**- चलाना ।

प्रसंग - प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित बालवर्णन प्रसंग से लिया गया है।

संदर्भ -प्रस्तुत पंक्तियों में कृष्ण माता यशोदा सें गाय न चराने जाने की बात करते हुए अपने मित्रों की शिकायत करते हुए कहते हैं ।

व्याख्या - हे मइया अब मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा । सारे ग्वाल-बाल मुझे चिढ़ाते हैं, परेशान करते हैं, मुझसे अपनी गायों को इकट्ठा कराते हैं। यह काम करते-करते मेरे पूरे पैरों में दर्द होने लगता है । अगर तुझे मेरी बात पर विश्वास नहीं तो तू अपनी सौगन्ध दिला कर दाऊ से पूछ, क्योंकि बिना सौगन्ध के वह झूठ बोलेगा । इन बातों को सुन कर माता यशोदा ग्वाल-बाल को गुस्सा करती है तथा गाली देती हुई कहती है कि मैं अपने लाल को मन बहलाने के लिये गाय चराने भेजती हूँ । यशोदा कहती है कि मेरा कान्हा तो अभी बच्चा है और ये ग्वाल बाल इसे परेशान करके मार ही डालना चाहते हैं ।

विशेष- यहाँ माता यशोदा का पुत्र प्रेम बड़े ही स्वाभाविक एवं मार्मिक रूप से वर्णन किया गया है ।

विनय (पद)

(५) हमारे प्रभु औगुन .... पन जात रहा ।

शब्दार्थ - **समदरशी** - सबको बराबर या समान समझने वाला, **बधिक**- बध करने वाला, **नार** - बाला, **पार** -निर्वाह, **निरधार**- निश्चित करने का कार्य ।

प्रसंग - प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित 'विनय' के पद से लिया गया है।

संदर्भ - प्रस्तुत पद में सूरदास जी भगवान कृष्ण से अपने अवगुणों को क्षमा करने की याचना की है ।

व्याख्या - हे प्रभु मेरे जो भी अवगुण हैं उनपर आप ध्यान मत दीजिए, क्योंकि आप सभी पापियों और भक्तों को समान रूप से उद्धार करते हैं आपके इन्हीं गुणों से प्रभावित हो कर मैं आपसे विनती कर रहा हूँ कि मेरे जैसे पापी का भी उद्धार करे । जैसे - पारस पूजा में रखे लोहे और कसाई (पशुओं का वध करनेवाला) घर में रखे लोहे में अन्तर नहीं जानता वह दोनों ही लोहे को सोना बना देता है । उसी प्रकार एक नदी और एक गन्दे पानी का नांला जब गंगा में मिल जाते हैं तो एक होकर गंगा का पवित्र जल कहलाने लगते हैं । इस प्रकार सूरदास जी कहते हैं कि मेरा ब्रह्म रूपी जीवन इस सांसारिक मोह माया में पड़ कर अपवित्र हो गया है । हे प्रभु या तो आप इन्हें पृथक कीजिए या आपका पापियों को उद्धार करने का प्रण व्यर्थ है ।

विशेष - सूरदास जी का कृष्ण के प्रति विश्वास और आस्था का वर्णन किया गया है ।

लघु प्रश्नोत्तरी

प्र.१ यशोदा को सूरदास ने एक साधारण माँ की तरह कैसे वर्णन किया?

उत्तर - यशोदा हर माँ की तरह कान्हा को सुलाने के लिये उसे झूले में झुलाती है उसे लोरी गा-गा कर सुलाती है । वह निदियाँ को कहती है कि तू जल्दी आ और मेरे लाल को सुला दे । जिस प्रकार एक साधारण माँ अपने

लाल को सुलाती है, गीत गाती है और शोर होने पर शान्त रहने को इशारा करती हैं जिससे कान्हा की कच्ची नींद न टूट जाये । परन्तु कृष्ण को व्याकुल देखकर फिर वह लोरी गाना शुरू कर देती है इस प्रकार एक साधारण माँ की तरह यशोदा अपने कृष्ण को सुलाती है।

प्र.२ किस प्रकार श्रीकृष्ण अपने भाई की शिकायत माँ से करते हैं ?

उत्तर - हमेशा जिस घर में एक से अधिक बच्चे होते हैं तो दोनों में तनाव, चिड़ाना, तू-तू, मैं-मै होती रहती है । उसी प्रकार कृष्ण और दाऊ में हमेशा तर्क होता रहता है । दाऊ हमेशा कृष्ण को चिढ़ाते हैं और कहते हैं कि नन्दबाबा, यशोदा माँ तेरे मात-पिता नहीं हैं । कृष्ण माता यशोदा से कहते हैं कि दाऊ कहते हैं कि तूने मुझे मोल लिया है, तू मेरी माँ नहीं, अगर मैं तेरा बेटा होता तो तुम दोनों के जैसे गोरा और सुन्दर होता पर मैं तो श्यामल हूँ , जिससे ग्वाल-बाल उसकी हँसी उडाते हैं । माँ यशोदा अपने लाल की बातों पर मुस्कराकर कहती हैं कि दाऊ झूठे और शैतान हैं।

प्र. ३ श्री कृष्ण अन्तर्यामी है प्रतिपादित कीजिये ?

उत्तर - एक दिन श्रीकृष्ण माता यशोदा से कहते हैं कि हे मैया तू मुझे रोज मेवा-पकवान खिलाती है, पर मुझे माखन पसन्द है, तू मुझे माखन नहीं देती, इसी बात को पास खड़ी एक ग्वालिन सुन रही थी और मन ही मन वह कल्पना करने लगी कि काश कान्हा मेरे घर भी माखन खाने आते और मैं छिपकर उन्हें देखती । इतना सोचना था कि कृष्ण उनके यहाँ माखन खाने पहुँच गये । इस प्रकार वह हर व्यक्ति के हृदय की बात शीघ्र जान लेते है ।

प्र.४ सूरदास भगवान को समदर्शी क्यों कहते हैं और उनसे क्या याचना करते हैं ?

उत्तर -समदर्शी अर्थात् सबको समान रूप से मानने वाला है, इसलिये हर व्यक्ति उनके लिये समान है, पापी-पंडित सब समान हैं । इसलिये उन्हें समदर्शी कहा है । सूरदास भगवान को प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे भगवान

आपने अपने सेवकों के सारे दोष क्षमा करें । आप तो सबका उद्धार करते हैं। बड़े-बड़े पापी का, दानव का उद्धार किया है । आप समदर्शी हैं, इसलिये आप अपने नाम का अर्थ साकार करते हुये मेरा उद्धार कीजिये ।

प्र.५ सूरदास ने भक्त और भगवान के साथ लोहा, पूजा , पारसमणि, समुद्र की तुलना क्यों की है ।

उत्तर - सूरदास का इनके साथ भगवान की तुलना करने का कारण है कि जिस प्रकार लोहे का कोई अंश अगर भगवान के मंदिर में रख दे और इसका एक अंश कसाई के घर में रख दे तो वह अपवित्र हो जायेगा, किन्तु मंदिर में रखा लोहा पवित्र हो जाता है किन्तु पारसमणि के स्पर्श में अपवित्र लोहा भी कुन्दन हो जाता है । जिस प्रकार नदी और नाले का पानी गंगा के जल में मिलकर पवित्र गंगाजल कहलाता है ।

प्र.६ सूरदास भगवान को अपना उद्धार करने के लिये क्या कहते हैं ?

उत्तर - सूरदास जी भगवान से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे प्रभुआपने बड़े से बड़े पापी, महापापी का उद्धार किया है । मुझ जैसे पापी की आत्मा मैली हो गयी है । ब्रह्म का अंश यह आत्मा मायालिप्त तन से मिलकर मायालीन हो गई है पर मेरी आत्मा भी तो आपका ही अंश है । तो मुझे उद्धार करना आपका काम है क्योंकि आपके बिना कृपा से मुझे इस संसार से मुक्ति नहीं मिलेगी । हे प्रमु मेरा उद्धार करो, अन्यथा उनका पतित उद्धारक प्रण या नाम टल जायगा । इसलिये सूरदास उनको पतित उद्धारक भी कहते है ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्र.१. सूरदास की भक्ति भावना पर एक लेख लिखिये ?

उत्तर - सूरदास हिन्दी साहित्य के कवियों में श्रेष्ठ माने जाते हैं । आचार्य वल्लभ ने भक्ति की परिभाषा इस प्रकार की है - ''भगवान में माहात्म्यपूर्वक सुदृढ़ और सतत स्नेह ही भक्ति है । मुक्ति का इससे सरल उपाय नहीं है ।

सूरदास कहते हैं ज्ञान तथा योग से ईश्वर का साक्षात्कार नहीं होता एक मात्र भक्ति के द्वारा ही भगवान सहज ही प्राप्त हो होते हैं। यथा -

''बार-बार वचन निवारौ, भक्ति विरोधी ज्ञान तिहारो ।''

प्रभु के प्रति भक्त की भावना, उनके प्रति विश्वास श्रद्धा एवं प्रेम-भाव को भक्ति कहा जाता है । कहते हैं कि प्रभु के दर्शन के बाद सारे रिश्ते-नाते बेकार हो जाते हैं, फीके पड़ जाते हैं और आत्मा प्रभुके रंग में रंग जाती है, भक्ति ही संसार की विषय वासना से मुक्ति दिलाती हैं ।

यह कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वप्रधान कवि है । गुरु वल्लभाचार्य गुरु की प्रेरणा पाकर ही कृष्ण की बाल-लीला का गान उन्होंने किया था । सूरदास हिन्दी साहित्य गगन के सूर माने जाते हैं ।

यह कृष्ण के प्रगाढ़ भक्त थे, मोह-माया में लिप्त भवसागर से वह मुक्ति पाना चाहते थे और इस प्रकार उन्होंने अपना तन-मन ईश्वर को न्यौछावर कर दिया। वे स्वयं को भगवान का दास समझ कर दास्य भक्ति भाव में तल्लीन हो गए ।

वे कहते थे भक्ति साधन नहीं, साध्य है, हरि का भक्त स्वयं हरिरूप हो जाता है, वह ब्रह्मा और महादेव से भी महान है । वे जाति-पाँति का विरोध करते थे । वे अपने को भगवान का दास समझ कर दास्य भक्ति में लीन हो गये। इस भक्ति में स्मरण, अनुभव करना और नाम जपना आदि आते हैं। ईश्वर का स्मरण करते करते उसका कीर्त्तन भजन चरित्र का बखान अपने आप ही हो जाता हैं। उन्हें समदर्शी कहा गया है कारण सब उनके लिये समान है । पापी दानव सब यह कहते हैं -

'' हमारे प्रभु औगुन चित्त न धरौ ।
समदरसी है नाम तुम्हारो सोई पार करौ ।''

श्री कृष्ण को सूरदास पतित पावन भी कहते हैं वे कहते हैं इसलिए उन्हें विश्वास है कि मुझ जैसे पापी का उद्धार कर देंगे, माया-मोह में पड़ आत्मा मलीन हो गई है । इनकी भक्ति में कहीं नवधा भक्ति का भी वर्णन किया है ।

इनकी भक्ति अन्तःकरण की प्रेरणा और हृदय की अनुभूति थी । वह उनकी रग-रग में समाई हुई थी, भक्ति के बिना जीवन व्यर्थ है ।

''रे मन मुरख जनम गँवायो ।

करि अभिमान विषय-रस, गीध्यों, स्याम-सरन नहिं आयौ ।''

सूरदास ने प्रमुख रूप से सरल भक्ति, वात्सल्य भक्ति और मधुर भक्ति को ही पल्लवित करनेवाले पद लिखे हैं। कृष्ण की कृपा के बारे में सूरदास जी कहते हैं कि प्रभु की कृपा से अंधा देख सकता है, लंगड़ा दौड़ सकता है, बहरा सुन सकता है । प्रभु की लीला अपरम्पार है । उनका कोई अन्त नहीं है-

''जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दिखराई ।

बहिराँ सुनै, मुक पुनि बोले रंक चलै सिर छत्र धराई ॥

सूरदास जी सगुणोपासक हैं । इसलिए उनके ब्रह्म के रूप का उन्होंने बड़े ही सुन्दर रूप से चित्रण किया है । उनके खाना खाने, सोने, जागने हर क्रीड़ा का अलग चित्र प्रस्तुत किया है । इस प्रकार का वर्णन और कहीं कवि की कविता में दुर्लभ है ।

वे भक्ति में इतने तल्लीन हो गये थे कि प्रभु सेवा पुष्टिमार्गीय भक्ति में सर्वोच्च स्थान रखती है । भक्त भगवान के लिये अपने को सर्वथा समर्पित कर देता है । वह शरीर, प्राण, अन्तःकरण, स्त्री, पुत्र, धन आदि सबको प्रभु के चरणों मे रख देता है । उसे प्रभु के चरणों के अतिरिक्त संसार में कहीं से भी सुख शान्ति नहीं मिलती -

मेरे मन अनंत कहाँ सुख पावै ।

जैसे उड़ि जहाज का पंछी, फिरि जहाज पर आवै ।

कमल नैन को छाड़ि महातम , और देव को धावै ।

परम गंग को छाड़ि, पियासो दुरमति कूप खनावै ।

जिहिं मधुकर अम्बुज-रस- चख्यो क्यों करील फल भावै ।

सुरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै ।

सूरदास पुष्टि मार्ग से पूरी तरह प्रभावित थे, इसमें सन्देह की गुंजाईश नहीं है । उन्होंने लिखा है -

हरि मैं तुमसो कहा दुराऊँ ।

जानत को 'पुष्टि पथ' मोसो काहि-काहि जस प्रकटाऊँ ।

सूर का व्यक्तिगत संबंध पुष्टिमार्ग के आचार्य वल्लभ से भी था और उस के बाद स्वामी विट्ठलनाथ जी से भी, दोनों का प्रभाव सूर पर था । वल्लभ ने बाल रूप की वर्णना की किन्तु विट्ठलनाथ ने उपासना -पद्धति का श्रृंगार-सज्जा से और भी अधिक मंडित कर दिया । सूर का सम्पर्क विट्ठलनाथ के साथ दीर्घकाल तक रहा । सूर ने जिस पुष्टिमार्ग का वर्णन किया है वह प्रवृत्तिमूलक है। उसमें निवृत्ति और निराशा नहीं है । जीवन के प्रति प्रेम राग है । हम इसे आशा का स्रोत भी कह सकते हैं। सूर के प्रभु सगुण हो घर-घर में खेलते नजर आते हैं।

सूरदास की भक्ति भावना अनन्य प्रेम की पहचान हैं वे कहते हैं - हम तो आपके द्वार पर ही पड़े हैं, चाहे राखो, चाहे मारो । यथा -

तो सौं प्रभु जो कहुं कोउ हो तो

कृपा -सुधा जल दान माँगिवो कहौ सो साच निसोतो ।

स्वाति -स्नेह -सलिल-सुख चाहत चल-चातक को पोतो ।

इन्हें भी पूर्ण विश्वास है कि जीव आत्मा परमात्मा का ही अंश है,परन्तु मोह-माया में ग्रस्त होकर वह अपवित्र हो गई है । उन्हें विश्वास है कि अगर प्रभु की हम पर कृपा हो जाये तो जिस प्रकार लोहा पूजा घर में रहने से पवित्र हो जाता है। कसाई के घर में रखकर पशुवध जैसे काम में लगकर अपवित्र हो जाता है, पर ईश्वर पारस मणि जैसे होते हैं, उन्हें छूते ही लोहा जैसा पापी खरा सोना बन जाता है। तात्पर्य पापी कितना ही पापी क्यों न हो परन्तु ईश्वर की कृपा से उद्धार हो जाता है -

''इक लौहा पूजा मैं राखत, इक घर बधिक परौ ।

सा दुविधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरौ ।

सूर के भक्ति भाव में मधुर रस और प्रेम भक्ति रस के भी सुन्दर समन्वय हैं । इस प्रकार सूरदास ने गोपियों के विरह-भाव का भी मार्मिक वर्णन किया है। सूरदास ने 'उधौ विरही प्रेम करें ' आदि वाक्याशों द्वारा प्रेम की परिपूर्णता के लिये विरह को तन्मयासक्ति के लिये आवश्यक बताया है । सूरदास के लिये राम और कृष्ण में कोई अन्तर नहीं था । कई स्थानों पर कृष्ण की स्तुति इस प्रकार की है मानों राम कृष्ण एक ही हो ।

सूर की भक्ति -भावना में दार्शनिकता आध्यात्मिकता एवं रहस्यवादिता का अपूर्व समन्वय है ।

प्र.२. कवि सूरदास ने वात्सल्य रस को किस प्रकार चित्रित किया है ? पठित बाल-लीला के आधार पर स्पष्ट किजिए ।

उत्तर - सूरदास का नाम लेते ही श्रीकृष्ण के रूप की माधुरी की याद ताजी हो जाती है । सूरदास ने कृष्ण के बाल-रूप का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है । कृष्ण और कृष्ण काव्य के अन्यतम साधक सूरदास अष्टछाप के प्रमुख कवि थे । सूरदास की भक्ति में वात्सल्य, सख्य, प्रेम, दैन्य भाव आदि को स्थान दिया गया है ।

इनकी रचनाओं को पढ़ने से स्वयं ईश्वर का साक्षात्कार होने लगता है । एक प्रभुको साधारण शिशु के रूप में इतना सुन्दर वर्णन किया है कि जन्मान्ध व्यक्ति, जिसे यह दुनिया कभी भी न दिखाई दी है, वह एक बच्चे की क्रीडा का इतना सजीव चित्रण वर्णन कर सकता है । हिन्दी साहित्य में प्रत्येक कवि ने अपने घर द्वार को छोड़ जंगल, पहाड़, पर्वत पर रचनाएँ की हैं । हर जगह वात्सल्य रस की कमी है पर यह कमी सूरदास ने अपनी रचनाओं से पूरा किया है। सूरदास एक सगुण भक्त कवि थे,माँ और बेटे का वार्तालाप सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है ।

बालक बचपन में बड़ा सुन्दर लगता है । श्री कृष्ण तो साधारण बालक भी नहीं थे , वे तो साक्षात विष्णु के रूप थे । श्री कृष्ण में वे सब गुण थे जो एक साधारण बालक में होते हैं।

सूरदास ने यशोदा के भाव एक साधारण माँ के रूप में बताये हैं । इनके वात्सल्य वर्णन में यद्यपि उनके विष्णु रूप की झलक दी है फिर भी वह वर्णन किसी भी माता के अपने पुत्र के प्रेमभाव का प्रतिनिधित्व करते हैं - यशोदा जी कृष्ण को पालने में झूला रही है लोरी गाकर । जिसप्रकार एक माँ यह ध्यान रखती है कि सोते समय उसका लाल उठ न जाये उसी प्रकार माँ की लौरी सुन कृष्ण पलकों को बन्द कर लेते हैं कभी होठ फड़फडाने लगते हैं। इस प्रकार का वर्णन देखने लायक है -

यशोदा हरि पालने झुलावै ।
हलरावै, दुलरावै, मल्हावै जोइ सोइ कुछ गावै ।
मेरे लाल को आउ निदरिया, काहे न आनि सुवावै ।
तू काहे न वेगि सो आवै, तोको कान्ह बुलावै ।
कबहु पलक हरि मूदि लेते है कबहु अधर फरकावै ।

और जिस प्रकार एक माँ बच्चे को सुलाते समय आस-पास सबको शान्त रहने को कहती है । उसी प्रकार यशोदा भी इशारे करती है कि मेरा लाल सो रहा है इस प्रकार एक अबोध बालक की झाँकी प्रस्तुत की है ।

हर माँ की इच्छा होती है कि मेरा बेटा भी जल्दी चले, उसके दूध के दाँत शीघ्र निकल जाएँ, उसी प्रकार माता यशोदा भी अपने लाल को देख सपने देखती रहती है कि कब वह हमें माँ और नन्द बाबा को बाबा कहेगा ।

फिर जब कन्हैया के दाँत निकल आते हैं और वे घुटनों के बल चलने लगते हैं , हाथ- शरीर मट्टी से सने हुये हैं, खेल कुद के मारे कुछ बाल चेहरे पर आ गये हैं। इस प्रकार दाऊ के बाल देख अपनी चोटी को छोटा देख हट करते हैं कि मेरी चोटी इतनी छोटी क्यों है ? और माँ यशोदा उसे फूसला कर कहती है कि तू दूध पियेगा तो तेरे बाल भी लम्बे हो जायेंगे । इस प्रकार की लीला देखते नहीं बनता हृदय को छू जाती है । सूरदास ने एक अबोध बच्चे से किशोर अवस्था तक कृष्ण को बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है ।

जहाँ दो भाई बहन बच्चे होते हैं वहाँ तू-तू मैं-मै होती है उसी प्रकार दाऊ और कृष्ण में हमेशा लड़ाई होती है । दाऊ अकेला कृष्ण को चिढ़ाते रहते हैं कि तू यशोदा माँ और नन्द बाबा का बेटा नहीं क्यों कि तू काला है । इस बात से कन्हैया नाराज हो अपने भाई की शिकायत यशोदा से करते हैं -

मैया मौहि दाऊ बहुत खिजायो ।

मौकौं कहता मोल को लीन्हों, जू जसूमति कब जायौ।

कहा रौ इति रिस के मारैं खेलेन हैं नहिं जात ।

पुनि-पुनि कहता कौन है माता, को हैं मेरौ तात ।

गोरे नन्द जसोदा गोरी तू कत स्यायल गात । ''

इस प्रकार शिकायत सुन माता यशोदा सोच कर खुश होती हैं कि मेरा कान्हा बड़ा हो रहा है , वह उसकी बात सून उसे सान्त्वंना देकर कहती हैं कि -

मोहन मुख रिस की ये बातें, जसुमति सुनि-सुनि रीजै ।

सुनहु कान्ह , बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत ।

सूर स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत ॥''

यहाँ कृष्ण की मनोभावना के बारे में बताया गया है । जिस प्रकार हर बच्चा दूध से ज्यादा अलग चीजें पसन्द करता है उसी प्रकार कृष्ण माँ से कहते हैं कि मुझे मेवा पकवान अच्छे नहीं लगते , मुझे माखन अच्छा लगता है ।

''मैयारी मोहि माखन रोटी भावै ।

जो मेवा पकवान कहति तू मोहि नहीं रूचि आवै ।''

इसी प्रकार कान्हा माँ से अपने मित्रों की शिकायत कर के कहते हैं कि मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा, सभी ग्वाल-बाल मुझे अपनी गाय चराने पूरे दिन दे देते हैं। माँ मैं परेशान हो जाता हूँ । विश्वास नहीं तो भाई से पूछ -''जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, नहीं सौं दिवाई।

माता पुत्र की बातें सुन साधारण माँ की तरह वह सखाओं को गाली देती और गुस्सा होती हैं -

" यह सुनि माइ यशोदा, ग्वालिनी गारी देती रिसाई ।
मैं पढवति अपने लरिका कौं आवैं मन बहराइ ।

इस प्रकार सूरदास जी ने ईश्वरीय बाल रूप को एक साधारण बालक के समान प्रस्तुत किया है । माता यशोदा और पुत्र कृष्ण के रूठने, हठ करने माँ के पकड़ने पर भाग जाना आदि भाव या छवि का बडे ही हृदयस्पर्शी ढंग से वर्णन किया है । ऐसा वात्सल्य प्रेम और किसी कवि में पाना दुर्लभ है ।

प्र.३. सूरदास जी की भक्तिभावना का परिचय दीजिये ।

उत्तर - हिन्दी साहित्याकाश में यदि तुलसी चन्द्रमा है तो सूरदास सूर्य । सूरदास जी हिन्दी के उन विरल कवियों में हैं जिनके गीत महाकाव्य बन गये । कहा जा सकता है कि हिन्दी में बालमनोविज्ञान और वात्सल्य का अगर अनूठा संगम कहीं देखने को मिलता है तो वह सूर साहित्य में । सूरदास जी भक्ति काव्य के अर्न्तगत, कृष्ण काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि जाने जाते हैं । ये वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टि सम्प्रदाय के कवि भक्त माने जाते हैं । सूर का हृदय बहुत ही मर्मस्पर्शी था जो माँ की भावनाओं को सहज ही अनुभव कर पाता था और माँ और पुत्र के बीच उस अनुभव को जिसे वात्सल्य कहा जाता है उनके काव्यों में हर तरफ दिखाई देता है । उन्होंने यशोदा के सिसकते मातृत्व को जहाँ अनुभव किया वहीं प्रोषितपतिका राधा का कराहता हृदय को भी अनुभव किया ।

सूर की भक्तिभावना पुष्टि मार्ग के सिद्धान्त पर आश्रित थी । उन्होंने वात्सल्य, सरस और माधुर्य भाव की भक्ति का अपने साहित्य में खुब प्रयोग किया है।

"यशोदा हरि पालने झुलावै ।
हलरावै, दुलारावै , मल्हावै जोइ सोइ कुछ गावै ।
मेरे लाल के आउ निन्दिया, काहे न आनि सुवावै ।
तू काहे न बेगि सो आवै तोको कान्हा बुलावै ।

सूर वात्सल्य रस का कोना कोना झाँक चुके थे । इसलिए सूर ने अपने पदों में यशोदा को कान्हा को सुलाने का जो ढंग प्रस्तुत किया है वह बहुत ही निराला नहीं है बल्कि साधारण माताएँ जिस तरह अपने लाल को सुलाने की कोशिश करती हैं यशोदा भी इसी तरह कान्हा को कभी पालने में झुलाने की कोशिश करती है, कभी लोरी सुनाती है और ज्यों ही वह उठ जाती है, कन्हैया की कच्ची नींद टूट जाती है । इस तरह हम देखते हैं एक साधारण माँ और यशोदा के वात्सल्य में एक ही प्रकार का वात्सल्य देखा जा सकता है । इसी प्रकार सूर के वात्सल्य रस को पढ़ने से पता चलता है कि सूर कभी तो यशोदा के नैनों में बैठकर कान्हा की बाल लीलाओं को निहारते हैं तो कभी नंद के अन्तर की गहराइयों में डूबकर कृष्ण की बाल क्रीड़ाओं का आनन्द लेते हैं । कृष्ण की बाल लीलाओं का कोई भी अंश सूर के काव्य में अछूता नहीं रहा है । वात्सल्य रस की व्याख्या करते हुए सूर ने न केवल बाहरी रूप और चेष्टाओं का विस्तृत वर्णन किया है वरन माँ और पुत्र के अन्तः स्वभाव में भी पूरा प्रवेश किया है । सूरदास जी ने श्री कृष्ण के वात्सल्य रूप में विष्णु अवतार की झलक कहीं कहीं दी है फिर भी उनका वात्सल्य रस विश्व की किसी भी माता का अपने पुत्र के प्रति प्रेम-भाव का प्रतिनिधित्व करता है । बचपन में बालक कई प्रकार के हठ करते हैं और माँ को परेशान करते हैं, खाना नहीं खाते । कृष्ण भी इसी प्रकार मात यशोदा को तंग करते हैं, और कहते हैं कि मैं दूध नहीं पिऊँगा और माँ उसे लालच देती है कि दूध पिओगे तो तुम्हारी चोटी बढ़ेगी । इस प्रकार कई पदों में वात्सल्य रस का अनूठा प्रयोग सूर ने किया है । कहीं कहीं तो यशोदा व्याकुल हो जाती हैं कि मेरा बेटा जल्दी जल्दी बड़ा हो जाए । यहाँ सूर ने मातृ हृदय की बड़ी ही भव्य झाँकी प्रस्तुत की है कि यशोदा सोचती है कि मेरा पुत्र शीघ्र घुटनों के बल चलने फिरने लगे, उसके दूध के दाँत जल्दी निकल जाए और अपने बाबा को पुकारे और मेरा आँचल पकडकर दूध के लिए हठ करने लगे । इस उतावलेपन को सूरदास जी ने अपने पदों में बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत किया है जो अद्वितीय है । इस प्रकार का सजीव चित्रण पूरे हिन्दी साहित्य में कहीं भी नजर नहीं आता ।

कहीं कहीं यशोदा बच्चे की गलतियों पर परदा डालकर ग्वाल ग्वालनियों की शिकायतों को अनसुनी कर देती हैं और अपने कन्हैंया का ही पक्ष लेती हैं । और कहीं कहीं कन्हैया की झूठी शिकायत पर वह ग्वालवालों पर क्राधित होती हैं ।

मैं पठवति अपने लरिका कौ आवैं मन बहराइ ।

सूर स्याम मैरौ अति बालक, मारत जाहि रिंगाइ ।''

अत: हम कह सकते हैं सूरदास ने यशोदा के बहाने माँ के ह्दय में पुत्र के प्रति जो मर्मस्पर्शी भावनाएँ हैं उनका जो सजीव चित्रण किया है वह पाठक को आश्चर्य में डाल देता है। सूर की भक्तिभावना वात्सल्य रस से भरपूर थी ।

व्याख्या - तुलसीदासजी ने श्री रामजी के बाल सौन्दर्य का वर्णन दो सखी के वार्तालाप से किया है । एक सखी दूसरी से कहती है कि आज सवेरे जब मैं दशरथ के महल के द्वार पर पहुँची तो राम को मैंनें दशरथ की गोद में देखा और देखती ही रह गई । उनका प्रभावशाली सौन्दर्य मन को हर लेने वाला था मैं मंत्रमुग्ध सी हो गई । उस सौन्दर्य को देख कर जो चकित न रह जावे उसका जीवन धिक्कारने योग्य है । हे सखी वे खंजन के बच्चे की तरह सुन्दर हैं, काजल लगी हुई और मन को वशीभूत कर लेने वाली उनकी आँखें ऐसी जान पड़ती है, जैसे चन्द्रमा में दो नवीन कमल के फूल खिले हुए हो ।

विशेष - यहाँ श्री राम के कमल रूपी नयन का बड़े ही रोचक रूप से वर्णन है । शशि मुख को कहा गया है और नयनों की उपमा कमल और खंजन नयन से दी गई है ।

प्र.२ कीर के कागर ज्यों नृपचीर......... राजु बटाउ की नाई ।।

प्रसंग - उपयुक्त पद तुलसीदास द्वारा लिखित 'कवितावली' से ली गई है ।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि श्री राम का अयोध्या से वनवास का वर्णन करते हैं। यहाँ उनकी त्यागशीलता का वर्णन करते हैं।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों में तुलसीदास जी ने राम जी के त्याग का वर्णन किया है । वे कहते हैं कि श्री राम इतने महान एवं त्यागी थे कि उन्हें अयोध्या एवं आभूषणों का त्याग करने पर तनिक भी शोक नहीं हुआ । उनके मुख पर तनिक चिन्ता या शोक नहीं दिखाई पड़ा । वे बड़े आज्ञाकारी एवं महान पुरुष थे । उनके इस महान त्याग का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि पिता की आज्ञा का पालन करते हुए जब श्रीराम ने वस्त्र एवं आभूषणों का त्याग किया तब वे ऐसे जान पड़ते थे जैसे वसंत ऋतु में तोता अपने पंख खुशी से गिराकर तनिक भी दुःखी नहीं होता है । जैसे कोई यात्री राह में पड़ने वाले वृक्षों को छोड़ता जाता है उसी प्रकार राम अयोध्या को त्याग कर वन की राह लेते

हैं। मार्ग के संगी को छोड़ते समय जैसे कोई दुख नहीं होता उसी प्रकार बिना किसी दुख के उन्होंने अयोध्या के स्त्री पुरुषों को त्याग दिया । उनके साथ में लक्ष्मण एवं सीता ऐसे शोभा दे रहे हैं मानों धर्म और क्रिया सुन्दर देह धारण कर शोभा पा रहे है। इस प्रकार कमलनयन रामजी अपने राज्य एक र्निमोही के समान त्याग वन को चले जाते हैं और वह तनिक भी शोक नहीं करते ।

विशेष - यहाँ श्री राम के बलिदान या त्यागशीलता के बारे में कहा है ।

प्र.३ एहि घाटते .... चढाइहौ जू ॥

प्रसंग - उपर्युक्त पद तुलसीदास द्वारा लिखित 'कवितावली' से लिया गया है ।

सन्दर्भ- इन पंक्तियों में कवि केवट द्वारा श्रीराम को गंगापार कराने का वर्णन करते हैं।

व्याख्या - तुलसीदास केवट के माध्यम से श्रीराम के चरणों की महानता का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि श्रीराम की चरणधूलि इतनी प्रभावशाली हैं कि उसके स्पर्श मात्र से अहिल्या पत्थर से स्त्री रूप में आ जाती है । उस केवट को भी इस बात का भय हो रहा है कि मेरी नाव श्री राम के चरण स्पर्श से स्त्री न हो जाए इस लिए राम जी को समझाते हुए कहते हैं कि -

हे भगवान राम ! इस घाट से कुछ दूर पर गंगाजी का पानी इतना गहरा नहीं है । इसलिए आप स्वयं गंगा पार कर सकते हैं क्योंकि आपके चरण स्पर्श से पत्थर की मूरत अहिल्या स्त्री बन गयी,तो शायद मेरी नाव स्त्री न हो जाये इसलिये आप अगर नाव मे यात्रा करेंगे तो पहले अपने चरणों को धोना होगा। नहीं तो मैं अपनी स्त्री को क्या कहूँगा और बच्चों का पालन पोषण कैसे करूँगा । मेरी जीविका का यह एक मात्र सहारा है । इसलिये मेरा आपसे अनुरोध है कि आप चरण धो लें ।

विशेष - यहाँ भक्त की भगवान से विनय याचना दिखाई गई है ।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

प्र.१. श्रीराम को तुलसीदास ने कमल नयन क्यों कहा है ?

उत्तर - तुलसीदास के रोम-रोम में श्रीराम बसे हैं । श्री राम के नयन कमल के सदृश होने के कारण उन्हें कमलनयन कहा है ।।

प्र.२. वनवास जाने के समय श्रीराम की मनोदशा किस प्रकार थी ?

उत्तर -उनकी मनोदशा उस प्रकार थी मानो उन्हें कोई खुशी मिल गयी हो । पिता का सत्य पालन करने में उन्होंने जरा भी संकोच नहीं किया, न ही पिता का विरोध किया, सारे राजसी वस्त्र, आभूषण आदि का हँस कर त्याग दिया, जिस प्रकार बसन्त के आगमन पर तोता पुराना पँख त्याग देता है उसी प्रकार श्रीराम अयोध्या वासी, माता-पिता राज्य की सुख-सम्पति सब छोड़कर वन -यात्रा पर चले जाते हैं। राम त्याग की मूर्ति हैं । इस प्रकार उनके मन में जरा भी संकोच भाव न था ।

प्र.३. केवट राम को गंगा पार करने पर चरण धोने को क्यों प्रार्थना करता है ?

उत्तर - केवट राम के चरण धोने की याचना करता है क्योंकि श्रीराम के चरण स्पर्श से पत्थर की मूर्ति अहिल्या स्त्री बन गयी। अगर उसी चरण के स्पर्श से केवट की नाव स्त्री बन गयी तो वह अपनी स्त्री को क्या मुँह दिखायेगा । अपने बच्चों का पालन पोषण कैसे करेगा । इस भय और चिन्ता के कारण वे श्रीराम से प्रार्थना करता है कि हे प्रभु अगर आप मेरी नाव में गंगा जी पार होना चाहते हैं तो पहले चरणों को धोना पड़ेगा, अन्यथा ऐसा न हो कि मेरी नाव भी स्त्री बन जाये ।

प्र. ४. रामचन्द्र को दशरथ की गोद में देख सखी ठगी सी क्यों रह गयी ।

अथवा रामचन्द्र के सौन्दर्य की तुलना किस के साथ की गई है ?

उत्तर - अयोध्या की एक नारी रामचन्द्र के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए सखी से कहती है कि हे सखी– विष्णु के अवतार राम का बाल रूप देख

आज मेरा जीवन धन्य हो गया । सुबह भवन के द्वार पर दशरथ की गोद में राम का सुख देख मैं मुग्ध हो गयी । खंजन के बच्चे की भाँति काजल से रंजित आँखें मन को मोह लेती हैं। श्री राम के चन्द्रमुख पर नये दोनों नेत्र नीले कमल की भाँति शोभित हो रहे हैं ।

प्र. ५. श्री राम की त्यागशीलता का वर्णन कीजिए ।

उत्तर – पितृ वचन का पालन करते हुए राम ने वनवास को स्वीकार कर लिया तथा अपनी राजसी भोग विलास को त्याग, साधु वेश धारण कर वे वनवास को चल दिए । जिस प्रकार तोता वसन्त ऋतु के आगमन पर अपने पुराने पंख त्याग देता है, उसी प्रकार श्री राम अयोध्यावासियों को छोड़कर चले जाते हैं। जिस प्रकार राह चलते हम सुन्दर वृक्षों को छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं उसी प्रकार राम भी सबकुछ छोड़ वन की ओर चले जाते हैं । कवि ने इन्हीं उदाहरणों के द्वारा राम की त्यागशीलता का वर्णन करते हैं ।

प्र.६. वन जाते समय श्री राम सहित सीता एवं लक्ष्मण की शोभा को प्रतिपादित कीजिए ?

उत्तर – वचन के पालन हेतु श्रीराम के साथ पत्नी सीता एवं भाई लक्ष्मण भी अपने-अपने धर्म का पालन करने के लिए जाने को तैयार हुए । वन यात्रा के समय आगे राम, वीच में सीता एवं पीछे लक्ष्मण चले जा रहे थे। उनकी साधु वेश भूषा एवं शालीनता के कारण वे अत्यन्त सुन्दर जान पड़ते थे । कोमल सीता की पवित्रता मानो उज्ज्वलित हो रही थी । इन तीनों पुण्य आत्माओं के आने से वन में वसन्त सा छा गया था । वनवासी उनकी मनोहर छवि देखने को लालायित थे । उन्हें देख सभी मुग्ध हुए जा रहे थे ।

प्र.७. श्रीराम के प्रति केवट की भक्ति भावना को दर्शाइए ?

उत्तर – केवट राम भक्त है । वह परिश्रमी है । वह राम को अपनी नाव में नहीं बैठाना चाहता, क्यों कि राम के पैर के स्पर्श से अहिल्या पत्थर से नारी बन गई थी । उसी प्रकार राम के स्पर्श से केवट की नाव भी कहीं नारी न

बन जाए । इसलिए वह पहले श्रीराम के चरण धोने का निवेदन करता है । उसे ज्ञात था कि श्रीराम विष्णु के अवतार हैं । इसलिए वह श्रीराम के चरण धोकर धन्य होना चाहता था । इस प्रकार वह श्रीराम की सहायता करके एवं चरण धोकर उनके आशीर्वाद का पात्र बन जाता है ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्र.१. तुलसीदास की भक्ति भावना का वर्णन कीजिए ?

उत्तर - देव विषयक 'रति' को भक्ति कहते हैं अर्थात् प्रेम-भाव जब पूज्य बुद्धि समन्वित होता है , तब भक्ति भावना का उदय होता हैं । इस प्रकार श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। तुलसीदास सच्चे भक्त हैं । तुलसी के देव सकल गुण खानि हैं । तुलसी के इष्टदेव की शोभा वर्णनातीत है और वह उनकी शोभा देखते हुए नहीं अघाते हैं । इस प्रकार तुलसी पहले भक्त हैं बाद में कवि । इस कारण उनकी प्रत्येक रचनाओं में राम की महिमा का गुणगान बड़े ही भव्य रूप से किया गया है । उन्होंने अपने काव्य में भगवान राम के तीन विशिष्ट गुणों का बखान किया है - (१) सौन्दर्य (२) शील (३) शक्ति ।

तुलसी के अलौकिक-परलौकिक राम चिन्ता से लोगों को दूर करते हैं । वह निराकार ब्रह्म नहीं, वह सगुण साकार ब्रह्म हैं। तुलसीदास का मानना है कि सच्चे मन से अगर प्रभु का स्मरण , चिन्तन, मनन करने से मानव सारे क्लेशों, दुःख, चिन्ता से मुक्त रहता है । उसके साथ हमेशा श्रीराम का साथ होता है । तुलसी राम के ऐसे भक्त हैं कि उन्होंने प्रत्येक पद में उनकी महिमा का गुणगान किया है । अपने भक्तिभाव का वर्णन किया है ।

तुलसी ने भगवान के बाल-सौन्दर्य रूप का वर्णन करने के अतिरिक्त उनके शक्ति-शील का भी वर्णन किया है । वे दुष्टों का दमन करने वाले तथा शरणागत की रक्षा करनेवाले हैं -

"जो पै कृपा रघुवीर की, बैर और के कटा सरे ।
होई न बाँकों बार भक्त को, जो कोटि उपाय करे ।
तुलसीदास रघुवीर -बहुबल सदा अभय काहू न डरे ।

कवि तुलसीदास में दैन्य भाव पराकाष्ठा को पहुँच गया है और उन्होंने संसार की असारता दिखाकर भक्ति के महत्व को प्रतिपादन किया -

'राम सों बडो है कौन मोसो कौन छोटो ।

राम सौ खरो है कौन मोसों कौन खोटो ।

तुलसीदास ने अपने आपको सम्पूर्ण समर्पित कर दिया है । वे अपने प्रभु के दास हैं । उन्होंने रचनाओं में दास्य भाव का वर्णन किया है ।

वे नवधा भक्ति के दास्य-भाव से प्रभावित थे । उनकी भक्ति -भावना में श्री राम के प्रति अपनी अनन्त आस्था, विश्वास और राम की महिमा वर्णित है । उन्होंने नवधा भक्ति के पदसेवन का दृश्य केवट के माध्यम से वर्णन किया है । केवट श्री राम के चरणों को धोने की इच्छा रखता है जिससे उसकी नाव नारी न बन जाए, केवट कहता है -

तुलसी अवलम्बु न और कछू, लरिका केहि भाँति जिइहौ जू ।

बरू मारिए मोहि, बिना पग धोए हौ नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू ॥

कवि का विश्वास है कि राम की एक नजर से मनुष्य के सारे दुःख , दर्द मिट जायेंगे, अपने से ज्यादा वह अपने प्रभु पर विश्वास करते हैं । वे कहते हैं कि श्री राम का आशीर्वाद जिस पर हो वह संसार की प्रत्येक वस्तु पा सकता है । हर सुख प्राप्त कर सकता है । इसके लिए मन को मोह माया से हटा कर एकाग्र होकर ईश्वर का चिन्तन, मनन और स्मरण करना होगा ।

प्र.२. 'कवितावली' के माध्यम से तुलसी दास जी ने राम के व्यक्तित्व में राम महिमा के साथ-साथ देशकाल वातावरण का भी सुन्दर समन्वय किया है । समीक्षा कीजिए ?

उत्तर - हिन्दी साहित्य में तुलसीदास का स्थान सर्वोपरि है । हिन्दी साहित्य में भक्ति काल को स्वर्णयुग कहा जाता है और उस स्वर्णयुगीन काव्य के दो अमर कवि हुए - सूर और तुलसी । तुलसी का व्यक्तित्व महान् था ।

इन्होंने राम चरित मानस के माध्यम से समाज को एक महान आदर्श व्यक्तित्व राम के रुप में प्रदान किया । तुलसी दास ने राम के जीवन में सम्पूर्ण मानव जीवन को देखा है । उनकी भावुकता, उनके मानस में जीवन का कोई पक्ष या मानव के जीवन का पहलु अछुता नहीं रहा । तुलसी दास जी ने प्रबन्ध काव्य के साथ-साथ गीत भी लिखे हैं । अपने गीत और कविता के माध्यम से तुलसी दास महल से झोंपड़ी तक के जीवन में समा गए हैं । तुलसीदास की पंक्तियों में जहाँ भावुकता मिलती है, लोकोक्ति और मुहावरे मिलते हैं वहीं उनकी पंक्तियों का गूढ़ार्थ लगाने में बड़े बड़े विद्वान भी चक्कर खा जाते हैं ।

तुलसी दास जी भक्त भी थे, कवि भी, लोकगायक और युगदृष्टा भी थे । प्रस्तुत रचना 'कवितावली' में तुलसी दास द्वारा रचित उनके जीवन के विभिन्न पद हैं। विभिन्न पदों में कहीं बाल रूप, कहीं धनुष धर, कहीं परशुराम लक्ष्मण संवाद, कहीं वन गमन, कहीं केवट पाद प्रक्षालन, कहीं वन में यात्रा का वर्णन और कहीं अरण्य निवास दिखाया गया है । इस प्रकार जीवन के विभिन्न पहलुओं को तुलसी दास जी ने राम की महिमा के साथ-साथ समय के साथ परिवर्तित वातावरण का भी सुन्दर वर्णन किया है । इस काव्य में राम चरित और उससे सम्बद्ध चरित्रों की तथा उनके चरित्र की महिमा का आख्यान तो है ही लेकिन इससे बड़ी विशेषता यह है कि उन स्थानों, उन तत्वों के सम्बन्ध में भी तुलसी दास जी ने स्पष्ट वर्णन किया है । तुलसी दास जी कहते हैं कि श्री राम चन्द्र जी का शारिरिक सौन्दर्य देखते ही बनता है जो मनमोहक है जिसमें मन को वशीभूत करने की क्षमता है । वह भगवान होते हुए भी एक आम मानव की भाँति त्यागवान तथा एक आज्ञाकारी पुत्र के रूप में उनका तुलसी दास जी ने वर्णन किया है । साधारण से साधारण मनुष्य के प्रति भी उनकी भक्त भावना कम नहीं है । केवट और राम के बीच प्रेम इसका प्रतीक है । केवट के मन में राम के प्रति जो भक्ति भावना है, वह इसे व्यक्त नहीं कर पा रहा है । वह उनके चरणों की महानता के माध्यम से अपनी मजबूरी व्यक्त करता है । और भगवान राम भगवान न होकर एक आम मानव के रूप में उसके द्वन्द का समाधान करते हैं ।

'कवितावली' के माध्यम से तुलसी दास जी ने राम कथा की आड़में समाज सुधार का अच्छा कार्य किया है । बड़े-छोटे, जाँति-पाँति और ऊँच-नीच की भावना मनुष्य को महान बनने में रोकती है । यह संदेश तुलसी दास ने समाज को दिया है । तुलसी दास जी का विचार समन्वयवादी होते हुए भी सनातन धर्मी था । तुलसी दास जी की भाषा, देश की भाषा थी । अपने समय में प्रचलति अवधी और ब्रज दोनों ही भाषा का इन्होंने साधिकार प्रयोग किया है । साथ ही साथ इन्होंने जन-भाषाओं को भी एक नई गरिमा प्रदान की है, क्योंकि उन्हें जनता जनार्दन के हृदय तक पहुँचना था । अन्त में तुलसी दास जी ने असहाय हिन्दू जाति को राम के रूप में सबल नेता और पथप्रदर्शक प्रदान किया है तथा मर्यादा पूर्ण जीवन व्यतित करने की शिक्षा दी है । उनके भरत भातृप्रेम त्याग और शील के निधान है, उनके लक्ष्मण में यौवन की स्फूर्ति कूट -कूट कर भरी है । उनकी सीता प्रेम की कली है, सौन्दर्य की खान है और आदर्श पत्नी है, उनके हनुमान सेवा की मूर्ति और आज्ञाकारिता का अवतार हैं, और केवट भक्ति का प्रतीक है । इस प्रकार तुलसी के सभी पात्र समाज को सुन्दर और सफल जीवन बिताने की प्रेरणा प्रदान करते हैं ।

प्र.३.- ''तुलसीदास का काव्य उनके युग का वर्णन है। वे हिन्दी साहित्य के सबसे बड़े कलाकार हैं और युग प्रतिनिधि कवि हैं।''- इस कथन की विवेचना कीजिए ?

उत्तर - प्रत्येक महान साहित्यकार अपने युग में युग-साहित्य का निर्माण करता है। हिन्दी साहित्य में गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य के चारों कालों (वीरगाथा काल, भक्तिकाल,रीतिकाल और आधुनिक काल) में भक्तिकाल सर्वश्रेष्ठ है । वह हिन्दी-साहित्य का स्वर्ण युग है। तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसमें इन्होंने गीतों के साथ-साथ प्रबन्ध काव्य भी लिखा था। तुलसी दास ने राम के जीवन में सम्पूर्ण जीवन को उपस्थित किया है, उनकी भावुकता जीवन का कोना-कोना झाँक आई है। उनके मानस में जीवन का कोई पक्ष मानव के चरित्र का कोई पहलू अछूता नहीं रहा है।

कवि को काव्य-रचना के लिए समकालीन परिस्थितियाँ परोक्ष या अपरोक्ष रूप से प्रेरणा देती है। उन परिस्थितियों से प्रभावित हो उनके कृत्तियों में उसका प्रतिफलन अंकित होता है। 'तुलसी का काव्य' उनके युग का दर्पण है।' उनकी रचनाओं में उस समय की राजनैतिक, सामाजिक , सांस्कृतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक परिस्थितियों का प्रतिफलन पूर्ण रूप से मिलता है।

उस समय विलास अथवा धर्म-स्थापना के लोभ से प्रेरित शासक तथा उसके अधिकारीगण प्रजा का शोषण करते थे। इन्हीं परिस्थितियों से प्रभावित हो, उन्होनें 'मानस' में राजनैतिक आदर्श प्रस्तुत किया है। उनके युग के राज्य की दुर्दशा का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा है -

गोड़, गँवार, नृपाल कलि, यवन महा महिपाल

साम न दाम न भेद अब, केवल दण्ड कराल।

समकालीन अव्यवस्थित सामाजिक स्थिति, ऊँच-नीच का भेद देख वर्णन किया है -

वरन धरम गयौ, आश्रम निवास तज्यो,

जाचक चाकित सो परावनो परोसो है।

धार्मिक क्षेत्र में भी अराजकता ही व्याप्त थी। इसी समय विष्णु की सगुणोपासना तथा राम और कृष्ण की विष्णु रूप में भक्ति की धारा प्रवाहित थी। मूलतः ये परम्पराएँ दक्षिण भारत की थीं जो उत्तर भारत में प्रचलित हो गईं। कई नई धार्मिक परम्पराओं का विकास हो रहा था, न कोई निश्चित धर्ममार्ग था और न धार्मिक व्यवस्था थी। वेद-विदित मार्ग लोग छोड़ चुके थे। तुलसी दास ने कहा है-

कलिमय ग्रसे धर्म सब, लुप्त हुए सद्ग्रन्थ ।

दम्भिन निज मत कल्पि करि, प्रकट किए बहु पंथ ॥

गोस्वामी जी मूलतः एक धार्मिक-पुरुष तथा सामाजिक विचारक

और जन-कल्याण इच्छुक महात्मा थे। उन्होंने साहित्य साधना को इस उद्देश्य की पूर्ति के माध्यम के रूप में लिया । समकालीन साहित्यिक परिस्थितियों कां समावेश उनकी कृतियों में मिलता है।

तुलसीदास की पहुँच झोपड़ी से महल तक है। उनका 'रामचरित मानस' जनता का कंठहार है । एक ओर अनपढ़ गँवार व्यक्ति भी उसकी पंक्तियों से रस निचोड़ लेता है । गाँव के अक्षर ज्ञान हीन आदमी भी उठते जागते तुलसी दास के वाक्यों का अनजानें ही प्रयोग किया करते हैं। ऐसे वाक्य गाँवों में लोकोक्ति और मुहावरे बन गए हैं–

का बरखा जब कृषि सुखानी

समय चूकिं पुनि का पछतानी ॥

दूसरी ओर तुलसी दास की पंक्तियों का गूढ़ार्थ लगाने में बड़े बड़े विद्वान भी चक्कर खा जाते हैं । उनके एक एक वाक्य के असंख्य अर्थ लगाये गए हैं और तब भी विद्वानों को संतोष नहीं होता । यह कथन उचित है कि बालकांड का आरम्भ, अयोध्या का मध्य और उत्तर का अंत अथाह है । उसकी थाह लेना किसी भी पंडिंत के लिए सम्भव नहीं । वस्तुत: कवि की वाणी सत्य है कि –

राम चरित जे पढ़त अघाहीं ।

रस विशेष जाना तिन नाहीं ॥

छन्द और अलंकार में तुलसी दास जी सभी कवियों से आगे हैं । जिस प्रकार संस्कृत में 'उपमा कालिदासस्य' कहा जाता है, इसी तरह हिन्दी में 'उपमा तुलसीदासस्य ' कहना गलत नहीं होगा ।

तुलसी दास के आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी थे । इनकी भक्ति दास्य भक्ति थी । चातक उनकी भक्ति का आदर्श था । दार्शनिक विचारों में वे विशिष्टा द्वैतवादी थे । इनकी भाषा ब्रज तथा अवधी थी ।

तुलसीदास संस्कृत भाषा और साहित्य, हिन्दू-दर्शन, धर्मशास्त्रों के अच्छे ज्ञाता थे । अपनी मर्म भेदिनी और हृदयग्राही कविता के माध्यम से ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, बालक-वृद्ध आदि सभी को शान्ति प्रदान की है ।

इस प्रकार तुलसीदास ने जहाँ शैव, वैष्णव और शाक्तों में समन्वय किया, वहाँ ज्ञान, कर्म और भक्ति में भी अनुपम समन्वय किया । उनके काव्य ने तत्कालीन समाज का ही परिस्कार नहीं किया अपितु भविष्य के समाज की भी आधारशिला रखी । इस प्रकार वे भविष्य दृष्टा और स्रष्टा भी थे ।

बिहारी (दोहा)

कवि परिचय :

लोक प्रियता की दृष्टि से रीतिकालीन कवियों में बिहारी का स्थान सर्वोपरि है। केवल रीतिकाल में ही नहीं सम्पूर्ण हिन्दी-साहित्य में इनका स्थान महत्वपूर्ण है। सूरदास के पश्चात् ब्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि यही हैं। हिन्दी का कोई भी कवि इतना कम लिखकर इनके बराबर ख्याति लाभ नहीं कर सका।

बिहारी माथुर चौबे ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनका जन्म ग्वालियर राज्य के बसुवा गोविन्दपुर नामक गाँव में सम्वत् १६६० में हुआ था। बिहारी के सम्बन्ध में निम्नांकित दोहा बहुत प्रसिद्ध है-

जन्म ग्वालियर जानिये, खण्ड बुन्देले बाल।

तरुनाई आई सुखाद, मथुरा बसि ससुराल॥

इस दोहे से प्रमाणित हो रहा है कि कवि का बचपन बुन्देलखंड में व्यतीत हुआ। मथुरा इनकी ससुराल थी। जहाँ पर इनके यौवनकाल का प्रारम्भिक समय आनन्द-विहार के साथ व्यतीत हुआ।

तुलसी और सूर के बाद हिन्दी के जिस कवि को सबसे अधिक सम्मान और यश मिला उसका नाम है 'बिहारीलाल'। बिहारी की साहित्यिक कीर्ति इनकी रचित 'बिहारी-सतसई' पर अवलम्बित है। इन्होंने किसी दूसरे ग्रन्थ की रचना नहीं की। इनकी सतसई मुक्तक काव्य है। ''बिहारी-सतसई'' में कुल ७१९ दोहे अर्थात १४३८ पंक्तियाँ संकलित है। इनके छोटे-छोटे दाहे बहुत अधिक

भावों से परिपूर्ण हैं। बिहारी सतसई श्रृंगार -रस का भी श्रृंगार है। इनके दोहों का प्रभाव पाठक पर कितना अधिक पड़ता है, यह नीचे दिये दोहे से स्पष्ट है-

सतसैया के दाहरे, ज्यों नाविक के तीर।

देखत में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर ॥

श्रृंगार वर्णन कवि का बहुत अच्छा है। उनका नख-सिख वर्णन हमारे साहित्य की अनुपम निधि है। बिहारी सतसई में नायिका - भेद, रस और अलंकारों के उदाहरण भरे पड़े हैं, पर यह लक्षण ग्रन्ध नहीं है। बिहारी कवि थे, आचार्य नहीं। उनमें कला-पक्ष और ह्दय-पक्ष दोनों था। अपने क्षेत्र-श्रृंगार का कोना-कोना बिहारी का देखा हुआ था । श्रृंगार के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों का भी ज्ञान था। महाकवि बिहारी लाल का शास्त्र ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था । धर्म, काव्य-शास्त्र और संगीत शास्त्र को तो इन्होंने गहराई से सीखा था नीति, राजनीति, ज्योतिष, गणित, इतिहास, वैदिक एवं भाँति-भाँति की कलाओं का भी इन्हें पूरा ज्ञान था। इस सारे ज्ञान और अनुभव इन्होंने अपने दोहों में भर दिया, जिसके कारण ये दोहे लोकप्रिय बन सके।

बिहारी के काव्य में ब्रजभाषा के साथ-साथ बुन्देलखंडी , पूर्वी और अरबी-फारसी आदि शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। कवि की भाषा का माधुर्य आकर्षक है। अलंकार का प्रयोग इन्होंने खुलकर किया है। बिहारी ने मुक्तक शैली को अपनाया है। इनके दोहे अल्प अक्षरों से युक्त होने पर भी बहुत अधिक अर्थ सम्मत है। वस्तुतः कवि ने अपनी काव्य-रचना द्वारा गागर में सागर भरने वाली बात को स्पष्ट कर दिया है।

व्याख्या भाग

१. सीस मुकुट कटि काछनी .... सदा बिहारी लाल ।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं।

सन्दर्भ - इन पंक्तियों के माध्यम से कवि अपने आराध्य श्री कृष्ण से यह प्रार्थना करते हैं कि उनका बाल रूप उनके हृदय में सदा बसे रहे ।

व्याख्या - कवि श्री कृष्ण के बाल रूप के उपासक हैं। इस लिये वे उनके इसी रूप को अपने हृदय मे सदैव बसाना चाहते हैं उन्हें उनका अन्य रूप बसाने की कोई लालसा नहीं है । उन्हें कृष्ण जी के मणि-मंडित, किरीट, पीताम्बर, सुदर्शन चक्र तथा वैजयंती माला धारण किये हुए रूप से कोई प्रेम नहीं, वे तो केवल उनके बाल रूप में रमे हुए हैं ।

इसलिये वे कृष्ण से प्रार्थना करते हुए कहते है कि हें प्रभु मेरे तन-मन में तुम ऐसे बाल वेश में बसो जिसमें तुम्हारे सिर पर मोर-मुकुट हो, कर में मुरली एवं हृदय पर वनमाला हो । आपका यही रूप मेरे मन में सदा के लिये बसा है ।

विशेष - इस पद में बहुब्रीहि समास है ।

प्र.२. सखि सोहित गोपाल के ..... दावानल की ज्वाल ।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ' हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई है ।

सन्दर्भ - यहाँ नायिका सखि से राधा कृष्ण के गुण के रूप का वर्णन कर उनके विरह भाव को व्यक्त कर रही है और अपनी मनोदशा भी बता रही है।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्ति में श्री कृष्ण के गुंजों की माला पहने हुए अपने घर के **समीप** रास्ते पर देखकर प्रेमिका अपनी प्रिय सखि से कहती है कि आज मैंने श्रीकृष्ण को देखा उसके हृदय पर गुंजमाला देख मुझे ऐसा लगता है कि मानों कुंज में मुझे न पाकर जो विरह हुआ उस ज्वाला का प्रसार जल बहार होकर वह लपलपा रही है । इसे देख मेरी आँखों को बड़ा ताप, कष्ट होता है ।

विशेष - यहाँ कृष्ण राधा के पवित्र प्रेम के बारे में कहा है कि मिलन न होने पर उनकी क्या दशा होती है ।

प्र.३. अधर धरत.................... होति ।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं।

सन्दर्भ - यहाँ कवि ने श्रीकृष्ण की शक्ति के बारे में कहा है कि किस प्रकार जब बाँसुरी उनके होठ तक जाती है तो वह अपना घर छोड़ उनमें रंग जाती है । राधा कृष्ण के प्रति प्रेम भाव उत्पन्न करने के लिये सखि उनकी शक्ति के बारे में कहती है ।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि राधा की सखी , कन्हैया को बाँसुरी बजाते देख कर अचम्भित हो गई क्यों कि वह बाँसुरी कृष्ण जी के सामिप्य से इन्द्रधनुषी रंग की हो गई । सखि राधा को उनके पास ले जाना चाहती है, इसलिए उनकी प्रशंसा करती हुई कहती है ।

सखि कहती है कि हरि के होठ के स्पर्श से, उनकी दृष्टि तथा पट की ज्योति की झलक पड़ते ही बाँसुरी का हरा रंग इन्द्रधनुषी हो गया, जब राधा उनके समीप जायेगी तो वह भी रंगीली हो जायेगी ।

प्र.४. **जपमाला छापा तिलक .... साँचै राचै राम।**

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं।

सन्दर्भ - यहाँ कवि आडम्बर भक्ति का खंडन करते हैं और अपना विचार प्रकट किया है ।

व्याख्या - कवि कहते हैं ईश्वर सच्ची भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं। बनावटीपन,आडम्बर की भक्ति भक्त को भगवान से दूर ले जाती है । सच्चा भक्त वह है जो तन-मन-धन से ईश्वर में लीन रहता है और श्रद्धा से उनकी आराधना करता है । वे ढोंगी भक्तों पर अपना मत प्रकट कर कहते हैं कि जप-तप मुद्रादि तथा माथे पर तिलक से कोई लाभ नहीं क्योंकि जब तक श्रद्धा से

भक्ति नहीं की जाए वह प्रभु द्वारा अस्वीकार्य होती है। ऐसे भक्त का मन कच्चा और चंचल होता है । तात्पर्य यह है कि सच्ची भक्ति से ही भगवान प्रसन्न होते हैं। चंचलता भक्ति के मार्ग में बाधक है ।

विशेष - अलंकार -श्लेष, रूपक तथा अनुप्रास। यहाँ आडम्बर पूर्ण पूजा का विरोध कर, सच्ची भक्ति के बारे में कहा है ।

प्र.५. या अनुरागी चित्त की .... त्यों-त्यों उज्वल होय।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं।

सन्दर्भ - यहाँ कवि ने कृष्णोपासना पर बल दिया है ।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि इस प्रेम से भरी हृदय की गति से कोई परिचित नहीं हो सकता जैस-जैसे यह प्रभु की भक्ति में लीन होता है वैसे वैसे यह श्याम रंग कृष्ण के प्रेम में डुबता जाता है और वह अधिक उज्ज्वल या पवित्र होता जाता है ।

प्र.६. पट पाखे भखु ......एकै तुही विहंग ।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं।

सन्दर्भ - इन पंक्तियों में कवि ने परदेश में रहने वाले व्यक्ति के दुःख का वर्णन किया है ।

व्याख्या - कवि परदेश में भोजन एवं वस्त्र के निमित्र रहने वाले व्यक्ति का दुःख प्रकट करते है । वह व्यक्ति परदेश में अपने प्रियजनों से दूर अकेला रहता है । उसे अपनी मजबूरी के कारण रहना पड़ रहा है ।

कवि उस व्यक्ति के माध्यम से एक कबूतर और कबूतरी के सुख को देखकर उनसे कहते हैं कि हे पक्षी! इस धरती पर एकमात्र सुखी तू ही है तेरा वस्त्र

कंकडी है वह भी तेरे पास तेरा पंख तेरे पास ही है, जो भक्ष्य भोजन का पदार्थ कंकडी है वह भी तेरे पास है और सबसे अच्छी बात यह है कि तेरे साथ सब स्थानों पर जाने के लिये कबूतरी तेरे साथ ही है ।

विशेष - वस्त्र, आहार तथा श्रृंगार को कवि ने सुख का मूल माना है।

प्र.७. करि फुलेल .... दिखावत ताहि ।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ' हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं ।

सन्दर्भ -यहाँ कवि ने कहा है कि मूर्ख व्यक्ति के साथ अगर विद्वान व्यक्ति बैठता है तो वह उसे मूर्ख ही समझता है ।

व्याख्या - यहाँ कवि ऐसे व्यक्ति का वर्णन कर रहे हैं जो बहुत गुणी है, विद्वान है पर मूर्खों के समीप जा बैठा है जो उसकी योग्यता का सही रूप से मूल्यांकन नहीं कर पा रहे हैं । जिस प्रकार इत्र बेचने वाले अपने सामान को उस व्यक्ति को दिखा रहे हैं जो पहले उसे सुँघने के बदले पी लेते हैं क्योंकि उन्हें इस चीज का ज्ञान नहीं एहमीयत नहीं फिर प्रशंसात्मक स्वर से उसकी मिठास का वर्णन करते हैं ।

विशेष - इत्र पेय वस्तु नहीं है, किन्तु मूर्ख व्यक्ति इसे सुँघते नहीं, बल्कि पी लेते हैं ।

अलंकार - अन्योक्ति

प्र.८. गुनी गुनी .... अर्क समान उदोत ।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ' हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं।

सन्दर्भ -इन पंक्तियों में कवि ने गुणी एवं निर्गुणी व्यक्ति के विषय में अपना मत प्रकट किया है ।

व्याख्या -कवि का कहना है कि व्यक्ति को ऊँची उपाधि या विशेषण देने से वह गुणी या ऊँचा नहीं हो जाता । सभी व्यक्ति यदि किसी गुणहीन को गुणी कहना आरम्भ कर दे तो क्या ? जो बुरा है उसे अच्छा कहने से वो अच्छा नहीं हो जाएगा ।

कवि कहते हैं जिस प्रकार अर्क फूल को अर्क अर्थात सूर्य नहीं समझा जा सकता क्योंकि वह सूर्य के समान प्रकाशवान नहीं हो सकता उसी प्रकार निगुर्णी व्यक्ति को गुणी कहने से वह गुणी नहीं हो सकता ।

विशेष - पुनरु क्ति तथा यमक ।

प्र.९. तो पर वारौ उखसी...... ह्वै उरबसी समान ।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ' हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं।

सन्दर्भ-इन पंक्तियों में कवि ने राधा कृष्ण के प्रेम का वर्णन किया है । कृष्ण यहाँ रूठी राधा को मना रहे हैं।

व्याख्या - राधा कृष्ण जी को अन्यरत सुन रूठ गई है । वह कृष्ण जी से नहीं बोल रही । वे उन्हें मनाने की कोशिश कर रहे हैं। वे उनके रूप सौन्दर्य का वर्णन पर उन्हें मनाने का प्रयत्न कर रहे हैं ।

कृष्ण जी उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि हे राधिके ! तुम्हारे इस प्रभावशाली रूप-सौन्दर्य पर मैं उर्वशी जैसी नारी को न्यौछावर कर सकता हूँ । तुम मेरे हृदय में उसी प्रकार रहती हो जिस प्रकार उर्वशी आभूषण मेरे हृदय पर रहता है ।

प्र.१०. नये विलसिये लखि ..... काँटे लौ लगि पाय ।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य धारा' के बिहारी (दोहा) से ली गई हैं।

सन्दर्भ- इन पंक्तियों में कवि दुष्ट व्यक्तियों से सर्तक रहने का उपदेश देते हैं ।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि दुर्जन व्यक्ति पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए । वह हमें कभी भी धोखा दे सकता है और हमें बहुत कष्ट पहुँचा सकता है, इसलिये हमें उससे हमेशा सावधान रहना चाहिये और उसकी मीठी बातों में नहीं फँसना चाहिये ।

कवि समझाते हुए कहते हैं कि दुर्जन व्यक्ति को नम्र होते देखकर हमें ज्यादा सावधान हो जाना चाहिये क्यों कि वह धोखा देने वाला होता है। वह काँटे के समान हो जाता है, जौ पैरों में फँसकर अत्यन्त कष्ट देता है । हमें उससे सावधानी बरत उसके काम को कामयाब नहीं होने देना चाहिये ।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

प्र.१. बिहारी श्रीकृष्ण के किस रूप को अपने हृदय में विराजने को कहते हैं ?

उत्तर - बिहारी को श्रीकृष्ण का मुस्कुराता , कोमल, शान्त रूप बड़ा हृदयस्पर्शी लगता है । इसलिये कवि कहते हैं कि हे प्रभु मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप सदा सिर मोर मुकुट, कमर में काँछनी और हाथ में मुरली और गले में वनमाला धारण करते हुये सदा के लिये मेरे हृदय में बस जाओ ।

जिससे आपके इस रूप को देखने की मेरी जिज्ञासा शान्त हो जाये ।

प्र.२. श्रीकृष्ण के हृदय में पड़ी माला की तुलना किसके साथ की है ?

उत्तर -कवि ने नायक श्रीकृष्ण संकेत स्थल बगीचे में राधा को न पाकर दुःखी मन से लौटते हैं । परन्तु प्रभु वहाँ गये थे , उस बात को नायिका को बताने के लिये वह नायिका के घर रास्ते से जा रहे हैं । यह देख सखि से कहती है कि

कृष्ण के हृदय में वह फूलों की माला ऐसा रूप धारण की हुई है जैसे उनके द्वारा ब्रजलीला में पी गई दावाग्नि में मेरे न मिलने से वही विरहाग्नि की ज्वाला बाहर निकल कर लपलपा रही है ।

प्र.३. राधा को कृष्ण के पास भेजने के लिये सखि क्या बहाना करती है ?

उत्तर - सखि राधा से कहती है कि मैंने अभी देखा कि श्रीकृष्ण के अधर पर बाँसुरी धारण करते ही या होठ पर लगाते ही उसका हरा रंग बदल गया और वह बाँसुरी इन्द्रधनुषी के रंग की हो गयी । अगर तुम भी उनके समीप जाओ तो तुम्हारी शोभा भी रंगीन हो जायेगी ।

प्र.४. कवि आडम्बरपूर्ण भक्ति को व्यर्थ क्यों मानते है ?

उत्तर - कवि आडम्बरपूर्ण भक्ति को व्यर्थ मानते हैं क्योंकि हाथ में माला, मस्तक पर तिलक और पीताम्बर वस्त्र धारण करने से ईश्वर नहीं मिलते वह मात्र भ्रम है । यह मन को झूठी शान्ति देना है । इससे प्रभु और दूर होते जाते हैं। इसलिये वे सच्ची भक्ति, प्रेम, विश्वास को श्रेष्ठ मानते हैं । सच्चे मन से पूजा करने से हमें ईश्वर का साक्षात्कार हो सकता है ।

प्र.५. कवि मूर्ख और गुनी में क्या अन्तर बताते हैं।

उत्तर - कवि कहते है कि अगर किसी मूर्ख व्यक्ति के पास गुनी व्यक्ति प्रशंसा पाने की उम्मीद करे तो व्यर्थ है क्यों कि उसे उसका मोल ही नहीं मालुम क्यों कि वे गुण या प्रतिभा का अनादर करते हैं । कवि कहते हैं कि अगर किसी मूर्ख को बारम्बार पंडित कहे और सोचे कि वह विद्वान हो जायेगा तो वह व्यर्थ ही है क्योंकि लाख कोशिश करके भी वह अपनी प्रवृत्ति नहीं छोड़ेगा ।

प्र. ६. कवि ने पक्षी को पृथ्वी पर सुखी क्यों माना है ?

उत्तर - मनुष्य अपने जीवन यापन के लिये धन उपार्जन की चेष्टा में परदेश में भटकता रहता है । कबूतर और क़बूतरी को कंकड़ चुगते देख कवि

कहते हैं कि हे पक्षी, पंख ही तुम्हारे वस्त्र हैं । भोजन के रूप में कंकड़ को खाकर अपनी भूख शान्त करते हो और सबसे बड़े सुख की बात यह है कि तेरी जीवन संगिनी कबूतरी भी तेरे पास है । इसलिए जगत में तू ही सबसे सुखी है । एक हमें ही अपने साथी से अलग रहना पड़ता है । इस प्रकार कवि ने पक्षी को ही जगत में सबसे सुखी एवं सन्तुष्ट माना है ।

प्र. ७. राधा के रुठने पर कृष्ण किस प्रकार मनाने का प्रयत्न करते हैं ?

उत्तर - कृष्ण राधिका को सुजान नाम से संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे राधे तुम्हारे रूप-सौन्दर्य पर उर्वशी को न्यौछावर कर दूँ । तुम तो मेरे हृदय में बसी हुई हो। जिस प्रकार उर्वशी नामक आभूषण हृदय में निवास करता है, उसी प्रकार तुम भी मेरे हृदय पर अधिकार कर चुकी हो । इस प्रकार कृष्ण अपनी चाटुकारिता भरी बातों से राधा को मनाने का प्रयत्न करते हैं ।

प्र. ८. दुष्ट प्रकृति के लोगों से कैसे बचना चाहिए ?

उत्तर - बिहारी जी कहते हैं कि दुष्ट व्यक्ति को नम्र देखकर उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए । उसके नम्र होने का अर्थ है कि वह ढोंग कर रहा है । मौका पाते ही वह आपको क्षति पहुँचाने की कोशिश करेगा । उसकी प्रकृति को देख उससे बचना चाहिए, वरना काँटे की भाँति पैर में चुभ कर कष्ट देता रहेगा ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्र.१. बिहारी के विप्रलम्भ श्रृंगार का वर्णन कीजिए ?

उत्तर -महाकवि बिहारी लाल रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं। उन्होंने अपनी एकमात्र कृति बिहारी सतसई को ब्रजभाषा में लिखा है ।हमारे हिन्दी साहित्य में विप्रलम्भ श्रृंगार का वर्णन अनेक कवियों ने किया है पर जो बात बिहारी के दोहे में है वह अन्यत: दुर्लभ है। जिस प्रकार इन्होंने संयोग रस का वर्णन किया है उसी प्रकार वियोग श्रृंगार का भी वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है ।

यौवन समय प्रिय-प्रेमिका एक दूसरे से मिलते हैं तो रास करते हैं । वे एक दूसरे में लीन हो जाते हैं। उसे संयोग श्रृंगार कहते हैं पर किसी कारण जब नहीं मिल पाते तो दोनों जिस दुःख, वेदना का अनुभव करते हैं उसी को विप्रलम्भ श्रृंगार कहते हैं ।

जिस प्रकार संयोग श्रृंगार अनेक होते हैं उसी प्रकार बिहारी ने वियोग श्रृंगार के भी चार भेद किये हैं -**पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण** । पूर्वराग जनित वियोग का वर्णन बिहारी ने मुग्धा नायिका के मांध्यम से किया है। पूर्वराग में मार्मिक अनूभुति स्वयं प्रिय से मिलने के लिये व्याकुलता तथा रूकावट , अडचन के कारण मिल न सकने के कारण तड़पन, घुटन आदि का बड़ा मार्मिक और मनोविश्लेषणात्मक वर्णन किया है । पूर्वानुराग में नायिका मिलने के लिये ज्वालामुखी सी जल रही है और समस्त सुखों को हवन कर रही है -

'होयति सुख करि कामना, तुमहिं मिलन की लाल ।

ज्वालमुखी-सी जरति लखि, लागनि अगनि की ज्वाल ॥

पूर्वराग में नायक-नायिका एक दूसरे से मिलने, बात करने आदि के भाव से आकर्षित होते हैं । उसे पूर्वराग कहते हैं। बिहारी यहाँ नायिका की वाह्यदशा की अपेक्षा अन्तः कथा का वर्णन किया है । सखि से कृष्ण की तारिफ सुन नायिका उनके पास पहुँच जाती है । सखि चाहती है कि कृष्ण के पास राधा जाये, इसलिये वह कहती है -

"अधर धरत हरि के परत, ओठ डीठि पर जोति ।

हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्र धनुष सी होती ॥"

मान-अभिमान की अवस्था का बिहारी ने अनेकानेक दोहों में बड़ा ही स्वभाविक वर्णन किया है । मान में प्रिय-प्रेमिका का रूठना-मनाना होता है साथ ही प्रेम ही रहे भाव न हो तो प्रेम में मजा नहीं आता । वह दोंनों भी अब जायेंगे और यह एकाग्रता इस भरने का कार्य नहीं कर पाती ।

यहाँ राधा श्रीकृष्ण को अन्य किसी स्त्री के साथ रास करते सुनती है तो वह नाराज हो जाती है । इस प्रकार रूठी राधा को मनाने के लिये कृष्ण बार-बार कहते हैं और उसके रूप की सुन्दरता का बखान करते हैं । वे कहते हैं- हे प्रिय, तुम इतनी सुन्दर हो कि तुमपर उर्वशी तक को न्यौछावर कर दूँ ।

'तो पर वारों उरवसी, सुनि राधिके सुजान ।

तू मोहन के हर बसी है, उरवसी समान ।'

प्रणय में मान थोड़े समय रहता है इससे दोनों यह चाहते हैं कि हमें कोई तीसरा मिलाये -

'दोऊ चाह-भरे कछू, चाहत कहयों कहैं न ।

नहिं जॉचकु सुनि सूमलौं, बाहरि निकसत बैने ।

मध्या, खंडिता, मानवती आदि नायिकाओं के रोष और खीज की अनेक दोहों में बहुत सुन्दर अभिव्यंजना हुई है ।

प्रवास बिहारी सतसई के अन्तर्गत प्रवास विषयक विरह वर्णन अत्यधिक हुआ है । नायक के विदेश जाते समय नायिका की वेदना उसके हृदय के साथ ही पाठकों के हृदय को भी मथ डालती है ।

काव्य शास्त्रियों ने विप्रलम्भ श्रृंगार को दस दशाओं में विभक्त किया है- चिन्ता, अभिलाषा, स्मृति, गुण-कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण । इन सभी दशाओं का वर्णन बिहारी ने अपनी बिहारी सतसई में लिखा है । कुछ-कुछ दशाओं में तो उन्होंने जान ही फूँक दी है । इस प्रकार बिहारी के वियोग श्रृंगार में ऊहात्मक उक्तियाँ पर्याप्त मात्रा में आती हैं । बिहारी श्रृंगार रस के वियोग पक्ष के चित्रण करने में उतने ही सफल हुए हैं, जितने की संयोग श्रृंगार में । बिहारी के सम्बन्ध में यह कहना असंगत न होगा कि उन्होंने विप्रलम्भ-श्रृंगार रस का अत्यंत विदग्ध वर्णन किया है ।

प्र.२. सतसईया के दोहे गागर में सागर भर देते हैं । उक्ति स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर - हिन्दी साहित्य में अनेक कवि आये किन्तु बिहारी की जैसी प्रतिभा किसी में नहीं थी । बड़ी से बड़ी बातों को वे बड़े कम शब्दों में कह देते थे, जिससे श्रोता समझ भी जाये और कोई बात मन पर प्रहार भी ना करे । बिहारी के दोहे नाविक के तीर के समान छोटे हैं परन्तु उनसे जो भाव व्यक्त होते है वे हृदय में गंभीर प्रभाव डालकर उसे भावभिभूत कर देते हैं । बिहारी ने हमेशा श्रृंगार का अधिक वर्णन किया है । कहीं संयोग तो कहीं वियोग, स्वयं ही कहीं उन्होंने नीतिपरक दोहों की भी रचना की है ।

बिहारी ने संयोग पक्ष की अभिव्यक्ति में प्रेम के ऐसे चित्र प्रस्तुत किये हैं जिनमें कुछ चुने हुए पद से एक आध्यात्मिक वातावरण की सृष्टि हो जाती है । जिससे पाठक भावविभोर हो जाता है ।

सच्चा प्रेम प्रिय के बिना जी नहीं सकता । वह प्रिय को एक पल भी छोड़ नहीं सकता । दोनों एक दूसरे के पास जीवन संग बिताना चाहते हैं, प्रिय के साहचर्य में संसार का सब से बड़ा सुख मिलता हैं, इस भाव को कवि ने इतनी गम्भीरता से कहा है कि पाठक भाव-विभोर हो जाये -

'पटु पाँखे भख काँकरैं, सपर परेई संग ।

सुखी परेवा पुहुमि में, एकै तुही विहंग ॥

दूसरी तरफ कवि कहते हैं कि प्रेम में मनुष्य इतना पागल हो जाता है कि बार-बार उस प्रेम को पाना चाहता है । कवि कहते हैं अनुरागी चित्त की गति को कोई समझ नहीं पाता क्यों कि एक बार अगर कृष्ण रंग में रंग गई तो वह बार-बार डुबना चाहती है ।

या अनुरागी चित्त की गति, समुझै नहीं कोई ।

ज्यों-ज्यों बूडे स्याम रंग, त्यों-त्यो उज्ज्वल होई ।

इस प्रकार कहीं-कहीं उन्होंने दोहों में उपदेश भी दिया है कि मूर्ख व्यक्ति चाहे जितनी कोशिश कर ले वह गुनी नहीं बन सकता क्योंकि वह उसकी प्रवृत्ति नहीं छोड़ सकता ।

कहीं कहीं यह भी कहा है कि दुर्जन व्यक्ति कभी नम्रता से बात करे तो उस पर कभी विश्वास मत करना क्योंकि वह समय आने पर साँप की तरह डँस भी सकता है । ऐसे व्यक्ति जितने शान्त या नम्र बने पर दुष्टता नहीं छोड़ते ।

बिहारी के समय सच्चे धर्म के नाम पर बड़ा अन्धविश्वास फैला हुआ था। मनुष्य तिलक, पीले वस्त्र, कमंडल और हाथ में माला रखते पाठ करते थे। विचारी भोली भाली जनता उनपर विश्वास करती, करें भी तो क्या करे । इस प्रकार की भक्ति को देख बिहारी ने ये व्यंग्य किया है पंडित, ब्राह्मण कहाँ हो इस भक्ति से ईश्वर तुमसे दूर होगा न कि पास। सच्चे मन से भगवान की भक्ति ही सच्ची भक्ति है । उसमें आस्था, विश्वास होता है वे कहते हैं -

''जप -माला, छाँपा तिलक, सरै न एकौ कामु ।

मन काँचे नाचै वृथा, साँचै राचै राम ।''

इस प्रकार बिहारी ने अपनी बातों को बड़े कम शब्दों में अधिक से अधिक जनता तक पहुँचाया । इस प्रकार इन्हें गागर में सागर का कवि कहते हैं। उन्होंने मन के भाव को बड़े छोटे शब्दों में वर्णन किया है । इनके दोहे तीर के समान सीधे हृदय पर चोट करते हैं।

नागार्जुन (कालिदास से)

कवि परिचय :

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नागार्जुन को प्रमुख प्रगतिशील रचनाकार के नाम से जाना जाता है। उन्होंने हिन्दी में प्रगतिवादी साहित्य की वृद्धि में विशिष्ट भूमिका ही नहीं निभाई, बल्कि नयी दिशा भी दी है। वे आधुनिक हिन्दी कविता के बेजोड़ व्यंग्यकार हैं। इनके काव्य में समाजिक विचारों की प्रगतिशीलता एवं दलित वर्गों के प्रति व्यक्त आत्मीय संवेदना प्रगतिवादी कवियों में उनका महत्वपूर्ण स्थान नियत कर रही है, क्योंकि स्वयं अभावों को पान कर नागार्जुन ने शोषित समाज की पीड़ाओं का गान किया है। नागार्जुन धरती के अनुठे गायक हैं और अपने स्वर को खेत -खलिहान तथा किसान-मजदूर तक ले जाने के आकाँक्षी है। उनकी कविताओं में प्रगतिशीलता भी हैं और प्रयोगशीलता थी। काव्य और उपन्यास दोनों क्षेत्रों में उन्होंने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की है।

नागार्जुन का जन्म जून १९११ ई को सतलखा पोस्ट मधुबनी जिला दरभंगा (बिहार) में हुआ । उनका जन्म का नाम वैद्यनाथ मिश्र था । इनके पिता का नाम श्री गोकुल मिश्र है । नागार्जुन सन् १९३६ में श्री लंका गए और उन्होंने वहां पर बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली ।

नागार्जुन जनता के कवि हैं, जनता के सुख दुख के गायक हैं । वे अपने स्वर को खेत-खलिहान तथा किसान- मजदूर तक ले जाने के आकाँक्षी हैं । केवल अपने देशवासियों के लिए ही नहीं, मानव मात्र के लिए उन्होनें अपनी कविता में ऐसे भव्य राजपथ निर्मित किये हैं जिनपर चलकर मानवता अपने निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकती है । सहज़ता नागार्जुन के काव्य की विशेषता है । उनकी काव्य भाषा में भी एक किसान की भी साफागोई और निर्भय खरापन है । जो व्यंग्यात्मक काव्य के रूप में चित्रित हुईहै ।

पत्रहीन नग्न गाछ के लिए १९६९ ई० में साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत है ।

नागार्जुन की कविताओं में मुख्यत: मानव के मन की रागात्मक और सौन्दर्यमयी छवियों के अंकित करने वाली कविताएँ हैं, जिनकी संवेदना और कलात्मकता बेजोड़ है । जिनमें जन-सामान्य के मंगलमय भविष्य के प्रति कवि ने आस्था व्यक्त की है । सामाजिक विरूपता राजनैतिक विश्रृंखला और धार्मिक रुढ़ियों पर तीव्र व्यंग्य करने वाली महत्वपूर्ण कविताएँ । तथा उद्‌बोधन परक कविताएँ है । नागार्जुन ने अन्तर के आक्रोश को प्रकट करते हुए नेताओं पर तीव्र व्यंग्य किया है ।

हमें सीख दो शांति और संयत जीवन की अपनी खातिर करो जुगाड़ अपरिमित धन की बेच बेच कर गाँधीजी का नाम

बटोरो बोट
हिलाओ शीश
निपोरो खीस
बैंक बैलंस बढ़ाओ ।

इस प्रकार उनकी वेदना, आक्रोश उनकी कविताओं के माध्यम से उभरती है ।

व्याख्या भाग

प्र.१ कालिदास .... सच-सच बतलाना ।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी काव्यधारा के नार्गाजुन द्वारा रचित' कालिदास से' कविता से ली गई है ।

सन्दर्भ - कवि नागार्जुन अपनी इन पंक्तियों द्वारा महाकवि कालिदास से उनके महाकाव्यों में वर्णित पात्रों के सन्दर्भ में पूछते हैं।

व्याख्या - कवि ज़िन घटनाओं से प्रभावित होता है, वही उनकी रचनाओं में प्रतिबिम्बित होता है । काव्य में वर्णित पात्रों का सुख-दुख भी स्वयं कवि द्वारा भोगा हुआ होता है । अत: कवि नागार्जुन अपनी इन पंक्तियों द्वारा महाकवि कालिदास से उनके महाकाव्यों में वर्णित पात्रों के बारे में पूछते हैं । वे पूछते हैं कि – " महाकवि कालिदास तुम मुझे सच-सच बताओं कि इन्दुमती की मृत्यु से शोक ग्रसित तुम हुए थे या अज हुआ था । सच बतलाना कि अज के माध्यम से व्यक्त की गई वेदना, तुम्हारी अन्तर्वेदना थी या अज की ?

प्र.२. शिवजी की तीसरी ....रति रोई या तु रोये थे ?

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी काव्यधारा के नार्गाजुन द्वारा रचित 'कालिदास से' कविता से ली गई है ।

सन्दर्भ -कवि कालिदास से उनके महाकाव्य में वर्णित पात्रों के सन्दर्भ में पूछते हैं कि इन्दुमती की मृत्यु पर अज रोया था या स्वंय कालिदांस ।

व्याख्या- कवि पूछते हैं कि —" ध्यान मग्न शिवजी का ध्यान -भंग करने के प्रयास से कामदेव का शिवजी के तीसरे नेत्र खुलने पर जो नाश हुआ, उस नेत्र से निकली हुई अग्नि से कामदेव भस्म हो गये । कामदेव को इस प्रकार नष्ट होते देख उनकी पत्नी रति विरह में बहुत रोयी थी । कालिदास ! तुम सच बतलाना क्या वह रति का क्रन्दन तुम्हारा नहीं था । वह विरह वेदना तुम्हारी न थी ? अर्थात् तुम्हें दुःख हुआ न था ।

३. वर्षा ऋतु की ....कालिदास ! सच सच बतलाना ।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी काव्यधारा के नार्गाजुन द्वारा रचित 'कालिदास से' कविता से ली गई है ।

सन्दर्भ - कवि कालिदास से पूछते हैं कि शिवजी द्वारा कामदेव के नाश पर जो उसकी पत्नी रति रोयी थी वह विरह वेदना उसकी तो न थी ।

व्याख्या - कवि पूछते हैं कि आषाढ़ के महीने में वर्षा ऋतु के प्रथम दिन आकाश पर छाये काले बादलों को देख विरही पक्षी का मंन उदास हो जाता है और उसने अपनी प्रियतमा के पास बादल को दूत बनाया और संदेश प्रियतमा तक पहुँचाया है । हे कालिदास, संच कहना वह विरह वेदना तुम्हारी ही तो नहीं थी ? यक्ष के विरह को देख आप स्वयं दुःखी हो पर्वतों की चोटियों पर बादलों के साथ तुम भी तो सोये हुये थे । सच कहना कालिदास यक्ष का करु ण रुदन सचमुच उसका था या आपका ?

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

१. यहाँ कवि कालिदास से प्रश्न क्यों करता है कि इन्दुमती के वियोग में अज रोया था या तुम ?

उत्तर - कवि का कालिदास से प्रश्न करने का यह कारण था कि मनुष्य अपनी ही भावना, वेदना, दुःख को व्यक्त कर सकता है । दूसरे के दुःख को व्यक्त करने में उसे सम्पूर्ण सफलता नहीं मिलती, पर यहाँ अज के दुःख की आन्तरिक अभिव्यक्ति इतनी सुन्दर है कि शायद ही कोई कर पाये । इसलिए कवि कहते हैं कि मुझे विश्वास नहीं होता कालिदास सच कहो क्या अज रोया था या तुम ! कारण अज की आन्तरिक वेदना को बड़े सुन्दर रूप से वर्णन किया है ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्र.१. 'कालिदास से' कविता का भाव स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताओं को उद्घाटित करें ।

उत्तर - 'कालिदास से' कविता का मूल प्रतिपाद्य यह है कि कवि के व्यक्तिगत सामाजिक अनुभव से ही कोई काव्य की रचना करता है । अन्याय, अत्याचार जैसे अमानवीय व्यवहारों के विरुद्ध 'नागार्जुन' जी ने अपनी रचनाएँ की हैं । कवि कहते हैं कि कालिदास की आन्तरिक व्यथा, आत्मा की पीड़ा से ही उन्होंने इन काव्यों में पात्र की रचना की है । इस प्रकार नार्गाजुन ने इस रचना में प्रकृति के साथ मनुष्य का संगम बताया है। इस कविता में नार्गाजुन ने मन की भावना को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है ।

उनकी यह कविता बहुत प्रसिद्ध है । पौराणिक पात्रों के द्वारा यह कविता आधुनिकता पर आधारित है । अज, इन्दुमती, यक्ष, यक्षणी, कामदेव-रति सबका मानवीय गुण का वर्णन किया है । कालिदास ने अपने समय में अनेक ग्रन्थों की रचना की है उनके ग्रन्थों के कुछ अमर ग्रन्थ हैं - (१) रघुवंशम् (२) कुमारसंभव (३) मेघदूतम् आदि का बड़े ही गंभीर रूप से अध्ययन, चिन्तन कर इनकी व्याख्या की है । किस प्रकार प्रिय-प्रेमिका से बिछुड़ जाते हैं तो वह क्या-क्या उपाय कर संदेश भेजते हैं । विरह उन्हें जला देता है । सारी सुख-सम्पति उनके लिये व्यर्थ होती है ।

'रघुवंशम्' कालिदास का महाकाव्य है। उसमें इन्दुमती देवलोक की अप्सरा थी। प्रभु नारद के श्राप से उन्हें इस पृथ्वी लोक पर आना पड़ा। अज से उनका प्रेम हो जाने पर रघुवंश की सृष्टि हुई। मात्र श्राप की अवधि समाप्त हो जाने पर इन्दुमती अपने प्रेमी अज को छोड़कर हमेशा के लिये स्वर्ग चली गयी। उसके विरह में अज चीत्कार करने लगते हैं। बहुत दुःखी होते हैं और अंकत तक उनके वियोग में विरह में उस तरह तड़पते रहे जिस प्रकार मछली बिना जल के तड़पती हैं।

कालिदास ने अपने काव्य में यह भी कहा है कि शंकर जी की पहली पत्नी सती अपने पिता के घर यज्ञ में जाती है, पर अपमानित होने पर वह यज्ञ में कूद कर भस्म हो गई। सती के विरह में शंकर जी इस प्रकार हो गये मानों शरीर से आत्मा अलग हो गई हो। वह उनके विरह में पागल से हो जाते हैं एवं दूसरे विवाह न करने की शपथ खाते है। दूसरी तरफ राक्षसों के अत्याचार से देवलोक चिन्तित थे और उद्धार के लिये शंकर के पुत्र की आवश्यकता थी। हिमालयराज की पुत्री पार्वती शंकर से विवाह करना चाहती है, कामदेव को यह विवाह कार्य सौंपा गया मात्र कामदेव के कारण शंकर जी की समाधि टूट जाती है और वह क्रोधित होकर उसे भस्म कर देते हैं। कामदेव के विरह में उसकी प्रेयसी पत्नी रति विलाप करने लगती है।

यहाँ नागार्जुन कालिदास से कहते हैं कि हे महाकवि, यह क्रन्दन रति का था या तुम्हारा ? यक्ष यक्षणी से जब विरह में दूर हो गये तो यक्ष पर्वत की चोटी पर से मेघों को संदेश भेजने की प्रार्थना करते हैं तो यहाँ नागार्जुन फिर कवि से कहते हैं कि यह क्रन्दन विरह यक्ष का था या वह वेदना क्या तुम्हारी थी। इस प्रकार नागार्जुन ने इस कविता में यक्ष, रति, अज आदि के विलाप, वेदना को सुन कवि से यह प्रश्न किया है कि यह वेदना आपकी तो न थी। तात्पर्य यह कि इस प्रकार किसी दूसरे की विरह भावना इतने सुन्दर और मार्मिक रूप से की हो कि शायद ही कोई कवि कर पाये।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' (ओ मेघ)

कवि परिचय :

मुक्तिबोध का जन्म १३ नवम्बर १९१७ ई. में हुआ था और मृत्यु ११ सितम्बर सन् १९६४ ई० को हुई।

मुक्तिबोध मुख्यतः नई कविता के कवि हैं। उनकी काव्य-सरिता प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि के छोरों का संस्पर्श करती हुई नई कविता की वेगवती धारा में मिल गई है। आधुनिक जीवन मूल्यों की सशक्त और जीवन्त अभिव्यक्ति मुक्तिबोध के काव्य की विशेषता है। उनकी कविता में आधुनिक समाज की विसंगतियों और विपन्नताओं का चित्रण करने के लिए ऐसे विषयों को चुना गया है, जो जीवन के यथार्थ से सम्बन्ध रखते हैं और नितान्त नए हैं। समाज, राजनीति, धर्म, इतिहास, साहित्य आदि सभी विषयों पर इन्होंने कविताएँ लिखी हैं।

मुक्तिबोध की कुछ कविताएँ छोटी और कुछ अत्यधिक लम्बी हैं। 'ब्रह्मराक्षस', 'अंधेरे में', 'चम्बल की घाटी', 'इस चौड़े ऊँचे टीले पर' आदि उनकी लम्बी कविताएँ हैं। मुक्तिबोध को अपने जीवन में बाहर से असफलता ही मिली किन्तु सर्वत्र खोने पर भी उन्होंने जो पाया, वह है गहरा काव्य-मर्म। जिन अनुभूतियों को उन्होंने झेला है और जिनमें लगातार जी कर अपनी अग्निपरीक्षा दी है, उन्होंने उन्हें उस स्थान पर ला खड़ा किया है, जहाँ वे प्रत्येक संघर्षशील देश और उसकी जनता की निधि बन जाते हैं। दुनिया भर के लोग इनकी काव्य-कला से चमत्कृत हो उठे हैं।

मुक्तिबोध अपने कवि-व्यक्तित्व और काव्य व्यक्तित्व को पृथक करने वाले न थे। जिन्दगी के एक-एक संघर्ष और तनाव को वे एक बार जीवन में जीते थे और दुबारा अपनी कविताओं मार्क्सवाद की ओर झुकाव जो अधिक

वैज्ञानिक, और अधिक मूर्त और अधिक तेजस्वी दृष्टिकोण जान पड़ा । इसकी कविता में फैन्टसी, नाट्यतत्व और औपन्यासिक शिल्प का उपयोग है। वस्तुतः मुक्तिबोध की कविता में अनेक स्वर हैं। दहशत, त्रास, खोफ, अकेलापन, साथीपन, आस्था, तड़पन, अकुलाहट, शंका, विश्वास, सादगी, तनाव, टेढ़ापन, टूटना, जुड़ना सभी कुछ इनकी कविताओं में हैं। इस प्रकार आधुनिक कवियों में उनका एक महत्वपूर्ण अध्याय है।

व्याख्या भाग

(१) ओ मेघ ....मौलिक नये-नये कहलाते हैं ।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ गजानन माधव मुक्तिबोध के द्वारा रचित 'ओ मेघ' कविता से ली गई हैं।

संदर्भ - इन पंक्तियों में कवि ने मेघ को कविता का प्रतीक बनाकर रेखांकित किया है ।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि मेघ का पृथ्वी पर आना काफी पुराना है किन्तु हर बार उसे नये मेहमान की तरह स्वागत किया गया है , ठीक उसी प्रकार कविता बड़ी प्राचीन विधा है पर कल्पना को इतने सुन्दर ढंग से कवि वर्णन करता है कि वह कविता सत्य जान पड़ती है और पाठक के हृदय को रसपूर्ण कर देती है और अपनी सार्थकता सिद्ध करती है । कवि ने मेघ को कविता का प्रतीक बना कर प्रस्तुत किया है ।

वे कहते हैं कि जिस-प्रकार मेघ का आना एक प्राचीन प्रक्रिया है उसी प्रकार कविता भी एक प्राचीन है फिर भी दोनों को हर बार नवीन कहा जाता है। मेघ बरस कर धरती को जल से परिपूर्ण कर देता है और अपनी सार्थकता सिद्ध करता है ।

विशेष - यहां मेघ और कविता में सामंजस्य बताया गया है ।

(२) विलीन होकर .... नये-नये तुम कहलाते हो ।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ गजानन माधव मुक्तिबोध के द्वारा रचित 'ओ मेघ' कविता से ली गई है ।

संदर्भ -मेघ-कविता में समानता बतला रहे हैं कि जिस प्रकार कविता आती है फिर विलीन हो जाती है उसी प्रकार मेघ का कार्य बताया है ।

व्याख्या - कवि ने मेघ को कविता का प्रतीक बना कर प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं कि जिस प्रकार मेघ बरसने के बाद विलीन हो जाता है और फिर से बरसने लगता है, उसी प्रकार कविता भी शब्दों में अभिव्यक्त होकर विलीन हो जाती है और पुनः कवि के नवीन भावों के अनुरूप अभिव्यक्त होती है । मेघ धरती के लिये कल्याणकारी होता है और कविता समाज के लिये । मेघ की भाँति कविता भी युगों-युगों से नया रूप धारण करती हुई आ रही है मानव समाज के कल्याण के लिये ।

कवि कहते हैं कि मेघ बरसने के बाद विलीन हो जाता है और फिर ऋतुचक्र आने पर बरसता है । यह प्रक्रिया कवि को नशीली प्रतीत होती है । मेघ का बरसना कल्याणकारी हो धरती के लिये यह हमेशा नया रूप धारण कर आता है और मानव का कल्याण करता है ।

विशेष - यहाँ मेघ, कविता की उपकारिता के बारे में वर्णन किया गया है ।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

प्र-१. मेघ को कविता का प्रतीक क्यों माना गया है ?

उत्तर - मेघ के बरसने से धरती फिर से हरी-भरी हो जाती है । धरती को जल से परिपूर्ण कर देती है उसी प्रकार कविता भी शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त होकर जब श्रोता, पाठक तक पहुँचती है तो वह समाज कल्याण की भावना जागृत करती है । हृदय में रस प्लावित कर देती है ।

प्र.२ 'मेघ ' कविता में कवि का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर - मेघ कविता में कवि का उद्देश्य यही है कि मेघ जिस प्रकार धरती के लिये कल्याणकारी होता है, सूखी धरती को जल से परिपूर्ण कर देता है । उसी प्रकार कविता अपने शब्दों की अभिव्यक्ति कर समाज को प्रगति की ओर अग्रसर करती है। ये दोनों जब भी आते हैं समाज मेघ और कविता का नवीन रूप से स्वागत करता है ।

प्र.३. 'मेघ' खूब अनुभवी एवं पुराने होकर भी नये क्यों कहलाते हैं ?

उत्तर - नियम के अनुसार मेघ हर वर्ष अधिकतर वर्षा ऋतु में आता है । यह सिलसिला सृष्टि के आरम्भ से निरन्तर चल रहा है । इसलिए मेघ को अनुभवी एवं पुराना कहा गया है । परन्तु फिर भी वह हर बार नयी लगती है ।

क्यों कि हर मनुष्य वर्षा के आगमन का इन्तजार करता है । पृथ्वी पर वर्षा के होने से प्रकृति में नयी जान आ जाती है । खेत खलिहान हरे-भरे हो जाते हैं । पानी की समस्या का कई हद तक समाधान हो जाता है । प्रकृति नई दुल्हन की तरह सज जाती है । प्रकृति के इस परिवर्तन एवं प्राणी के आवश्यकताओं की पूर्ति होने से हर ओर खुशहाली का माहौल छा जाता है एवं जीवन में नयेपन की अनुभूति होती है ।

प्र.४. मेघ बार-बार जन्म ग्रहण क्यों करना चाहता है ?

उत्तर - प्रकृति से प्रेरित होकर नियमानुसार मेघ पृथ्वीवासियों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करता है । वह परमात्मा का आदेश मान मानव जाति के लिए प्रेरणा का स्रोत है । नीति के निर्धारित नियमों के अनुसार मेघ हर वर्ष वर्षा ऋतु में नया जन्म ग्रहण करता है तथा धरती की क्षुधा मिटाता है, अतः वह हमेशा नया सा प्रतीत होता है ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्र.१- 'ओ मेघ' कविता में कवि के उद्देश्य पर प्रकाश डालिये ।

उत्तर - मुक्तिबोध आधुनिक काल के कवि हैं । कवि की कविताओं में जीवन का विश्लेषण प्राप्त होता है। उनका झुकाव ऐसी काव्य रचना की ओर था जिसका कथ्य व्यापक हो, जिसमें जीवन के विश्लेषित तथ्यों और उनके संश्लिष्ट निष्कर्षों का चित्रण हो । मुक्तिबोध की चेतना युगीन चिंतन से ऊपर उठकर मानवीयता की पक्षधर रही है । वे शोषक समाज के प्रतिपक्ष में रहे हैं। 'ओ मेघ' कविता उनकी प्रसिद्ध कविता है । इस कविता में कवि ने 'मेघ' को कविता के प्रतीक रूप में माना है । कहा है कि मेघ का बरसना जिस प्रकार कल्याणकारी है उसी प्रकार कविता रचने की प्रक्रिया भी कल्याणकारी है । दोनों को एक दूसरे के सादृश्य रखा है ।

कवि के अनुसार जिस प्रकार एक मेघ जब धरती पर बरसता है तो सम्पूर्ण धरती को जल मग्न कर देता है । सारी धरती हरी-भरी हो जाती है । प्यासों की प्यास बुझ जाती है । यह मेघ एक प्राचीन प्रक्रिया है और हर बार यह धरती पर बरसता है तो नया-नया रूप धारण कर आता हैं ।

कविता भी बहुत प्राचीन है और नवीन कल्पनाओं के कारण हर बार नया रूप धारण कर लेती है । मेघ धरती को जलपूर्ण कर अपनी सार्थकता प्रस्तुत करता है उसी प्रकार कविता कवि के शब्दों में अभिव्यक्त होकर पाठक, श्रोता के हृदय को आनन्दित कर अपनी सार्थकता सिद्ध करती है ।

कवि कहते हैं कि जिस प्रकार मेघ बरसकर विलीन हो जाता है किंतु ऋतु के आने पर पुनः बरसने लगता है । यह प्रक्रिया कवि को नशीली जान पड़ती है । कविता भी अभिव्यक्त हो विलीन हो जाती है और पुनः कवि के नए अनुभवों के अनुरूप अभिव्यक्त होती है । मेघ का बरसना धरती के लिये कल्याणकारी है । उसी प्रकार कविता मानव समाज के लिये हितकर एवं कल्याणकारी है । मेघ की तरह कविता युगों -युगों से नया रस धारण करती आ रही है ।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

जागो फिर एक बार

कवि परिचय : श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन्१८४७ की बसन्त पंचमी को बंगाल के महिषादल राज्य के मेदनीपुर गाँव में हुआ । इनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी थे। पारिवारिक कलह के कारण निराला जी रुद्र, उदण्ड और उच्छृंखल बन गये। उन्हें विरोध और प्रहार सहने का अभ्यास पड़ गया। स्वभाव से चंचल होने के कारण निराला को हनुमान का चरित्र बड़ा पसन्द आया। वे राम और हनुमान के उपासक बन गये। इन सब परिस्थितियों का प्रभाव आगे चलकर कवि के काव्य पर पड़ा और वे छायावाद के एक महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ बने। इनकी मृत्यु १५ अक्टूबर सन् १९६१ ई. में हुई।

निराला की काव्य-कला का आरम्भ सन् १९१६ में लिखित 'जूही की कली ' से हुआ । प्रथम संस्करण की महत्वपूर्ण कविताएँ सन् १९३० में प्रकाशित होने वाले 'परिमल' संग्रह में ली गई। इस संग्रह की महत्वपूर्ण कविताएँ- बादलराग, जूही की कली, जागो फिर एक बार, महाराज शिवाजी का पत्र, यमुना के प्रति, तुम और मैं आदि हैं। विकास के इस प्रथम चरण में निराला के काव्य की सर्वप्रमुख विशेषता उसकी स्वच्छन्दता है। छायावादी कवियों में निराला जीवन के सबसे निकट थे। जीवन अपनी संपूर्ण विवधता के साथ ही नहीं पूरी गहराई के साथ उसके काव्य में चित्रित हुआ है। ओज और करुणा, विनय और विद्रोह, रोमांस और भक्ति, क्लासिक गम्भीरता और हास्य-व्यंग्य सभी को वे समान शक्ति से संभालते दिखाई देते हैं। वे एक साथ छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, राष्ट्रवादी, मानवतावादी और ब्रह्मवादी भी हैं। वे मुक्त छन्द के प्रर्वत्तक हैं। भाव, विचार, कल्पना और कला के रक्षेत्र में विरोधी तत्वों के अपूर्ण सामंजस्य का दूसरा नाम है- निराला। ऐसा कवि जिसने व्यक्तिगत एवं साहित्यिक जीवन में संघर्ष ही जीवन है का मूल मंत्र सीखा हो ऐसे ही कवि थे - निराला ।

व्याख्या-भाग

(१) जागो फिर एक बार .... खोलती है द्वार ।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'निराला' जी द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' कविता से ली गई हैं। यहाँ कवि नवजागरण का संदेश दे रहे हैं ।

सन्दर्भ - इन पंक्तियों के माध्यम से कवि भारत वासियों को वासना से जागने का संदेश देता है ।

व्याख्या - कवि भारतवासियों को वासना में लिप्त देख उन्हें जगा रहे हैं। उन्हें जागरण का संदेश देते हैं। भारतवासी मोह-माया के बन्धन में फंसे हुए हैं, उन्हें किसी भी वस्तु की सुध नहीं है । वे उन्हीं में लिप्त हैं। उन्हें इस घोर निद्रा से जगाने का प्रयास करते हुये कवि कहते हैं - हे देशवासियों जागो एक बार तो जागो । तारे भी तुम्हें जगाने में हार गए हैं। सूरज की नवीन किरणें तुम्हारा स्वागत कर रही है । एक बार जाग जाओ ।

विशेष - यहाँ कवि सोई जनता की आत्मा को जागृत करना चाहता है एवं भौतिक, पार्थिव सुख से दूर रह वासना से दूर रहने को कहता है ।

(२) आँखें अलियों सी .... बन्द हो रहा गुंजार जागो फिर एक बार ।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'निराला' जी द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' कविता से ली गई है । यहाँ कवि नवजागरण का संदेश दे रहे हैं ।

सन्दर्भ - यहाँ कवि कहते हैं कि तारे तुम्हें जगाते जगाते थक गये, कम से कम सूर्य की किरणों से तो जागो ।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि तुम्हारी आँखें भौंरों (भवँरे) के समान चारों तरफ मधु रूपी विलास राहों में फँसी हुई है । तुम सब ने आँखें बन्द कर ली हैं और इस विलास-व्यसन छोटी खुशी को देख तुम भी इस विलासी राह में डूब गए हो । उसी प्रकार जिस प्रकार भौंरा मधुपान कर, मस्त रहता है और कमल की कलियों में सो जाता है, उसी प्रकार तुम भी सो गए हो। अब भंवर का गुंजन बन्द हो गया है । तुम अपनी इस विलास में डूबी हुई आँखों को खोलो । अब तो जाग जाओ ।

विशेष - इन पंक्तियों में तारे और सूर्य की किरण के माध्यम से मानव जागरण आ गया है और कर्मठ बनने को कहा है ।

(३) **अस्ताचल ढले रवि.............. जागो फिर एक बार।**

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'निराला' जी द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' कविता से ली गई हैं। यहाँ कवि नवजागरण का संदेश दे रहे हैं ।

सन्दर्भ - कवि कहते हैं जैसे भँवरा मधुपान कर कमल के फूल में जाकर सो जाता है उसी प्रकार देशवासी भी विलासी निद्रा में सो गये हैं । उन्हें निद्रा से जागने का संदेश देते हैं ।

व्याख्या - कवि कहते हैं – अस्ताचल पर्वत पर सूर्य अस्त हो गया है। इस चाँदनी रात में रजनीगंधा खिल उठा है । चकोर अपने प्रिय चन्द्रमा को एक टक देख रहा है और भावुकतापूर्ण मौन भाषा से उसे घेर रहा है । ओस की बूँदों के भार से फूल झुक गये हैं। कलियों में कोमल यौवन का उभार भी उठ गया है । अब भी जागो एक बार ।

(४) **सहृदय समीर जैसे .... जागो फिर एक बार।**

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'निराला' जी द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' कविता से ली गई है । यहाँ कवि नवजागरण का संदेश दे रहे हैं ।

सन्दर्भ - यहाँ प्रकृति के माध्यम से देशवासी में जागरण की लहर जाग्रत करना चाहते हैं। क़र्मशील होने को कहते हैं ।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि अस्ताचल पर्वत पर सूर्य अस्त हो गया है । चाँदनी रात में चकोर अपने प्रिय चाँद को देख रहा है और भावों से परिपूर्ण मौन भाषा से कुछ कह रहा है। ओस की बूँदों के भार से थक गये है और कलियों में यौवन का उभार उठ गया अब तो जाग जाओ ।

फिर वे कहते हैं कि शीतल पवन हमें शान्ति पहुँचा हमारे दुःखों को दूर करता है और आँखों से आँसू को पोछती है। नींद से थकी हुई बातों के आवेश में व्याकुल हृदय पर से वस्त्र हटा दो जिससे नींद सुखमय हो। कल्पना से कोमल सीधे-टेढे बालों के समूह को आलस्य के कारण पीठ पर फैल जाने दो। तन-मन थक जाय और कोमल सुगन्धित पवन में बुद्धि लीन हो जाय । मन में एकता आ जाये । अब एक बार जाग जाओ, कर्मशील हो जाओ।

(५) उगे अरूणाचल में रवि .... जागो फिर एक बार।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'निराला' जी द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' कविता से ली गई है । यहाँ कवि नवजागरण का संदेश दे रहे हैं।

सन्दर्भ -यहाँ कवि ने संसार की प्रकृति को परिवर्त्तनशील कहा है एवं मानव जाति पर व्यंग्य करते कहते हैं कि तुममें अब तक परिवर्त्तन नहीं हुआ । अब तो जाग जाओ ।

व्याख्या - कवि भारतवासियों से कहते हैं शीतल पवन हमारे दुःख दूर करती है। निद्रा से थकी बाहों में हृदय को वस्त्र मुक्त कर दो ताकि निद्रा सुखपूर्ण हो । आलस्य के कारण कोमल केशों के समूह को पीठ पर फैलने दो। दोनों आत्माओं में एकता हो जाने दो और तुम जाग जाओ ।

कवि कहते हैं पूर्व में स्थित अरुणाचल पर्वत पर सूर्य उदय हो गया है । सरस्वती के प्रति प्रेम कवि के कंठ में परिवर्त्तन हो रहा है। कभी दिन, कभी रात, ऐसे ही संसार के कितने दिन, पखवाड़ा, मास एवं वर्ष बीत गए हैं अब एक बार जाग जाओ ।

विशेष - सोई आत्मा को जगाने के लिये यहाँ कवि कर्मशील होने को कह रहे हैं।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

(१) कवि ने प्रातः कालीन सूर्य किरणों के साथ नवीन जागरण की तुलना क्यों की है ?

उत्तर - कवि का सूर्य की नवीन किरणों के साथ नवीन जागरण की तुलना का कारण यह था जिस प्रकार सूर्य के उदय होते ही उसमें से नवीन किरणें निकलती हैं और चारों तरफ से अंधेरे को वह पल-भर में दूर कर देती है । सम्पूर्ण पृथ्वी के वासी को कर्मशील होने की प्रेरणा देती है क्योंकि वह यह संदेश देना चाहती है कि रात ढल चुकी नवीन किरणें भारतवासी के लिये खुल रही है । पूरी प्रकृति में जागरण फैल गया है । इस स्थिति में भारतवासी का सोते रहना ठीक नहीं । नवीन जागरण सृष्टि करने के लिये सूर्य की नवीन किरणों के साथ तुलना की है ।

(२) कवि भौंरे और कमल के फूल का उदाहरण देकर क्या दर्शाना चाहते हैं।

उत्तर - कवि कहते हैं जिस प्रकार भौंरे मधुपान कर कमल के फूल में ही सो जाते हैं। उन्हें और कोई चिन्ता नहीं होती वह अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं। उसी प्रकार आज मनुष्य, विषय वासना में लिप्त हो, अपने कर्तव्यों को भूल गया है। इसलिये वह यह कहना चाहते हैं कि भंवरे अपनी नींद से जाग गये हैं। अब तो तुम कर्मशील हो जाओ जागो।

(३) मानव की मोहनिद्रा नहीं टूटने पर कवि चिन्तित क्यों है ?

उत्तर - कवि देशवासियों की मोहनिद्रा को देख आश्चर्यचकित हो रहे हैं। उन्हें चिन्ता हो रही हैं कारण सूर्य उदय होते ही प्रकृति में जागरण शुरू हो जाता है। दिन-रात फिर रात-दिन का चक्र शुरू हो आता है। प्रकृति हर पल करवटें बदलती है। २४ घंटे में २४ बार परिवर्तित होती है और नित्य नवीन परिवर्त्तन होते रहते हैं। फिर भी मुझे चिन्ता है कि भगवान की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि मानव में कोई परिवर्त्तन नहीं। अभी तक नहीं जागे, अब भी मोहनिद्रा में सोये हैं। उन्हें अब जाग जाना चाहिये।

प्र.४. भारतवासियों की चेतना पर पड़े हुए निष्क्रियता के दूरीकरण के लिए कवि किस प्रकार की प्रेरणा दे रहे हैं ?

उत्तर - कवि भारतवासियों को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार शीतल मन्द पवन के बहने से मन प्रफुल्लित हो उठता है, उसी प्रकार जो तुम भी सोते रहने से आलसी बन चुके हो, अब तुम अपनी शिथिल भुजाओं को स्वप्निल आवेश में भर अपने व्याकुल हृदय से परदे को हटा दो। इसी प्रकार तुम अपनी निष्क्रियता के भार को हटा दो और अपनी चेतना को जागृत करो।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्र १. निराला की 'जागो फिर एक बार' कविता में कवि का उद्देश्य प्रतिपादित कीजिए ?

उत्तर - निराला जी आधुनिक हिन्दी कवियों में अपना मुख्य स्थान रखते हैं। सच पूछा जाय तो निराला से बढ़कर स्वच्छंदवादी कवि हिन्दी में

कोई नहीं है। निराला रहस्यवादी, आध्यात्मिक, देशप्रेमी कवि हैं। कवि में देश प्रेम की भावना की कमी नहीं है । इनकी प्रसिद्ध कविता 'जागो फिर एक बार' में इनका देश के प्रति प्रेम कूट-कूट कर भरा है -

जागो फिर एक बार
सिंहनी की गोद से ।
छीनता रे शिशु कौन ?
मौन भी क्या रहती वह,
रहते प्राण? रे अजान

निराला जी का व्यक्तित्व विद्रोही और क्रांतिकारी तत्वों से निर्मित हुआ है। उनका मानना है कि समाज में व्याप्त अराजकता के प्रति कवि का यह यथार्थ दृष्टिकोण है । आज मानवीय सम्बन्ध, मानवीय मूल्य पहले की अपेक्षा अधिक जटिल, संकुल और अस्त-व्यस्त है ।

निराला ने 'जागो फिर एक बार ' कविता में देश के प्रति अपने प्रेम को प्रस्तुत किया है। उन्होंने हमेशा की तरह यहाँ भी प्रकृति का वर्णन उपदेशिका के रूप में किया है । जिस प्रकार माँ बेटे का रिश्ता सबसे महान होता है उसी प्रकार प्रकृति से मानव का । उसी की गोद में वह खेलता, कुदता और अपनी समस्त प्रेरणायें उसकी अन्दर की जिज्ञासाएँ प्रकृति से ही जन्म लेती है।

निराला जी ने इस कविता में प्रकृति के बाह्य रूप के साथ अन्त रूप का भी वर्णन किया है । उन्हेंने मानव में नवीन सृष्टि करने के लिये प्रकृति का सहारा लिया क्यों कि यह कविता जिस समय लिखी गई उस समय देश की सामाजिक, राजनैतिक अवस्था सोचनीय थी। स्वतंत्रता आन्दोलन की लहर चारों तरफ फैल रही थी। भारतवासी में देशप्रेम की कमी देख उनका मन चीत्कार करने लगा और उन्होंने अपनी कविता से लोगों को जागने को कहा, उठने को कहा, कर्मशील बनने को कहा है।

सोये मानव को जगाते हुए कहते हैं कि तुम्हें उठा-उठा कर तारे भी हार गये किन्तु तुम न उठे । अब सूर्य की नवीन किरणें तुम्हें उठा रही है, देशवासी अब तो जाग जाओ -

''जागो फिर एक बार
प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें
अरूण पंख तरु ण खोलती द्वार
जागो फिर एक बार।

कवि जगाने के लिये भौंरों और कमल के फूल का भी सहारा लेते है। वह कहते हैं कि जिस प्रकार मधुपान करके भंवर फूल में ही सो गये है । वह विषयासक होकर अपने कृत्य से विमुख हो गये हैं। कवि का संदेश है कि मोह-माया, विषय-वासना पूर्ण निद्रा से तुम जाग जाओ।

मानव को कर्मशील और उनमें देशप्रेम की भावना जगाने केलिये कवि ने प्रकृति को बड़े सुन्दर ढंग से वर्णन किया है । कवि सूर्यास्त होने के बाद रात्रि चाँदनी में चकोरां की चन्द्रमा के प्रति प्रेम में, ओस की बूँदों के भार से झुकती हुई कलियों में आैर इतना ही नहीं यहाँ तक कि मोहक उन्माद से पूर्ण कवियों के हृदय में यौवन का उभार का वर्णन कर कवि कहते हैं कि इन सब में प्रेम ही प्रेम भरा है।

हे भारतवासी इस दृश्य को देखने एक बार तो उठ जाओ। जागो एक बार।

''अस्ताचल ढले रवि,
शशि छवि विभावरी में
चित्रित हुई है देख
यामिनीगंधा जगी,
आशाओं भरी मौन भाषा बहुभाव मयी
घेरा रहा है चन्द्र को चाव से
शिशिर भार व्याकुल
खुले फूल झुके हुए
आया कलियों में मधुर

मद उर यौवन भार
जागो फिर एक बार।

कवि भारतवासी को बार-बार जगाते हुए कहते हैं कि मोहनिद्रा से जागो। आलस्य का त्याग कर देश भक्ति में लीन हो जाओ, मैं कब से एकता का संदेश दे रहा हूँ ।

भारतवासी को निर्जीव सा देख कवि दुःखी हो कहते हैं यह प्रकृति भी हर पल परिवर्तित होती है। सुख-दुख , दिन-रात, प्रकृति का माया पट प्रत्येक पट परिवर्तित हो रहा हैं किन्तु तुम अपने कर्तव्य से मुख मोड़ रहे हो। क्या कर्म से पीछे भाग रहे हैं । इस प्रकार प्रकृति के सुन्दर वातरवरण के माध्यम से कवि देश मोहक निद्रा, आलस्य में सोई जनता को जगाना चाहते हैं और उनके हृदय में देशभक्ति, देशप्रेम के भाव जागृत करना चाहते हैं ।

जयशंकर प्रसाद 'किरण'

कवि परिचय :

काशी की पवित्र नगरी में श्री जयशंकर प्रसाद का जन्म माघ-शुक्ल दशमी सम्वत १९४६ को एक सुप्रसिद्ध वैध घराने में हुआ था। इनके पितामह स्वर्गीय शिवरत्न साहु 'सुँधनी साहु' के नाम से प्रसिद्ध थे। शिवरत्न साहु के पुत्र श्री देवीप्रसाद इनके पिता थे तथा शम्भूरत्न बड़े भाई थे। सूर्ती, तम्बाकू और सुँधनी के प्रसिद्ध व्यापारी होते हुए भी उनके पिता काव्य-प्रेमी थे और विद्वानों तथा गुणी-जनों का आदर करना जानते थे। वे धार्मिक संस्कार वाले लोग थे और शैव मत को मानते थे। पिता की मृत्यु के कारण प्रसाद जी को सातवीं कक्षा में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी। घर पर ही इन्होंने हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी का अध्ययन किया। पन्द्रह साल की अवस्था में इनके माता का स्वर्गवास हो गया और सत्रह वर्ष की अवस्था में बड़े भाई ने भी संसार त्याग दिया। परिवार -पालन का सारा उत्तरदायित्व इन्हीं के ऊपर आ पड़ा। भाई के उदार-स्वभाव के कारण प्रसाद जी के परिवार पर ऋण भार हो गया था। अपने व्यापार कुशलता तथा कठिन परिश्रम के कारण प्रसाद जी ऋण मुक्त होकर शंति का जीवन व्यति करने लगे।

इतना अस्त-व्यस्त रहते हुए भी प्रसाद जी साहित्य प्रेम और साहित्य सेवा से विमुख नहीं हुए। इनके घर पर कवियों और विद्वानों का ताँता लगा रहता था। जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी साहित्य की महान् विभूति थे। साथ ही घर-परिवार और पैतृक व्यवसाय को इन्होंने जीवनभर कुशलता के साथ निभाया।

प्रसाद जी प्रारम्भ में ब्रजभाषा में ही कविता करते थे। 'चित्रधार' इनकी ब्रजभाषा की कविताओं का संग्रह है। 'चित्रधार' में कवि प्रकृति के रमणीय दृश्यों पर मुग्ध होता है और प्रश्न भी करता है कि वैसा सौन्दर्य कहाँ से आया ? इस के बाद की रचनाऐं खड़ी बोली में है। कवि की आगे की रचना 'प्रेम-

पथिक' है। इसमें कवि की प्रकृति-प्रेम सम्बन्धी धारणा गम्भीरता प्राप्त करती है। छायावादी कविता में 'झरना' प्रेम प्रधान काव्य है। कला की दृष्टि से 'झरना' की सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ 'किरण', 'बिखरा हुआ प्रेम' और 'विषाद' हैं। 'आँसू' कवि की अमर रचना है। आँसू में कवि ने अपने विचारों को कुछ दार्शनिकता का आवरण पहनाया। उनकी अन्यतम रचना 'कामायनी' अत्यंत प्रसिद्ध हुई। इसमें इन्होंने मानवीय प्रकृति के मूल मनोभावों को बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से पहचान कर संग्रह किया गया है।

प्रसाद जी कवि के पश्चात नाटककार भी हैं। इनके प्रसिद्ध नाटक स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, चन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, बिशाख, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री और एक घूँट है। इनके नाटकों में भारत के प्राचीन गौरव की झाँकी स्पष्ट -रुप से दिखाई है।

''काव्य और कला'' सम्बन्धी प्रसाद के निबंध हमारे साहित्य के अनमोल रत्न है। विक्रम सम्वत १९९४ का कार्तिक शुक्ल देवोत्थान एकादशी को ४८ वर्ष की अल्पवायु में भारतीय साहित्य का यह आकाशदीप सदा के लिए बुझ गया।

व्याख्या-भाग

(१) किरण तुम क्यों .... उड़ाती हो परमाणु पराग ॥१॥

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित किरण नामक कविता से ली गई। प्रसाद जी के काव्य में प्रेम-तत्व की व्यंजना प्रमुख रूप में पाई जाती है।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने किरण के माध्यम से उस अनन्त अज्ञात सत्ता के बारे में जानना चाहा है।

व्याख्या- कवि इन पंक्तियों में किरण से प्रश्न करते हुए उससे पूछते हैं कि हे किरण, आज तुम बिखरी हुई क्यों हो। तुम आज किसके प्रेम में दिवानी हो कारण तुम्हारी सुनहरी किरणे, किरण नहीं प्रतीत हो रही वह किसी के प्रेम में रंग गयी है और किसके प्रति अनुराग(प्रेमभाव) के कारण वह प्रेम की किरण धूलि उड़ती फिर रही है। तो हे किरण, जरा मुझे यह बताओ कि तुम ये सब किसके लिये कर रही हो ? वह कौन सी शक्ति है जिसके कारण तुम स्वर्ण होने

पर भी बिखर कर उस प्रेम की अभिव्यक्ति दे रही है । इन सभी प्रश्न के उत्तर किरण से कवि पाना चाहते हैं।

विशेष -यहाँ किरण कविता में अज्ञात सत्ता के बारे में बताया गया है।

(२) धरा पर झुकी ...... वेदना -दूती सी तुम कौन ?

प्रसंग -

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'किरण' नामक कविता से ली गई हैं। प्रसाद जी के काव्य में प्रेम-तत्व की व्यंजना प्रमुख रूप में पाई जाती है।

सन्दर्भ - यहाँ कवि ने किरण के माध्यम से उस अज्ञातसत्ता के बारे में जानना चाहा है जिसका प्रतिनिधित्व किरण कर रही है।

व्याख्या - कवि कहते हैं- हे किरण तुम पृथ्वी पर अज्ञात संसार की करूण प्रार्थना के समान तुम किसकी वेदना का मधुर गान के अपने प्रतिनिधित्व कर रही हो। किस अज्ञात विश्व की करु ण वेदना या विकल वेदना के दूत के समान तुम कौन हो ? ऐसा लगता है कि वेदनामय लोक से आई परन्तु यह किसी प्रिय के कारण ही हो अर्थात वह प्रिय कौन है? वह अज्ञातसत्ता कौन है।

(३) अरुण शिशु .... उषा के अंचल में अश्रांत।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'किरण' नामक कविता से ली गई हैं। प्रसाद जी के काव्य में प्रेम-तत्व की व्यंजना प्रमुख रूप में पाई जाती है।

सन्दर्भ - यहाँ कवि ने किरण के साथ प्रकृति के अन्य तत्वों की भी अभिव्यक्ति की है।

व्याख्या- यहाँ कवि कविता 'किरण' में किरण के सूर्य के साथ प्रकृति के अन्य उपादानों को लेकर अपने भावों को अभिव्यक्त करते है। कवि कहते हैं कि प्रात:कालीन किरण के साथ सूर्य का सुनहरा सम्बंध है। वे कहते हैं कि तुम कौन हो जो सूर्य के उदय होते ही ऊपर नाच उठती हो पूरा वातावरण रंगमय कर देती हो। तुम्हारी इस नृत्य प्रसन्नता को देख ऐसा लगता है जैसे तुम सूर्य के ऊपर लह लहरा रही हो। ऊषा सुदरी के आँचल में घुंघराले लट के समान तुम कौन हो ।

(४) भला उस .... कौन देता है सम पर ताल ?

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'किरण' नामक कविता से ली गई है। प्रसाद जी के काव्य में प्रेम-तत्व की व्यंजना प्रमुख रूप में पाई जाती है।

सन्दर्भ - यहाँ किरण से कवि प्रश्न करते हैं कि तुम किस अज्ञात शक्ति को देख नृत्यमय हो रही है।

व्याख्या- इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि हे किरण ! मैं जानता हूँ भला तुम उस भोले मुख को छोड़ और किसी का मस्तक क्यों चूमोगी। फिर इस जैसी प्रतिभा और किसी में कहाँ। तुम्हारा नृत्य कितना ही हृदयस्पर्शी है पर तुम मुझे यह बताओ कि यह सब किसके लिये। कौन तुम्हारे नृत्य पर ताल देता है। बताओ वह अज्ञात शक्ति कौन हैं ?

(५) काकनद मधु धारा..... उठा कर सुन्दर सरस हिलोर ।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'किरण' नामक कविता से ली गई हैं। प्रसाद जी के काव्य में प्रेम-तत्व की व्यंजना प्रमुख रूप में पाई जाती है।

सन्दर्भ - यहाँ किरण को एक अध्यात्मिकता के रूप में ग्रहण किया है।

व्याख्या- कवि कहते हैं– हे किरण ! सूत्र की तरह पृथ्वी और स्वर्ग को जोड़ने वाली तुम कौन हो ? तुम यह सम्बन्ध पृथ्वी, स्वर्ग के बीच क्यों बना रही हो? क्या सम्बन्ध जोड़ना चाहती हो। क्या तुम्हारा यह लक्ष्य है कि भौतिकता से मानव के मन को हरना, उसे विषय-वासना से मुक्ति प्रदान करना और आध्यात्मिकता का प्रचार करना चाहती हो। शायद तुम्हारे अस्तित्व के कारण असाध्य साधन हो सकता है।

(६) सुदिन मणि-वलय .... किसे दिखलाती प्रेम-निकेत।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'करण' नामक कविता से ली गई हैं। प्रसाद जी के काव्य में प्रेम-तत्व की व्यंजना प्रमुख रूप में पाई जाती है।

सन्दर्भ - कवि किरण से प्रशन करते हैं कि तुम किसे अपने प्रेम में अभिभूत कर रही हो।

व्याख्या – हे किरणं तुम विभूषित उषा सुन्दरी के हाथ का संकेत करती हुई तुम किसे अपना प्रेम दिखा रही हो। वह कौन हैं जिसे तुम अपने में लीन करना चाहती हो। किसके कारण तुम यह सब कर रही हो। वह अज्ञात शक्ति कौन है।

(७) **चपल ठहरो ..... जगे फिर सोया वहाँ वसंत ।**

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'किरण' नामक कविता से ली गई हैं। प्रसाद जी के काव्य में प्रेम-तत्व की व्यंजना प्रमुख रूप में पाई जाती है।

सन्दर्भ – यहाँ कवि किरण को विश्राम करने के लिये कहते हैं।

व्याख्या- कवि कहते हैं कि हे चपल किरण जरा ठहर कुछ समय विश्राम कर लो। तुमने इतने दूर तक यात्रा की है तुम थक गई होगी। तुम काफी लम्बा मार्ग तय कर चुकी हो। क्या तुम उस शून्य में यात्रा- करते-करते थककर श्रान्त नहीं हो गई हो ? ठहरो कुछ समय विश्राम कर लो और आराम करने के समय पुष्प, मंदिर के द्वारों को खोल दो ताकि जो वसन्त सोया हुआ है।वह फिर से जाग जाए और वसन्त के उठते ही सारी प्रकृति, संसार में सुगन्धिमय परागमय वातावरण की सृष्टि हो ।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

प्र १. कवि किरण से प्रश्न कर रहे हैं तुम किसे प्रेम कर रही हो ?

उत्तर- कवि का किरण से प्रेम के बारे में प्रश्न करने का कारण है कि किरण जब निकलती है तो चारों तरफ अपनी रोशनी को बिखेर सबको अपने प्रति आकर्षित करती है। तब ऐसा लगता है कि किरण सिर्फ किरण नहीं, वह भी मनुष्य की तरह किसी के प्रेम में खोई है, पर कौन है अज्ञात सत्ता, उसकी पहचान नहीं है। क्या कवि यही प्रश्न करते हैं कि तुम कौन हो ?

प्र २. किरण के अस्तित्व के बारे में कवि क्या प्रश्न करते हैं ?

उत्तर- प्रातःकालीन किरण का दृश्य कुछ अलग प्रतीत होता है । वह ऐसी लगती है मानो सूर्य के स्वागत में किरण सूर्य के मुख के चारों तरफ प्रेममय बिखर गई हो। इसलिये कवि हकीकत में किरण का यथार्थ क्या है यह जानना

चाहते हैं कि तुम कौन हो, जो सूर्य के स्वागत के लिये नृत्यरता हो? क्या है तुम्हारा अस्तित्व, क्या तुम्हारी पहचान है ।

प्र ३. कवि किरण को विश्राम करने को क्यों कहते हैं ?

उत्तर - कवि कहते हैं कि हे किरण ! तुम बहुत-लम्बा रास्ता तय कर आई हो, फिर भी तुम्हारे चेहरे पर रौनक है, प्रसन्नता है । साधारण मनुष्य अत्यधिक चलने पर थक जाता है पर क्या तुम नहीं थकी। कवि किरण को चपल कह सम्बोधित करते हुये कहते हैं कि तुम अनन्त पथ यात्रा तय कर चुकी हो। अनन्त पथ पर चलते-चलते क्या तुम क्लांत नहीं हो गई । इसलिये थोड़ा ठहर जाओ।

प्र.४. प्रेम ही वेदना का कारण हो सकता है ? कवि को ऐसा क्यों लगता है ?

उत्तर - कवि कहते हैं कि प्रेम के पीछे वेदना ही छुपी रहती है । क्यों कि वेदना से मौन छा जाता है । किरण के माध्यम से इस बात की पुष्टि की गई है । कवि कहता है कि जिस प्रकार किरण धरती पर झुकी हुई होती है तो ऐसा लगता है कि वह प्रार्थना कर रही हो । किसी बासुँरी द्वारा मधुर ध्वनि निकाल सकती है, लेकिन फिर भी मौन रहती है । किरण उस वेदनामयी अज्ञात संसार की परेशान दुति के समान विखर जाना चाहती है और बताना चाहती है कि वह प्रेम के कारण बिखर गई है । और यह बिखराव वेदना का ही रुप है ।

प्र.५. किरण के अस्तित्व के बारे में कवि क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर - कवि किरण से प्रश्न करते हैं कि – हे किरण ! तुम कौन हो ? जो सूर्य के स्वागत में उसके उदय होने पर मानों कोमल मुख पर विलास के साथ नाचती हो । तुम्हारा उसके साथ क्या संबन्ध है । घुंघराले वालों वाली उषा सुन्दरी के आँचल में तुम घुंघराले लटों वाली कौन हो ? आखिर ये रहस्य क्या है और क्या तुम मुझे अपने अस्तित्व का ज्ञान करा सकती हो ।

प्र.६. अन्त में कवि किरण से क्या निवेदन करते हैं ?

उत्तर - कवि किरण को अनन्त पथ की यात्री कहते हुए संबोधित करते हैं । वे कहते हैं कि हे चंचल किरण मनुष्य अधिक चलने पर थक जाता है

उसी प्रकार तुम भी भ्रमण करके थक गई होगी । अब तुम्हे विश्राम की आवश्यकता है । विश्राम करते समय फूल का दरवाजा खोलना, जहाँ पर वसंत सोया हुआ है उसके जागने पर चारों ओर बहार आ जाएगी । हे किरण क्या तुम सारे ब्रह्माण्ड की यात्रा करके शान्त नहीं हुई । ठहरो और थोड़ा विश्राम कर लो ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्र १. प्रसाद जी की 'किरण' कविता के माध्यम से प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन करो ? अथवा

प्रसाद जी प्रकृति प्रेमी कवि हैं, 'किरण' कविता के द्वारा स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर - प्रसाद जी हिन्दी में छायावाद और रहस्यवाद के प्रर्वत्तकों में से एक हैं। इन्होंने अनेक प्रकार की कविता लिखी। इन्हें मुख्य रूप से प्रेम कवि कहते हैं। इनके काव्य में तीन प्रेम की स्थितियाँ है। (१) व्यक्तिगत एवं ईश्वरोन्मुख (२) प्रकृति प्रेम (३) संस्कृति और राष्ट्रप्रेम। इनकी प्रेम की गति लौकिक से अलौकिक की ओर है। इनकी कविता में प्रकृति की निराली छटा विपुल मात्रा में प्राप्य है। इनकी प्रत्येक काव्य के अध्ययन में भी गम्भीरता एवं प्रौढ़ता है ।

प्रसाद मानव हृदय के कवि थे। प्रकृति को भी उन्होंने मानवीय व्यापारों में रंगा हुआ देखा है। उन्होंने अपने साथ की प्रमुख प्रवृत्तियों को ठुकरा कर प्रकृति के नारी के रूप में एवं नारी सौन्दर्य का चित्रण नवीन रूप से किया।

प्रसाद जी का लक्ष्य है प्रकृति सौन्दर्य का चित्रण इस रूप से करना कि पाठक उसमें भावविभोर हो जाये। इनके काव्य में प्रकृति के अनेक मनोमुग्धकारी चित्र उपलब्ध हैं। इनके सौन्दर्य चित्रण में स्थूलता की अपेक्षा सूक्ष्मता का स्थान अधिक है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने एक किरण के रूप सौन्दर्य का वर्णन बड़े ही मानवीय ढंग से किया है। वह आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि आज ये किरणें बिखरी हुई क्यों है। उन्होंने प्रकृति के रूप में नारी का वर्णन किया है ऐसा लग

रहा है कि नारी प्रेम में मुग्ध हो मस्त होकर किरण के रूप में पुष्पों के गुच्छों के समान बिखरी हुई है। प्रिय से मिलने के लिये वह सुध-बुध खो बैठी है। इस कारण शायद किरण किसी के रंग में रंगी होने के कारण यह पराग धूलि उड़ाती फिर रही है।

जिस प्रकार प्रिय के आगमन में नारी चंचल हो, उसके स्वागत में कार्य करती है। उसी प्रकार किरण प्रातः काल सूर्य उदय होने पर अपने को सूर्य के रूप में सजा कर सूर्यागमन के साथ नृत्य प्रदर्शित करती है। इसलिये कवि कहते हैं कि हे किरण, तुम्हारा यह नृत्य सूर्य को देख सूर्य से सम्बन्ध स्थापित कर रहा है। फिर कवि कहते हैं कि तुम कौन हो, जिसका नृत्य घुंघराले केशोंवाली इस उषा सुन्दरी के आंचल में घुंघराले केश के समान हैं। इस प्रकार प्रसाद ने किरण को प्रकृति को बड़े ही सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है।

"अरुण शिशु मुख पर सविलास,
सुनहली लट घुंघराली कांत,
नाचती हो जैसे तुम कौन ?
उषा के आंचल में अश्रांत ।"

जिस प्रकार नारी अपने प्रिय, प्रेम का छोड़ कहीं दूसरे पुरुष के साथ सम्बन्ध स्थापित नहीं करती उसी प्रकार किरण को कवि कहते हैं कि तुम सूर्य के इस भोले-भाले चेहरे को छोड़कर और कहाँ जाओगी, अर्थात् तुम्हारा मन यहाँ इतना रम गया है कि किसी और की तरफ तुम देखती भी नहीं । वहीं तुम्हारे नृत्य में ताल दे , वह भी मस्ती में मस्त हो नृत्य में भग्न है।

"भला उस भोले मुख को छोड़
और चूमोगी किसका भाल ।"

कवि कहते हैं ऐसा लगता है कि किरण स्वर्ग से आई है । पृथ्वीवासी में दोनों के बीच सूत्र स्थापित कर रही है। अर्थात् जो व्यक्ति निराश हो गये है उन्हें अलौकिक सत्ता की पहचान करा रही है। कवि पूछते हैं किरण से कि तुम कौन हो जो स्वर्ग और पृथ्वी में एकता या दोनों को एक सूत्र में बाँध रही हो ।

यहाँ किरण को अलौकिक रूप में चित्रित कर कहता है कि अगर मनुष्य भी ईश्वर का साक्षात्कार पाना चाहता है । पार्थिव यातना या शोक से मुक्ति पाना चाहता है तो किरण कि तरह उसे स्वर्ग तक पहुँचाना होगा। कवि मनुष्य को ईश्वर की ओर अग्रसर करते हुए कहते हैं - स्वर्ग के सूत्र सदृश्य तुम कौन

मिलाती हो उसे भूलोक
जोड़ती हो कैसा संबन्ध
बना दोगी क्या विरज विशोक ॥

इस प्रकार प्रसाद ने प्रकृति को एक सौन्दर्य नारी के रूप में किरण के माध्यम से चित्रित किया है। प्रिय के प्रेम में ये किरण इतनी पागल हो गई है कि थकावट का एहसास ही नहीं है। इसप्रकार प्रस्तुत कविता में प्रसाद जी ने प्रकृति के सौन्दर्य का उत्कृष्ट चित्रांकन किया है। प्रकृति के प्रति कवि का यह अनुराग अनुपम, अमूल्य है। इस प्रकार यह काव्य प्रकृति सौन्दर्य, लाक्षणिकता, मानवीय मनोविज्ञान, माधुर्य गम्भीर्य, करूण-वेदना आदि गुणों से प्रसाद जी का काव्य भरपूर है। इस प्रकार प्रसाद के प्रकृति के प्रति प्रेम का वर्णन दुर्लभ है, महान है।

प्र.२. 'प्रसाद' की काव्य-कला पर अपने विचार व्यक्त किजिए ?

उत्तर - जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों के शिरोमणि थे। उनमें सर्वतोमुखी प्रतिभा के दर्शन होते थे । उनका दृष्टिकोण विशुद्ध मानवीय था, जिसे उन्होंने आध्यात्मिक मानवतावाद से प्रतिष्ठित किया, जिसमें उन्होंने जीवन की चिरन्तन मानवीय समस्याओं का समाधान खोजना चाहा है । जिन्होंने इच्छा, ज्ञान और क्रिया के सामन्जस्य को ही मानवता माना है । इनके काव्यों में जहाँ एक ओर छायावाद की विशेषताएँ मिली हैं वहीं रहस्यवाद का पुट भी मिलता है । कहीं कहीं प्रकृति को माध्यम मानकर उन्होंने नारी सौन्दर्य का सुन्दर चित्रण किया है । प्रकृति में प्रेम भावना को उन्होंने बड़ी गहराई से देखा है । वे लिखते हैं –

किरण तुम क्यों बिखरी हो आज,

रंगी हो तुम किसके अनुराग ।

उनका प्रेम वेदना लिए हुए है । 'किरण' कविता में इन्होंने उस वेदना को उभारा है । कवि कहते हैं कि किरण के मौन प्रार्थना पृथ्वी पर झुके होने के कारण ऐसा लगता है जैसे वह वेदना के संसार से आई है । उनका कहना है कि प्रेम के कारण ही प्रकृति में निखार आ जाता है । इस प्रकार प्रेमतत्व की व्यंजना प्रसाद काव्य की प्रमुख प्रकृति है । उनका प्रेम अलौकिक होते हुए भी आध्यात्मिकता लिए हुए है । प्रसाद की काव्य कला की सबसे बड़ी विशेषता है सौन्दर्य चित्रण। प्रकृति और नारी की आकर्षण झाँकी उनके काव्य का केन्द्रविन्दु है । प्रेम का दूसरा पक्ष 'विरह' इसके काव्य की अन्यतम विशेषता है । प्रसाद जी की 'आसू' की पंक्तियों ने हिन्दी जगत को पहलीबार वेदनावाद की मादकता में विभोर किया । जिससे सारा छायावादी युग मतवाला हो उठा । आँसू काव्य में जैसे प्रसाद जी के हृदय की पीड़ा ही आँसू बन उठी । उनके काव्य में जहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य में विरह दिखाई देता है वहीं आधुनिक युग की समस्याओं का समाधान भी नजर आता है । आज का मानव मौलिक सुखों की मृग तृष्णा में भटक कर आनन्द पाना चाहता है । किन्तु क्या मौलिकवाद मानव को सुख दे सकता है । इसका जवाब प्रसाद के काव्य में स्पष्ट नजर आता है कि बिना मौलिकवाद के मानवता खोखली और निर्जीव है । प्रसाद की काव्य कला की दूसरी विशेषता है उनकी दार्शनिकता । जो अत्यन्त पुष्ट और सबल है । उन्होंने मानव प्रकृति का विश्लेषण बड़े सूक्ष्म ढंग से किया है । एक अनजानी शक्ति के आकर्षण तथा प्रकृति में छूपे रहस्य को अपने काव्य में खोजने को कोशिश की है । धरती और आकाश जहाँ मिलते हैं उसके पार प्रसाद की तीक्ष्ण दृष्टि कुछ खोजती है । और उस रहस्य से पर्दा उठाना चाहती है । 'आँसू' काव्य में भी प्रसाद जी ने सूफियों के दर्शन को अपनाया है । जीवात्मा और परमात्मा के आकर्षण को लौकिक प्रेम में व्यक्त किया है । आत्मा हमेशा परमात्मा के विरह में डूबी रहती है । प्रसाद में संस्कृति और

इतिहास के प्रति भी गहरा लगाव था । इतिहास की पृष्ठभूमि पर उन्होंने कल्पना के माध्यम से वर्तमान को रखा । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य को प्रसाद के रूप में महान् विभूति मिली । उनका हृदय अयन्त कोमल और भावुक होते हुए भी उनकी बुद्धि बहुत ही प्रखर थीं ।

प्रसाद की काव्य भाषा पर गद्य-भाषा का पूर्ण प्रभाव पड़ा है । अपने साहित्य में इन्होंने भाषा सौष्टव पर विशेष ध्यान दिया है । तथा अपने काव्यों में इन्होंने संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है । इन की भाषा संस्कृत गर्भित होने पर भी दुर्बोध्य नहीं है ।प्रसाद जी का शब्द चयन बहुत ही सुन्दर है । अगूँठे मे लग के सामान जड़े लगते हैं । इनकी शैली बहुत मधुर है । छोटे छोटे वाक्यों में अर्थपूर्ण भाव भर देना फिर उन्हें लय और संगीत में सजाकर आकर्षण बनाना इनकी शैली की विशेषता है । प्रसाद की काव्य कला हिन्दी साहित्य में एक अलग स्थान बना रखी है ।

धर्मवीर भारती
(थके हुए कलाकार से)

कवि परिचय :

धर्मवीर भारती एक सफल कवि हैं, सिद्धहस्त उपन्यासकार तथा ख्यातिलब्ध पत्रकार है । उनका जन्म सन् १९२६ ई० में हुआ था । प्रारभ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक रहे, सम्प्रति 'धर्मयुग के सम्पादक हैं । उनकी लेखनी सामाजिक संदर्भों, उनकी विस्थितियों, असंगतियों और अव्यवस्थाओं को दूर करने की उपेक्षा करती है ।

धर्मवीर भारती प्रयोगवादी मनोवृति के कारण आधुनिक हिन्दी कविता में अपनी आधुनिक दृष्टि, रोमांटिक प्रवृति, व्यक्तिवादी चेतना तथा सहज जीवन एवं बोलचाल की भाषा के लिए प्रख्यात है । इनकी रचनाओं में प्रणय की व्यंजना प्राय: पायी जाती है । छायावादोत्तर काल की प्रबन्ध कृतियों में धर्मवीर भारती की 'कनुप्रिया' अत्यन्त महत्वपूर्ण है । यह एक प्रबन्धकाव्य है । आधुनिक भावबोध को वाणी देने वाली प्रयासों में धर्मवीर भारती का 'अन्धा युग' नामक गीति नाट्य उल्लेखनीय है । इसमें महाभारत के १८ वें दिन की संध्या से कृष्ण के देवसान तक की कथा ली गई है । इस कथा के चयन का उद्देश्य युद्धजन्य प्रभावों का आकलन करना है । जब जब युद्ध होगा, ऐसी ही अवसाद भरी प्रासद परिस्थितियाँ उत्पन्न होगी । यह बताना कवि का अभीष्ट है । 'शंका : जिज्ञासा' और 'पराजित पीढ़ी काह गीत' जैसी रचनाएँ व्यक्तिवादी विचार का बोध कराती है । वस्तुत: भारती प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं ।

व्याख्या-भाग

१. **सृजन की थकन .... भूल जा देवता।**

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक'हिन्दी काव्य धारा' के 'थके हुए कलाकार से' नामक कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि धर्मवीर भारती हैं।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कलाकार को यह संदेश दिया है कि तुम थको मत, निराश मत हो, अपने निर्माण कार्य में आगे बढते चलो ।

व्याख्या- कवि कहते हैं कि हे कलाकार तुम थको मत निराश, मत हो। तुम अपनी निर्माण की थकान को भूल जाओ। अभी यह धरती आधी ही बनी है अधूरी ही है। अभी तुम्हारा कार्य समाप्त नहीं हुआ है। अभी तो पलकों में नयी कल्पना, नये सपने की कोमल चाँदनी नहीं खिल पायी है। अभी कला को मूर्त रूप नहीं मिला। जिस धरती को यह स्वर्ग बनाने जा रहा है, उसकी जड़ की नींव का पता तक अभी नहीं है। यह धरती अभी वैसी अधूरी पड़ी है। अपनी थकान को भूल अपने कार्य को पूरा करो। निराश मत हो, अपने निर्माण कार्य में लगे रहो ।

विशेष - यहाँ कवि ने निराशावादी भावना को मिटा आशावादी भाव को अपनाने और कार्य करने को प्रेरित किया है।

(२) **रूका तू .... भूल जा देवता।**

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य धारा' के 'थके हुए कलाकार से' नामक कविता से ली गई हैं, इस कविता के कवि धर्मवीर भारती हैं।

सन्दर्भ - यहाँ कवि ने कलाकार को कर्म करने को प्रेरित कर उसे बताया है कि यही तुम्हारा कर्त्तव्य है। यही तपस्या है तुम्हारी।

व्याख्या-कवि कहते हैं - हे कलाकार अगर तू रूक गया तो यह सत्य है कि संसार का सृजन सृष्टि भी थम जायेगी। यह धरती अधूरी पड़ी है। तेरी आँखों में नई कल्पना भी नहीं जागी है। तू मत रूक । अंध के नेत्रों में राह भूल गई है रोशनी की किरण। अलसाये बादल में सतरंगी सृष्टि का सपना सो गया है। तू जो रूका तो यह सारे संसार का निर्माण कार्य रूक जायेगा। अधूरे निर्माण से तुम उदास क्यों होते हो। जब पूर्णता ही अधूरी है। हे देवता अपनी थकान को भूल जा।

(३) प्रलय से निराशा .... भूल जा देवता।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक'हिन्दी काव्य धारा' के 'थके हुए कलाकार से' नामक कविता से ली गई हैं, इस कविता के कवि धर्मवीर भारती हैं।

सन्दर्भ - यहाँ कवि कहते हैं तेरी थकान रूपी सांसों की सिसकियों में सृष्टि के सृजन रूपी प्राण की आशा खो गयी है। तेरे थके हुए हाथों में अधूरी प्रलय और अधूरे सृजन की योजना कहीं खो गयी। तू थक गया है। इसी विनाश में हो सकता है कि शायद नयी जिन्दगी कहीं बेहोश पड़ी हो ? हे देवता सृजन की थकान को भूल जा और अपने निर्माण में लगा रहे ।

विशेष - यहाँ कवि सृजन की थकान को भूल अपने निर्माण कार्य में लगे रहने को प्रेरित करते हैं।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

प्र.१. कवि कलाकार से अपनी थकान भूल कार्य करने को क्यों प्रेरित करते हैं।

उत्तर-कवि कलाकार को थकान भूल कार्य करने के लिये इसलिये प्रेरित करते हैं कारण अभी पूरी धरती अधूरी पड़ी है । अभी तो कलाकार के मन नये सपने भी नहीं , नयी-नयी कल्पनाएं भी नहीं जागृत हो पायी। अभी कला मरी

नहीं है उसे मूर्त रूप नहीं मिला। जिस धरती को सोना बनाने के उसने सपने देखे थे अभी तो उनकी नींव तक का पता नहीं, अगर वह थकान को नहीं भूलेगा तो यह धरती अधूरी पड़ी रह जायेगी। इसलिये कलाकार को कवि थकान को भूल काम करने को प्रेरित करते हैं।

प्र.२. कवि प्रलय को देख किस वस्तु की सृष्टि की बात करते हैं?

उत्तर- कवि का कहना है कि हर दुःख के बाद सुख आता है। हर रात के बाद दिन आता है उसी प्रकार कवि कलाकार को कहते हैं कि तुम इस ध्वंस, प्रलय के कारण निराश मत हो, सब समाप्त नहीं हुआ है। क्या पता इस ध्वंस में नयी जिन्दगी पड़ी हो। तात्पर्य है कि ध्वंस के बाद नयी जिन्दगी चल सकती है। इसलिय तुम नयी शक्ति से अपने निर्माण में लग जाओ ।

प्र. ३. इस कविता में कवि का उद्देश्य (संदेश) क्या है ?

उत्तर -भारती जी का इस कविता के माध्यम से कलाकार को यह कहना चाहते हैं कि कलाकार को अपने कला-निर्माण का काम कभी बंद नहीं करना चाहिये, उसे कुछ भी हो जाये निरंतर कार्य करते रहना चाहिए। अगर बंद हो गया तो सृजन कार्य अधूरा रह जायेगा। इसलिये थकावट निराश न हो कर काम करो। यही उसकी भक्ति है और तपस्या । इस प्रकार कलाकार को कला का प्रसार करने की ओर प्रेरित किया है।

प्र. ४. 'थके हुए कलाकार से' कविता का सारांश लिखिए ?

उत्तर - धर्मवीर भारती हिन्दी साहित्य के महान कवि हैं। भारती जी ने सिर्फ कविता ही नहीं नाटक, उपन्यास, कहानी, शोध-आलोचना, निबंध आदि की रचना की है। इनकी रचनाओं में प्रलय की व्यंजना प्राय: पायी जाती है। 'आयाम में विश्वनाथ गौड लिखते हैं – " भारती के लिये कविता शांति की छाया और विश्वास की आवाज रही है ।" कविता ने उसे अत्यधिक पीड़ा के क्षणों में विश्वास और दृढता दी है। भारती जी प्रयोगवादी कवियों में अग्रणी रहे हैं।

कवि की भावना बड़ी प्रबल है। यह हमेशा कर्म पर विश्वास करते हैं कभी थकते नहीं हमेशा अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं। इसी भावना को 'थके हुए कलाकार से' कविता में वर्णन है। यहाँ कलाकार से कहा गया है कि थकान को देख निराश हो अपने काम को बंद मत करो। अगर बंद हो गया तो तुम्हारा सृजन कार्य अधूरा रह जायेगा। वह कहते हैं अपने काम में कर्मशील रहना, निर्माण करना ही तुम्हारा कर्तव्य और वही साधना है, पूजा है, तपस्या है।

कलाकार को कवि कहते हैं कि अभी तो धरती अधूरी ही पड़ी है फिर कौन इसे पूरा करेगा। इस थकान को तू भूल जा नहीं तो यह सब काम अधूरा रह जायेगा।

कवि कहते हैं कि हे प्रलय में तुम्हें निराश नहीं होना चाहिये। हर चीज से निराश मत हो, तुम्हारी सिसकती हुई साँस में प्राणों के सुप्त हो जाने का अंदेशा हो रहा है। तुम्हारे थके हुए बाहुओं में अधूरी प्रलय और अधूरी योजना सो रही है। यह उचित नहीं है। इसी प्रलय मे ध्वंस में शायद जिन्दगी मूर्च्छित अवस्था में पडी हो। इसलिये हे कलाकार निराश मत हो। तुम अपना अधूरा काम पूरा करो। फिर से अपनी नयी शक्ति के साथ निर्माण कार्य में लग जाओ। सृजन की थकान को भूल जाओ।

"थकान से निराशा तुझे हो गयी ?
इसी ध्वंस में मूर्च्छिता-सी कहीं
पड़ी हो नयी जिन्दगी, क्या पता?
सृजन की थकान, भूल जा देवता !

गद्य गौरव

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से

रामधारी सिंह दिनकर

व्याख्या भाग

प्र. १. ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है .... वेदना भोगनी पड़ती है ।

प्रस्तुत गद्यांश रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'ईर्ष्या : तू न गई मेरे मन से' नामक निबंध से लिया गया है। इसमें 'दिनकर' जी ने ईर्ष्या से उत्पन्न उस सत्यता को प्रकट किया है, जिसे वेदना कहते हैं ।

ईर्ष्या मनुष्य की वह अवांछनीय प्रवृति है जिस में व्यक्ति अपने पास रखी चीजों का उपभोग नहीं कर पाता बल्कि दूसरों के पास रखी चीजों से दुःखी होता रहता है । दूसरों से तुलना करते हुए उन्हें अपने अभावों का हमेशा दुःख रहता है तथा वह अभाव उन्हें हमेशा अपने हृदय में टीस बनकर चुभता रहता है । और यह चुभन उसे हमेशा दुःखी बनाये रखती है । लेकिन ईर्ष्यालु व्यक्ति करे तो क्या करे ? ईर्ष्या रूपी आदत उसे मजबूर करती है वेदना भोगने के लिये । वह आनन्द को चाह कर भी नहीं भोग पाता ।

प्र. २. ईर्ष्या की बड़ी बेटी निन्दा........ मैं ही बिठा दिया जाऊँगा ।

प्रस्तुत गद्यांश राष्ट्रीय कवि दिनकर तथा श्रेष्ठ निबंधकार द्वारा लिखित 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' से लिया गया है । प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने व्यक्ति में ईर्ष्या के साथ निन्दा रूपी दुष्टप्रवृति का भी समावेश हो जाता है । जिससे वह समाज में निन्दनीय हो जाता है ।

ईर्ष्या के जन्म लेते ही निन्दा रूपी प्रवृति भी मनुष्य के हृदय को घेरे लेती है तथा ईर्ष्यालु के साथ साथ वह निन्दक भी बन जाता है एवं दूसरों के बारे में निन्दा करने लगता है ताकि दूसरे समाज की नजरों मे गिर जाये और जो स्थान खाली हो उस पर वह चाहता है कि समाज उसे रखे । इसी चाहत में वह बुरे किस्म का निन्दक बन जाता है । दूसरों को हानि पहुँचाना ही वह अपना सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य समझता है ।

३. ईर्ष्या का काम तो जलाना........और कोई ध्येय नहीं हो ।

प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ दिनकर द्वारा लिखित 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' नामक निबंध से ली गई हैं । इसमें लेखक ईर्ष्या और द्वेष में पड़े व्यक्ति के कर्म के संदर्भ में कहते हैं ।

लेखक कहते हैं कि जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है । वह हमेशा ऐसा कर्म करता है जिससे दूसरों को तकलीफ हो । लेकिन वह नहीं जानता कि दूसरों को जलाने से पहले वह स्वयं उसे जलायेगी । क्योंकि ईर्ष्या पहले उस व्यक्ति का पतन करती है जिस हृदय में उसका जन्म हुआ है । ईर्ष्यालु व्यक्ति हमेशा इस ताक मे रहता है कि कब मौका मिले और वह दूसरों के बारे में इधर-उधर की बातें करने लगे । सुनने वाले मिले नहीं कि अपने दिल का गुबार निकालने लगते हैं । ग्रामोफोन की तरह बड़ी चालाकी से दूसरों के अवगुणों का इस प्रकार बखान करने लगते हैं जैसे समाज के प्रति उनका उत्तरदायित्व बहुत है । इस बहाने वे केवल विश्व कल्याण की बात ही सोचते हैं तथा जैसे यही उनका उद्देश्य हो ।

४. चिन्ता को लोग चिता........... वायु को दूषित करती फिरती है ।

प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' निबंध से ली गई हैं। इन पंक्तियों में लेखक ने चिन्ता को चिता समान और ईर्ष्या को उससे भी खतरनाक माना है ।

लेखक कहते हैं कि चिन्ता में डूबे व्यक्ति का शरीर सोच सोच कर नित्य घुलता है । लेकिन ईर्ष्यालु व्यक्ति की तो मानसिकता ही कुण्ठित हो जाती है । तथा उसका मौलिक गुण धीरे धीरे नष्ट हो जाता है । चिन्ता में तो व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाता है । मृत्यु तो शायद श्रेष्ठ है इससे हमें अपने गुणों को कुण्ठित करके तो जीना नहीं पड़ता । चिन्तित व्यक्ति को तो फिर भी समाज से सहानुभूति मिल जाती है लेकिन ईष्यालु व्यक्ति को तो घृणा के सिवाय कुछ नहीं मिलता बल्कि वह जिससे ईष्या करता है वह तो जलता नहीं वरन् ईर्ष्या स्वयं ईर्ष्यालु व्यक्ति को ही जला डालती है । वह वह उस जहर के समान है जो स्वयं उसी को खा जाती है तथा समाज के वातावरण को भी दूषित कर देती है ।

५. ईर्ष्या मनुष्य का चरित्रिक दोष .... आनन्द होता है ।

प्रस्तुत पंक्ति 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' निबंध से उद्धृत है । इसके निबंधकार रामधारिसिंह 'दिनकर' जी हैं। प्रस्तुत पंक्ति में दिनकर जी ने ईर्ष्या को मनुष्य का दोष माना है ।

दिनकर जी कहते हैं कि ईर्ष्या मनुष्य के चरित्र को तो नष्ट करती है, साथ ही साथ उसे आनन्द से भी च्युत कर देती है। ईष्या के रहते वह जीवन का आनन्द नहीं उठा पाता । जीवन रूपी सूर्य का तेज भी वह नहीं देख पाता प्रकृति का आनन्द भी नहीं ले पाता । संसार की हर चीज उसे फीकी नजर आती है । पक्षियों के गीत मधुर नहीं जान पड़ते फूलों की सुन्दर तथा खुशबू को तो वह देखने तथा महसूस करने लायक नहीं रह जाता। अर्थात् ईर्ष्या एक ऐसा मनोविकार है जो मनुष्य को संसार की सुन्दरता तथा हृदय के आनन्द से बहुत दूर ले जाती है वह हमेशा अन्दर ही अन्दर कुढ़ता रहता है तथा अपना जीवन बर्बाद कर लेता है ।

६. ईर्ष्या के बचने का उपाय............ ईर्ष्या करना कम कर देगा ।

प्रस्तुत पंक्ति रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित निबंध 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' निबंध से ली गयी है । इसमें लेखक ने ईर्ष्या से बचने के उपाय तथा आत्मानुशासन की बात कही है ।

दिनकर जी कहते हैं कि यदि ईर्ष्या से बचना है तो मनुष्य को इधर-उधर की फालतू बातें नहीं सोचनी चाहिये तथा अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिये। व्यक्ति को अपने अभावों का पता लगा कर उसे दूर करने के लिये रचनात्मक तरीकों का संधान करते रहना चाहिये इससे वह अपने अभावों को दूर कर सकेगा तथा समाज में प्रतिष्ठित भी हो सकेगा। उसमें जब यह जिज्ञासा जाग जायेगी तो वह अपने मन को संयमित, तथा रचनात्मक कार्यों में अपने मस्तिष्क का प्रयोग करना शुरु कर देगा जिसके फलस्वरूप ईर्ष्या रूपी मनो विकार असकी मानसिकता को कमजोर नहीं बना पायेगी। जीवन के प्रगति के मार्ग पर वह आनन्द की अनुभूति करने लगेगा।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

१. 'ईर्ष्या' किसे कहते हैं ?

उ: जब कोई व्यक्ति अपने निकटस्थ व्यक्ति की उन्नति को देखता है तो उसमें अपनी असम्पन्नता की तुलना करता है, तब उसके मन में एक प्रकार का दुःख पैदा होता है, जिससे उसमें आलस्य, निराशा तथा अयोग्यता आ जाती है। इस दुःख का ही नाम ईष्या कहलाता है।

२. ईर्ष्यालु व्यक्ति को कौन सा दाह जलाता है ? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए ?

उ: ईष्यालु व्यक्ति सदैव अपनी तुलना उस व्यक्ति से करता है जिसे वह अपने से अधिक सुखी या साधन सम्पन्न समझता है यही दाह उसे जलाता रहता है। जैसे वकील साहब के बगल में रहने वाले बीमा एजेन्ट की तरक्की से उसका कलेजा जलता है। वकील के पास जो कुछ है उसमें वह सन्तुष्ट नहीं है। बीमा एजेण्ट के घर की मोटर उसकी मासिक आय तथा उसकी तड़क-भड़क की भी इच्छा उन्हें ईर्ष्यालु बना देती है।

३. **ईर्ष्यालु को अनोखा वरदान क्यों कहा गया है ?**

उ : ईर्ष्या, को अनोखा वरदान इसीलिये कहा गया है क्यों कि ईर्ष्यालु व्यक्ति अपने पास रखी वस्तुओं का आनन्द तो नहीं ले पाता बल्कि दूसरों की वस्तुओं को देखकर दुःखी होता रहता है । तथा बेवजह वेदना पाले बैठा रहता है ।

४. **चिन्ता और ईर्ष्या में क्या अन्तर है ?**

उ : चिंता को लोग चिता कहते है । चिन्ताशील लोगों का शरीर चिंता से धीरे धीरे गलता रहता है और अतन्तः वे मृत्यु के समीप पहुंच जाते हैं । लेकिन ईर्ष्या तो मनुष्य की मानसिकता को ही कुंठित कर देती है तथा उसके मौलिक गुणों को धीरे धीरे नष्ट कर देती है । चिंतित लोगों को तो फिर भी समाज की सहानुभूति मिल जाती है लेकिन ईर्ष्यालु व्यक्ति को तो तिरस्कार ही मिलता है ।

५. **ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है ?**

उ : ईर्ष्यालु व्यक्तिको दूसरों की निन्दा करने में एक प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है । यह आनन्द उसके लिये सबसे बड़ा पुरस्कार होता है ।

६. **ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा नीत्से के दो सूत्र क्या हैं ?**

उ : ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का सूत्र है– ''तुम्हारी निन्दा वही करेगा जिसकी तुमने भलाई की है । तथा दूसरा नीत्से का सूत्र है – ''आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं - उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं ।

७. **ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है ।**

उ : रचनात्मक व्यक्ति जो कुछ भी अच्छा एवं महान कार्य करना चाहते हैं उन्हें ईष्यालु एवं निन्दक व्यक्तियों की परवाह नहीं करनी चाहिये तथा एकान्त में रहकर रचनात्मक कार्य करते रहना चाहिये उन्हें यश की कामना नहीं करनी चाहिये ।

८. **ईर्ष्या से मुक्ति कैसे पायी जा सकती है ।**

उ : ईर्ष्या से मुक्ति पाने के लिये व्यक्ति को इधर उधर की फालतू बातों से दूर रहना चाहिये अपने अभावों को दूर करने के लिये सदा उद्यम करते रहना चाहिये । तथा अपने पास रखी वस्तुओं पर संतुष्ट रहना चाहिये । हमेशा जिज्ञासु प्रवृति का बने रहना चाहिये ।

दीर्घप्रश्नोत्तर

१. **'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखिये ।**

अथवा

ईर्ष्या संबंधी विचारों का उल्लेख करते हुए ईर्ष्या से बचने के उपायों का वर्णन कीजिए ।

उत्तर : दिनकर जी के निबंध विचारों के धरातल पर विकसित राष्ट्रीय एवं मानवीय चेतना के प्रतीक हैं। प्रस्तुत निबंध 'ईष्या तू न गई मेरे मन से' ऐसा ही एक मनोवैज्ञानिक निबंध है जिसमें दिनकर जी ने ईर्ष्या रूपी मनोविकार पर सरस एवं विस्तृत विश्लेषण किया है । ईर्ष्या से पैदा हुइ विषम परिस्थितियों तथा उससे मुक्ति के उपाय भी सुझाये हैं।

जब कोई व्यक्ति अपने निकटस्थ व्यक्ति की उन्नति को देखता है तथा उससे अपनी असम्पन्नता की तुलना करता है, तब उसके मन में एक प्रकार का दु:ख पैदा होता है जिससे उसमे आलस्य, निराशा तथा अयोग्यता आ जाती है इससे उसके मन में ईर्ष्या पैदा हो जाती है ।

ईर्ष्या मनुष्य की वह अवांछनीय प्रवृत्ति है जिसमे व्यक्ति अपने पास रखी चीजों का उपभोग नहीं कर पाता तथा दूसरो के पास रखी चीजों से दुखित होता रहता है तथा दूसरों के वैभव की वृद्धि से अपना कलेजा जलाता है ।

ईर्ष्या का यही तो वरदान होता है कि वह मनुष्य के हृदय में घर बना लेती है और उसे आनन्द से कोसों दूर ले जाती है । दूसरों के वस्तुओं को देखकर उसे अपने अभाव हमेशा दंश मारते रहते हैं और उसका हृदय आहत होता रहता है जिससे उसे वेदना भोगनी पड़ती है तथा अपने पास रखी चीजों से हमेशा असन्तुष्ट रहता है ।

भगवान द्वारा दिया गया उपवन पाकर भी ऐसे व्यक्ति भगवान का धन्यवाद करने की बजाए हमेशा यही सोचते रहते हैं तथा कुढ़ते रहते हैं कि हमें इससे बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला । यही भावना उसके चरित्र का हनन करती है तथा वह अपनी उन्नति का उद्यम छोड़कर दूसरों को हानि पहुंचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझने लगता है ।

निन्दा ईर्ष्या की बड़ी बेटी है । वह ईर्ष्यालु व्यक्ति को निन्दक बना देती है । वह मृदुभाषी हो कर दूसरों की निन्दा करने के मौके तलाशता रहता है और मौका पाते ही व बढ़ चढ़कर दूसरों की निन्दा करने लगता है ताकि लोग उसकी प्रशंसा करें तथा जिसकी वह निन्दा करता है उसे गाली दें । इससे उसे लगता है कि वह विश्व कल्याण की बात कर रहा है ।

चिंता को चिता का नाम दिया गया है । चिता तो शरीर को धुलाती है । मगर ईर्ष्या तो व्यक्ति की मानसिकता को कुण्ठित कर देती है तथा उसके मौलिक गुणों का भी ह्रास कर देती है । समाज से वह तिरस्कृत हो जाता है । चिंता से तो मृत्यु हो जाती है लेकिन वह मृत्यु भी फिर भी श्रेष्ठ है वनिस्पत इसके कि हमें अपने जीवन को कुण्ठित बना कर जीना पड़े । चिंता ग्रस्त व्यक्ति को तो समाज की सहानुभूति भी मिल जाती है लेकिन ईर्ष्या में दग्ध मनुष्य उस जहर के समान होता है जिससे वह खुद तो प्रभावित होता ही है साथ में वातावरण को भी दूषित करता रहता है ।

मनुष्य को अपने परिश्रम से जितना मिलता है उससे ही खुश रहना चाहिये । लेकिन अक्सर मनुष्य ज्यादा की चाहत में दुःखी होता है तथा ईर्ष्यालु हो जाता है और दूसरों की प्रगति में रुकावट पैदा करता रहता है ।

दिनकर जी कहते हैं कि ईर्ष्या केवल चारित्रिक दोष ही नहीं बल्कि मनुष्य को जीवन का आनन्द भी नहीं लेने देती । समाज की भी श्रेष्ठ चीजें उसे श्रेष्ठ नहीं लगतीं । प्रकृति के सौन्दर्य से भी वह दूर भागता है। उसे पक्षियों के गीत में कोई जादू नहीं नजर आता है। फूलों में भी उसे सौन्दर्य तथा खुशबू का अनुभव नहीं होता । केवल दूसरों की निन्दा करने में ही उसे आनन्द प्राप्त होता है। और यही ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार होता है । मगर यही हँसी मनुष्य की नहीं राक्षस की हँसी होती है और यह आनन्द भी दैत्यों का आनन्द होता है। ईर्ष्या उसे असुर प्रवृति वाला बना देती है ।

ईर्ष्या का एक पक्ष प्रतिर्स्पद्धा या प्रतिद्वन्दिता भी है । भिखमंगा कभी भी करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता । प्रतिद्वन्द्विता से भी मनुष्य का विकास होता है । रसेल के मत के अनुसार संसार में यशस्वी बनने की चाहत रखने वाला शायद नेपोलियन से ईष्या करे उसके प्रति प्रतिद्वन्द्विता का भाव भी रखे । यह ऐतिहासिक सत्य है कि नेपोलियन -सीजर से स्पर्द्धा रखता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकूलस से । किन्तु इतिहास बताता है कि हरकूलस कभी पैदा ही नहीं हुआ था । इस प्रकार प्रतिस्पर्द्धा की भावना निराधार होती है ।

आगे दिनकर जी ने ईर्ष्या के लाभदायक पक्ष पर भी विचार किया है वे कहते हैं हर व्यक्ति अपने प्रतिद्वन्दी के समकक्ष बनना चाहता है लेकिन यह तभी संभव है कि ईर्ष्या प्रेरणा दायक हो जो व्यक्ति को रचनात्मक बनाती हो न कि ध्वंसात्मक । नीत्से से के अनुसार ईर्ष्यालु एवं निन्दक व्यक्ति बाजार में भिनभिनाती मक्खियों के समान हैं जिससे लोग दूर भागते हैं या उन्हें अपने से दूर भगाते है ।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने अपने तजुर्बे को एक सूत्र बनाकर कहा - ''तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है ।''

अक्सर ईर्ष्यालु व्यक्ति अपनी तादाद बढ़ाने के इच्छुक होते हैं और कोई उसकी निन्दा सुनकर जबाब नहीं देता तो वे उसे अहंकारी कहते हैं। और यदि उनके साथ छोटेपन पर उतर आये तो उन्हें खुशी होती है लेकिन हमें ईष्यालुता के क्षुद्रता के निम्न धरातल पर नहीं उतरना चाहिये ।

अन्त में दिनकर जी ने ईर्ष्या से आदमी कैसे बचे तथा उससे बचने के क्या उपाय है इस पर चर्चा की है । नीत्से के सूत्र अनुसार आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं उन्हीं के चलते लोग उससे जलते है । ऐसे लोगों को एकान्त में रहना चाहिये । अमर तथा महान कार्य करने वालों को उसका बखान बजार में नहीं करना चाहिये जो लोग नये मूल्यों को करने वाले हैं वे बाजार में नहीं बसते वे शोहरत के पास भी नहीं रहते । उन्हें एकान्त में रहकर सृजनशील कार्य करते रहना चाहिय । ईर्ष्या से बचने के उपाय के बारे में दिनकर कहते हैं कि ईर्ष्या से बचने का एकमात्र उपाय मानसिक अनुशासन ही है । इस ईर्ष्यालु स्वभाव से दूर रहने के लिये उसे इधर-उधर की फालतू बातों से बचना चाहिये । तथा हमेशा अपने अभावों के बारे में सोचकर उसकी आपूर्ति के लिये रचनात्मक तरीका ढूंढ़ते रहना चाहिये तथा हमेशा अंपने को उद्यमी बनाये रखना चाहिये । जब जब उसके भीतर यह जिज्ञासा पनपेगी तब वह ईर्ष्या से दूर रहेगा तथा प्रगति तथा आनन्द के मार्ग में प्रशस्त रहेगा ।

इसप्रकार दिनकर जी की यह रचना व्यक्ति के मनोभावों को समाज से जोड़ने का यत्न करती है । ईर्ष्या के स्वरूप और दूरगामी प्रभाव के चित्रण में दिनकर जी को पूरी सफलता मिली है ।

दिनकर जी की भाषा और शैली काफी मानसिक चेतना का प्रतीक है । प्रस्तुत निबंध में सरसता, गंभीरता, निष्ठा जैसी शैली तत्व है । यह एक विचारात्मक तथा अनुभूति और कल्पनाप्रधान रचना है । प्रस्तुत निंबंध में दिनकर की भाषा अत्यन्त समृद्ध , प्रांजल, प्राणवान, चुस्त एवं व्यावहारिक है ।

सोना हिरनी

महादेवी वर्मा

व्याख्या-भाग

१. **निर्जीव वस्तुओं से मनुष्य......... जीवन कथा का तत्व है ।**

उ: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सोनाहिरनी' नामक रेखाचित्र से ली गई हैं, जिसकी लेखिका महादेवी वर्मा जी हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में लेखिका कहना चाहती हैं कि निर्जीव वस्तुओं से मनुष्य मात्र अपने शरीर का प्रसाधन करता है लेकिन सजीव में जीवन मृत्यु का संघर्ष होता रहता है । इसे ही जीवन कथा का तत्व मानती हैं ।

महादेवी वर्मा जी कहती हैं कि एक हिरन शावक उनके पास लाई गई थी जिसकी माँ शिकारी के बाणों का शिकार बन गई थी । उस हिरन शावक का नाम लेखिका ने सोना हिरनी रखा है । शिकारी ने उस नवजात शावक की माँ को बड़े निर्दय भाव से मार डाला । लेकिन जिन्होंने उस नवज़ात शावक को देखा होगा उसका हृदय पसीज गया होगा ।

इसी संदर्भ में लेखिका कहती हैं कि निर्जीव वस्तुओं में मनुष्य अपने घर की तथा अपनी साजसज्जा मात्र कर सकता है। उन निर्जीव वस्तुओं को वह इधर उधर कर उसकी स्थिति परविर्तन ही कर सकता है । यह कोई कथनीय या कहने योग्य बात नहीं है । लेकिन सजीव में अनुभूति तथा भावनाएँ प्रधान होती हैं । उन्हें शरीर तथा अहंकार प्रवृत्ति का होना स्वीकार है । सजीव में जीवन और मृत्यु का संघर्ष हमेशा चलता रहता है और उसके बारे में जीवन वृत कहा

जा सकता है और जीवन कथा का यही तत्व भी है । इसलिये सजीव चीजें मनुष्य जीवन की अमूल्य निधि है । उन्हें भी उसे अपने जीवन कथा का तत्व दिखाई देता है। कहने का तात्पर्य है कि सजीव को निर्जीव वस्तु बनाकर प्रसाधन मात्र बनाना महान कार्य नहीं है । वरन सजीव के साथ जीवन जीना महान कार्य है ।

२. **हरितिमा में लहराते............... शिकारी का आकर्षण नहीं रहता ।**

प्रस्तुत पंक्तियाँ को 'सोना हिरनी' नामक निबंध से ली गई हैं, इसकी लेखिका महादेवी वर्मा जी हैं। प्रस्तुत पंक्ति में महादेवी जी का कहना है कि सजीव का आनन्द लेना या गतिशील सौन्दर्य की कल्पना वही कर सकता है जो मानवीय विचारधारा का है, वह नहीं कर सकता जो अमानवीय विचार वाला है ।

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखिका कहती हैं कि जिन्होंने भी हरियाली में मैदान पर छलांगे लगाते हुये हिरनों के झुण्ड को देखा होगा वही गतिशील सुन्दरता की कल्पना कर सकता है और उसे ऐसा ही प्रतीत होता होगा कि तरल मरकत के समुद्र में सुनहले फेन क्रीड़ा कर रहीं हो । यह दृश्य हृदय में एक अजीब प्रकार की अनुभूति भर देता है लेकिन शिकारी की आँखें इस मनोहर दृश्य को नहीं देख पातीं । उसका हृदय इस सुहावने दृश्य के प्रति आकर्षित नहीं हो पाता। वह तो उन निरीह हिरनों को आहत करने की बात ही सोचता रहता है ।

३. **मनुष्य मृत्यु को असुन्दर............. यह मैं समझ नहीं पाती ।**

प्रस्तुत पंक्तियों को 'सोना हिरनी' नामक निबंध से उद्धृत किया गया है, जिसकी लेखिका महादेवी जी हैं। यहाँ पर लेखिका ने मनुष्य की अमानवीय प्रवृत्ति एवं क्रूरता पर प्रकाश डाला है ।

मनुष्य तो मृत्यु को अपवित्र तथा असुन्दर मानता है लेकिन फिर भी अपनी जिह्वा की तृप्ति के लिये प्रकृति सजीव सौन्दर्य की हत्या करता रहता है ।

अपने प्रियजन की मृत्यु हो जाने पर उनके शव को अपवित्र, अस्पृश्य तथा भयजनक मानता है, लेकिन वही मनुष्य मौत का सौदागर होकर पशुपक्षियों की हत्या करता फिरता है केवल अपने मनोरंजन तथा स्वाद के लिये। महादेवी जी को मनुष्य की इस प्रवृति पर आश्चर्य लगता है तथा वे उसकी क्रूरता, निष्ठुरता, तथा बधिक प्रकृति की भर्त्सना करती हैं ।

४. पक्षी जगत में ही नहीं पशु जगत............ आकर्षण क्यों ?

पस्तुत पंक्तियाँ को महादेवी द्वारा रचित 'सोना हिरनी' नामक रेखाचित्र से ली गई हैं इसमें लेखिका ने हिरन की निरीहता एवं सुन्दरता का वर्णन किया है ।

लेखिका कहती हैं कि पशु जगत में हिरन जैसा निरीह एवं सुन्दर पशु दूसरा कोई नहीं है । उस की बड़ी बड़ी कलात्मक आँखें मानो झरणा की चित्रों से लिखी कोई रचना है । लेकिन उसकी गतिमय संजीव सुन्दरता भी मनुष्य का मनोरंजन करने में असमर्थ है। मानव जो सृष्टि का श्रेष्ठतम जीव है उसे इस प्रकृति की सुन्दरता में इतनी वितृष्णा क्यों है तथा मृत्यु के प्रति (शिकार के संपर्क में) इतना मोह तथा आकर्षण क्यों है ? जिससे वह निरीह करुणामय पशुको मारने के लिए तत्पर तथा आनन्दित होता है ।

५. पालने पर वह पशु न रहकर ....अभीष्ट नहीं रहा होगा ।

प्रस्तुत पंक्तियों को 'सोना हिरनी' निबंध से लिया गया है । इसकी लेखिका महादेवी वर्मा जी हैं । इन पंक्तियों में लेखिका ने विचार किया है कि अगर मनुष्य दूसरे मनुष्य से, नेत्रों से बातें कर पाता तो बहुत से विवाद समाप्त हो जाते ।

सोना हिरनी के बारे में लेखिका कहती हैं कि पता नहीं कैसे सोना से उनका लगाव इतना अधिक हो गया शायद पालने पर पशु मनुष्य का ऐसा

स्नेही संगी बन जाता है जो मनुष्य के अन्दर एकान्त शून्य को भर देता है । मनुष्य की खीझ की भाषा को वह अपनी मौन भाषा से समझ जाता है । पशु मनुष्य की स्नेह तथा प्रेम की भाषा ही समझते हैं । सामाजिक ऊँच नीच की भाषा नहीं । लेकिन वे कहती हैं कि यदि मनुष्य केवल नेत्रों से ही बात करता तो बहुत सारे विवाद अपने आप समाप्त हो जाते लेकिन ईश्वर को यह मंजूर नहीं था ।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

१. लेखिका के पास सोना हिरनी कैसे पहुँची ?

उ : शिकारी के हाथो सोना हिरनी की माँ शिकार बन गई । किन्तु शिकारी ने खून से लथपथ हिरनी के ठंडे स्तनों से लिपटे नवजात शावक को देखा होगा और उसका हृदय पसीज गया होगा वह मृत हिरनी के साथ शावक को भी ले आया । कुछ दिन किसी के पास रहकर किसी बालिका को लेखिका का स्मरण हो गया होगा । वही शावक को उसी अवस्था में लेखिका के पास ले आई ।

२. सोना हिरनी लेखिका के प्रति किस प्रकार अपने स्नेह का प्रदर्शन करती थी ?

उ : लेखिका के प्रति सोना हिरनी कई प्रकार के स्नेह प्रदर्शन करती थी । कभी दूर से खड़े होकर या कभी पीछे से छलांग लगाती और सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती देखने वालों को भय रहता कि मेरे सिर पर चोट न लग जावे । लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता । भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती । मेरी साड़ी का छोरमुँह में भर लेती और कभी कभी पीछे से चोटी ही चबा लेती ।

३. महादेवी जी ने कुत्ते और हिरनी के स्वभाव में कैसे अन्तर स्पष्ट किया है ?

उ : कुत्ता स्वामी भक्त होता है । स्वामी और सेवक में अन्तर जानता है स्नेह से बुलाने पर दुम हिलाकर पास आ जाता है। डराने पर भय से दयनीय बनकर दुबक जाता है । पर हिरन यह अंतर नहीं जानता । वह केवल स्नेह को पहचानता है डराने पर डरता नहीं, बल्कि बड़ी बड़ी आखों से चकित्त होकर अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि डालकर खड़ा रहता है । मानो यह पूछता है, क्या यह उचित है ।

४. आश्रम की छात्राओं का सोना हिरनी के साथ कैसा व्यवहार था ।

उ : सोना हिरनी के छात्रावास में आते ही सभी छात्राएँ दौड़ कर उसके पास चली आती हैं। कोई उसके माथे पर कुमकुम लगा देती है कोई उसे पूजा के बतासे खिलाती है, कोई खुशी से उसके गले में रिबन बांध देती । इसप्रकार छात्राएँ अपने प्रेम तथा आदर का भाव सोना हिरनी को व्यक्त करती हैं ।

५. सोना हिरनी का अन्त किस प्रकार हुआ ?

उ : लेखिका के बद्रीनाथ यात्रा पर जाने के बाद सोना प्राय: आश्रम की सीमा लाँघ जाती थी। इसलिये माली उसे लम्बी रस्सी से बाँधकर रखता था । एक दिन बह अपनी सीमा भूल इतनी ऊँचाई तक उछली की रस्सी के बंधन के कारण उसका मुख धरती पर आ गिरा और उसका अन्त हो गया ।

दीर्घप्रश्नोत्तर

१. ''सोना हिरनी'' के कथ्य को स्पष्ट करते हुए इसमें 'प्राणी मात्र के लिये अद्‌भुत संवेदनशीलता के दर्शन भी होते हैं ।'' इस कथन की पुष्टि कीजिये ।

उ : महादेवी वर्मा ने जहाँ अपने व्यक्तिगत सुख-दुख को व्यक्त किया है वहाँ संस्मरण और रेखाचित्रों में समाज में उपेक्षित पीड़ित पात्रों को लेकर उनके दुख-दर्द को स्वर भी प्रदान किया है ।

महादेवी जी के निबंध में सबसे बड़ी बात उनकी मानवीय संवेदना और भावात्मक परिधि का विस्तार है । मनुष्य इसलिये मनुष्य है कि उसमें पशुपक्षी, कीटपतंग, जड़ चेतन सभी को अपना स्नेह प्रदान की क्षमता है । महादेवी वर्मा ने मनुष्यत्व की इसी उच्चतर भूमि में अपनी भावनाओं को प्रतिष्ठित किया है । महादेवी जी ने अपने गूढ़ चिन्तन परक प्रणाली से अपने अनुभूतियों तथा विचारों को रेखाचित्र, संस्मरणों तथा निबंधों द्वारा हम तक पहुँचाया है ।

प्रस्तुत रेखाचित्र में प्राणीमात्र के लिये उनके हृदय में जो संवेदना है उसी की पुष्टि वे यहाँ करती हैं । इसमें सोना हिरनी नामक शावक के सौन्दर्य तथा आचरण का आतंरिक एवं आत्मीय भावना का रेखाचित्र खींचा गया है ।

सोना शावक के रूप में लेखिका के पास लाई गई थी । सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था । उसकी व्यथा कथा मनुष्य की निष्ठुरता ने गढ़ी थी । किसी शिकारी के वाणों की शिंकार हुई उसकी माँ के साथ उसे भी अपने साथ ले आया । किसी तरह नन्हीं शावक लेखिका के पास पहुँच गई । वह बड़े प्यार से लेखिका के पास पलने लगी । आश्रम के लोग उसे प्यार से सोना, सुवर्णा, स्वर्णलेखा आदि के नाम से पुकारते थे ।

बेचारी सोना मनुष्य की निष्ठुर मनोरंजनप्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव समाज में आ पड़ी थी ।

सोना आश्रम के एक-एक व्यक्ति की पहचान बन गई थी । रात होते ही वह उनके पलंग के नीचे सटकर बैठ जाती । कभी कभी जब मैं उसे डाँटती तो वह अपनी बड़ी बड़ी गोल चकित आखों से ऐसी अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एक टक देखने लगती कि हँसी आ जाती । पालने पर पशु पशु न रहकर ऐसा स्नेही संगी बन जाता है यह मैंने सोना हिरनी से जाना ।

लेखिका ने बिल्ली गोधूली, कुत्ते हेमन्त, कुत्तिया फ्लोरा सबके साथ जब सोना का परिचय कराया तो सभी इस नये अतिथि को देखकर रुष्ट हुए परन्तु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे सरल संबंध कर लिया ।

लेखिका ने कुत्ते और हिरनी के स्वाभाविक अन्तर को स्पष्ट करने हुए लिखा है कि कुत्ता स्वामीभक्त होता है तथा स्वामी के क्रोध एवं स्नेह की प्रत्येक मुद्रा से परिचित होता है । स्नेह से बुलाने पर वह गद्गद होकर चला आता है और क्रोध करने पर दुबक कर दयनीय बनकर पीछे हट जाता है, पर हिरन यह अन्तर नहीं जानता उसका अपने पालने वाले से डरना कठिन है । क्रोध करने पर वह वहीं खड़ा चकित तथा विनय भरी आँखों से मालिक के सामने खड़ा रहेगा मानो पूछता हो क्या यह उचित है ? वह क्रोध और प्रेम में अंतर नहीं समझता । धीरे धीरे सोना हिरनी का शरीर सुन्दर और आकर्षक दिखाई देने लगा । वह धीरे धीरे यौवन में पदार्पण करने लगी वह अपने प्रिय साथी की खोज में लगी थी । शायद उसमें सहवास करने की स्वाभाविक इच्छा भी जाग रही थी ।

सोना छात्रावास की छात्राओं से ऐसे घुलमिल गई थी कि उसके बिना किसी का मन नहीं लगता था । कोई उसके गर्दन में रिबन बाँधता, कोई पूजा के बतासे खिलाता । कभी कभी वह मेस में भी चली जाती, कोई न कोई कुछ न कुछ खाने को उसे दे देते । लेकिन उसे केवल बिस्किट ही अच्छा लगता था।

आश्रम की कुत्तिया फ्लोरा ने बच्चे दिये थे । सोना उनकी खूब देखभाल करती । इसी वज़ह से वह घूमने भी नहीं जाती । उन बच्चों की सुरक्षा हेतु वह उन्हीं के पास रहती । फ्लोरा को सोना पर ही भरोसा था, इसलिये अपने बच्चों को उसके पास छोडकर वह घूमने चली जाती । सोना को भी उन बच्चों से लगाव हो गया था ।

अन्त में सोना की करुण अन्त की कथा बताते हुए लेखिका लिखती हैं कि वे बद्रीनाथ की यात्रा पर गई हुई थीं । सोना प्राय: आश्रम की सीमा लाँघकर जाती थी । उसके शत्रुओं की दृष्टि उस पर पड़ गई थी । मानव रूपी गिद्धों से

बचाने के लिये माली एक लम्बी रस्सी से उसे बाँधता था । एक दिन वह अपनी सीमा भूल इतनी ऊँचाई तक उछली कि रस्सी के बंधन के कारण उसका मुख धरती पर आ गिरा और उसका अन्त हो गया ।

इस प्रकार किसी निर्जीव वन में जन्मी और जन संकुलता में पली सोना की करुण कथा का अन्त हुआ। महादेवी जी का यह रेखाचित्र अत्यन्त मर्मस्पर्शी बन गया है, साथ ही मनुष्य की क्रूरता एवं उसकी पशुवृत्ति को दर्शाया है । इससे स्पष्ट हो जाता है प्राणी मात्र के प्रति महादेवी जी ने अपूर्व अनुराग और अद्भूत संवेदनशीलता का परिचय दिया है ।

अतिथि

रामविलास शर्मा

व्याख्या भाग :

१. **यदि मीठी मीठी बातें .... दॉव सोच रखा है ।**

प्रस्तुत पंक्तियाँ को 'अतिथि' निबंध से लिया गया है जिसके लेखक रामविलास शर्मा जी हैं। इन पंक्तियों में लेखक ने आज के जमाने में कोई अतिथि को मुफ्त में भोजन नहीं खिलाता उसके पीछे उसका कोई उद्देश्य जरूर होगा । इस बात की पुष्टि करते हुए सावधान रहने को कहा है ।

इन पंक्तियों में लेखक अतिथियों को सावधान करते हुए कहते हैं कि इस समय यदि कोई अतिथियों को मीठी मीठी बातें कहकर या अतिथि सत्कार की दुहाई देकर भोजन के लिये आग्रह करता हो तो सावधान रहिये वह आपके ज्ञान अथवा हुनर से मुफ्त काम लेना चाहता है । बहुत सी चिकनी चुपडी बातें जैसे आप नहीं खायेंगे तो उनके लिये उनका भोजन विष के समान है । और इस प्रकार डालडा की पूरियाँ तथा कद्दू की सब्जी खिला कर बातोंबातों में अगर लेखक हैं तो आपसे कोई अच्छा लेख लिखवा लेगा । इसलिये आज के जमाने के अतिथि सत्कार से सावधान रहें ।

२. **आप सोचिये, चौबीस घंटों में........ नजात मिली हो ।**

प्रस्तुत गद्यांश 'अतिथि' नामक निबंध से लिया गया है जिसके लेखक रामविलास शर्मा जी हैं ।

इन पंक्तियों में लेखक ने समय का ध्यान न रखकर असमय आ जाने पर कौन सी परेशानी उत्पन्न होती है उसपर चर्चा की है ।

शर्मा जी कहते हैं कि हमारे यहाँ रात दिन, चौबीस घंटे, हर घण्टे, हर मिनिट, जब तब अतिथि आ धमकते हैं । जिससे हमारी दिनचर्या बाधित हो जाती है । अपनी दुर्दशा देखकर वे कहते हैं । वे लोग धन्य हैं जिन्हें रात को अतिथियों को झेलना नहीं पड़ता । वरना रात की नींद भी अतिथियों के नाम हो जाती है ।

३. सौभाग्य से नींद पूरी करके....... अंगद का पैर बनकर रहगये ।

प्रस्तुत पंक्तियाँ को 'अतिथि' 'निबंध से लिया गया है। इसके लेखक रामविलास शर्मा जी हैं। लेखक ने अतिथियों के असमय आने तथा अमूल्य समय नष्ट करने की बात कही है ।

लेखक कहते हैं कि दुपहर का खाना खाकर नींद लेकर हाथ मुँह धोकर जब किसी को खाली समय में पत्र लिखने बैठे हो तब भी अतिथियों को चैन नहीं । काम करते देख भी कहते हैं छुट्टियों में क्या काम करने बैठ गये । शिष्टतावश आपने काम समाप्त करने की बात कही नहीं कि बरस पड़ेंगे । छुट्टियाँ हो गई हैं और तुम्हें कल की पड़ी है और इधर उधर की बात करके वहीं जम जायेगें । अंगद के पैर की तरह है और जाने का नाम ही नहीं लेंगे । सारा काम करने का मूड खराब कर देंगे ।

४. अगर इस लेख को मैं .... कोई और ही होंगे ।

प्रस्तुत पंक्तियाँ रामविलास शर्मा द्वारा लिखित 'अतिथि' निबंध से ली गई हैं। यहाँ पर लेखक ने अतिथियों से छुटकारा पाना असंभव है चाहे आप कुछ भी कर ले पर चर्चा की है।

लेखक ने अन्त में यही कहा है कि चाहे इस लेख 'अतिथि' को मैं भढ़वा के अपने घर पर टाँग भी दूँ तो भी अतिथि इस पढ़ने के बहाने यहीं टिक जायेगें उनकी स्थिरता एवं जडता में कोई अन्तर नहीं आने वाला है। लेखक को

अतिथियों का एक कटु अनुभव इन पंक्तियों में नजर आता है तथा वे ऐसे अतिथियों से सबको सावधान रहने के लिये कहते हैं, लेकिन ऐसा असंभव है ।

१. अतिथि निबंध की समीक्षा कीजिये ।

अथवा

अतिथि शीर्षक निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखिये ।

राजनीति प्रतिबद्धता एवं मार्क्सवादी चिन्तनधारा के लेखक रामविलास शर्मा 'तार सप्तक' के कवि हैं । ये विचार प्रधान एवं व्यक्ति व्यंजक निबंधकार के रूकप में प्रसिद्ध हैं ।

प्रस्तुत निबंध अतिथि एक व्यंगात्मक शैली में लिखी रचना है । अचानक आ धमकने वाले अतिथियों या उससे उत्पन्न परेशानियों का अपना अनुभव लेखक ने बड़े ही सरस शैली से बताया है ।

भारतीयों का 'अतिथि सत्कार' विश्व प्रसिद्ध है अतिथि देवो भव की सीख में चलने वाले भारतीय समाज में लेखक को भी शिष्टतावश अतिथियों को झेलना पड़ता है । ''न तो निगलते बनता है और न ही निकालते ही बनता है'' वाली बात हो जाती है ।

लेखक कहते हैं हमारे देश में अतिथि जो बिना तिथि बताये आपके भोजन में शरीक होने आ जाते हैं । लेकिन आजकल इस मँहगाई के जमाने में अतिथि सत्कार केवल चाय पानी तक ही सीमित रह गया है । हमारे यहाँ जिस प्रकार अतिथियों का जिस प्रकार आना अनिश्चित है उसी प्रकार जाना भी अनिश्चित है । जैसे हमारे यहाँ अतिथि बनकर आकर हमें कृतार्थ कर रहे हैं ।

अतिथियों द्वारा किस प्रकार दिनचर्या पर विघ्न पड़ता है तथा कैसे कैसे परेशानियों का सामना करना पड़ता है इसका अत्यन्त सरल शैली से शर्मा जी ने इस निबंध में चर्चा की है ।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

१. **लेखक ने 'अतिथि' शब्द को किस प्रकार परिभाषित किया है ।**

उ : लेखक के अनुसार अतिथि शब्द से तात्पर्य यह है कि जिन्हें तिथि का ज्ञान नहीं होता जो असमय ही किसी भी घर के मेहमान बन जाते हैं तथा जाने का नाम नहीं लेते । जो घड़ी, पल, घण्टा तथा पहर का बिना ध्यान किये अचानक आ धमकते हैं यानि ''मान न मान मैं तेरा मेहमान'' को चरितार्थ करते हैं ।

२. **किसी अध्यापक के घर असमय अतिथि पहुँच जायें तो अध्यापक की क्या दशा होती है ?**

उ : यदि किसी अध्यापक के घर असमय अतिथि पहुँचते हैं तो अतिथि अध्यापक के लिए यमदूत के संदेश से कम भयावह नहीं होते । इसपर अतिथि का यह कहना ''मैं थोड़ी ही देर बैठूँगा, आप शायद काम कर रहे थे'', जले में नमक छिड़कने जैसा प्रतीत होता है, इस प्रकार अध्यापक की दयनीय दशा हो जाती है । और मन कहता है कि कह दें 'आप जैसे आएँ है वैसे ही उलटे पाँव लौट जाइए इस में मेरा भला है'' ।

३. **दोपहर के भोजन के बाद जब नींद लगी हो तब अतिथि की आवाज कैसी लगती है ?**

उ : भोजन के पश्चात अतिथि की आवाज ब्रह्माण्ड सोटें की तरह ऐसे गिरती है कि स्वप्न-सत्य सब एक हो जाता है। जैसे टारपिड़ो लगने से जहाज का मल्लाह चौंक उठता है वैसे ही कुछ क्षण को तो हृदय-वीणा के तार ऐसे झनझना उठते हैं जैसे उसकी तुम्बी पर पत्थर पड़ रहे हों ।

४. **'अतिथि' निबंध के माध्यम से निबंधकार ने क्या कहना चाहा है ?**

उ : 'अतिथि' निबंध के माध्यम से लेखक ने आज की महँगाई और व्यस्तता भरे जीवन में अतिथि को एक बोझ माना है तथा चाय पानी देकर ही उसे रुकसत करना चाहता है । लेखक एक अध्यापक होने के कारण अपने विषय पर चिंतन मनन करने के लिए शांत वातावरण चाहता है, परन्तु असमय अतिथि के आ जाने पर उसे परेशानी का सामना करना पड़ता है । 'मान ना मान मैं तेरा मेहमान' मुहावरे को आज के अंतिथि चरितार्थ करते हैं। उन्हीं पर लेखक ने इस रचना में व्यंग्य किया है ।

४. लेखक अपनी इस रचना को दीवार पर क्यों टाँगना चाहते हैं ?

उ : अतिथि इस प्रकार चले आने से मेजबान पर किन किन मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है और उन्हें किन किन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, इन्हीं बातों पर विचार करते हुए लेखक ने 'अतिथि' निबंध की रचना की है ताकि अतिथि उन्हें पढ़े और उनके घर बेसमय आकर उनके कार्य में बाधा न डालें, लेकिन यहाँ के मेहमान तो इतने बेशर्म हैं कि लेखक की इस रचना की प्रशंसा करते हुए यहीं आ धमकेंगे और लेखक का समय नष्ट करेंगे।

आधुनिकता और साहित्य

डॉ नगेन्द्र

व्याख्या-भाग

१. **आधुनिकता का संबंध ....प्रत्येक युग में बदलाता रहता है ।**

प्रस्तुत निबंधांश निबंधकार नगेन्द्र द्वारा रचित 'आधुनिकता और साहित्य' नामक शीर्षक से उद्धृत किया गया है ।

उक्त पंक्तियों में लेखक ने आधुनिकता को परिभाषित किया है ।

इन पंक्तियों में लेखक ने आधुनिकता पर विचार करते हुए कहते हैं कि आधुनिकता संपूर्ण रूप से वर्तमान सापेक्ष है और वर्त्तमान हमेशा से समय सापेक्ष रहा है। समय के बदलने के साथ वर्तमान भी बदलता रहता है । इसलिए आधुनिकता का भी बदलना स्वाभाविक है । प्रत्येक युग में समय के साथ समाज बदलता है और समाज के साथ मनोवृत्तियाँ भी बदलती हैं और अतीत के धरातल में भविष्य की आकांक्षाओं में वर्त्तमान का निर्धारण होता है । अत: युग के बदलने के साथ साथ आधुनिकता की परिभाषा भी बदलती जाती है ।

२. **बौद्धकाल आज प्राचीन............. गुजर चुका है ।**

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'आधुनिकता एवं साहित्य' से ली गई हैं। इसके रचयिता नगेन्द्र जी हैं ।

पुरातन इतिहास में गुजर चुके समय की अधुनिकता पर विचार किया गया है ।

नगेन्द्र जी कहते हैं कि बौद्ध काल समय और काल विधि के अनुसार बहुत पुरातन है मगर कभी अतीत के पृष्ठ-भूमि में वह आधुनिक रहा होगा ।

लेखक कहते हैं कि यद्यपि भारतीय इतिहास में आधुनिक युग का आरम्भ एक प्रकार से २८ वीं शती के उत्तरार्ध से माना गया है, लेकिन यह युग भी अधुनिकता के अनेक बदलाव से होकर गुजरा है । फिर भी १८ वीं शती की आधुनिकता तो पुरानी होने के बावजूद १९ वीं शती को भी विपर्याय माना गया है । अत: लेखक कहना चाहते हैं कि हर युग में समय के साथ आधुनिकता बदलती है ।

३. आधुनिकता की धारणा का मूल......... उस समय नहीं हुआ था ।

उपर्युक्त पंक्तियाँ नगेन्द्र द्वारा रचित के 'आधुनिकता और साहित्य' नामक निबंध से ली गई है ।

प्रस्तुत निबंध में निंबंधकार ने आधुनिकता और परिवेश की सामंजस्यता पर विचार किया है ।

लेखक कहते हैं कि जब भी हम आधुनिकता पर विचार करते हैं तो उसका मूल आधार ऐतिहासिक चेतना को ही मानते हैं । इतिहास के अतीत में सोची गई विकसित भावना ही भविष्य में 'आधुनिक' बन जाती है । अतीत और भविष्य से अलग मध्ययुगीन दृष्टि को आधुनिक कहा जाता है । इसलिए आधुनिकता इनसे भिन्न है क्योंकि इसमें इतिहास बोध मिलता है । या यूँ कहिए कि अपने समय के पर्यावरण के प्रति यह बहुत सजग होता है । मध्ययुग या पुरातन काल भी अपने परिवेश से अछुती नहीं रहती लेकिन फिर भी वह उससे इतनी प्रबुद्ध नहीं होती क्योंकि उस समय इतिहास की चेतना का विकास हुआ ही नहीं था । आधुनिकता में इतिहास की चेतना में समय और परिवेश का सामंजस्य मणिकांचन की तरह हुआ है ।

४. आधुनिक दृष्टि में .... मानकर यह नहीं चलती ।

प्रस्तुत पंक्तियाँ नगेन्द्र द्वारा रचित निबंध 'आधुनिकता और साहित्य' से ली गई है ।

निबंधकार ने प्रस्तुत पंक्तियों में आधुनिक और नवीन को एक दूसरे का पूरक माना है, क्योंकि नवीन विचार ही आधुनिकता का पृष्ठपोषक है ।

लेखक कहते हैं कि आधुनिकीकरण में नवीनता के प्रति स्वाभाविक आकर्षण बना रहता है और यही आधुनिकता का प्रमुख तत्व भी है । वर्तमान परिस्थिति में जैसा जो है वैसा ही लेकर उसमें नये विचार, नयी भावनाओं को गुँथा जाता है । लेखक का मानना है कि परम्पराओं के साथ आधुनिकता चलती रहती है लेकिन पुरानी परम्परा जो जीर्ण हो गई है उसे त्याग कर नयी पद्धति को अपनाना आधुनिकता का प्रतीक है । नये जीवन के लिए आधुनकिता और विकास की आवश्यकता है ।

५. **आधुनिक का परिभाषिक .... कबीर अधिक आधुनिक है ।**

उ : प्रस्तुत पंक्तियाँ नगेन्द्र द्वारा रचित 'आधुनिकता और साहित्य' से उद्धृत हैं ।

यहाँ निबंधकार ने आधुनिक शब्द को परिभाषित करने की कोशिश की है और आधुनिक को विशिष्ट धारणा मानते हुए समय परिबद्ध किया है । हर युग अपने आप में आधुनिकता से परिपूर्ण रहा है, मध्ययुग के रोमी दार्शनिक की अपेक्षा अरस्तू अधिक आधुनिक हैं, तो शंकराचार्य की अपेक्षा बौद्ध धर्म अधिक आधुनिक है । इसी प्रकार हिन्दी साहित्य में सूरदास की अपेक्षा कबीर अधिक आधुनिक है ।

कबीर से सूर बहुत बाद में आए, लेकिन विचारों के दृष्टिकोण से सूर प्राचीन पड़ते गए और कबीर अधिक आधुनिक लगे । इसलिए आधुनिक को काल सीमा में बाँधकर नहीं देखना चाहिए ।

६. **अणुशक्ति का अनुसंधान .... काफी नजदीक ही है ।**

उ : प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्य-गौरव के नगेन्द्र द्वारा रचित 'आधुनिक और साहित्य' से उद्धृत हैं।

लेखक प्रस्तुत पंक्तियों में विज्ञान की उपलब्धि अणु शक्ति के अनुसंधान तथा अंतरिक्ष विजय आदि में वर्तमान जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है तथा इससे विश्व में भय की छाया साफ दिखाई दे रही है मानव की इसी विभीषिका को लेखक चिन्तित दिखाई दे रहे हैं ।

लेखक कहते हैं कि विज्ञान की नवीनतम उपलब्धियाँ अणु-शक्ति का अनुसंधान, अंतरिक्ष विजय आदि ने मानव में अचेतन तथा अवचेतन मन का उद्‌घाटन किया है। इसके प्रभाव को जन साधारण केवल परोक्ष रूप में ग्रहण करते हैं तो बुद्धिजीवी वर्ग (कलाकार) अपनी सुख संवेदनाओं द्वारा इसके सूक्ष्म प्रभावों को सीधे ग्रहण करते हैं । इसमें संदेह नहीं है कि अणु शक्ति आदि के प्रयोग से सारे विश्व में सत्ता संघर्ष की धरातल को एक आधार मिल रहा है । और पूरे ब्रह्माण्ड में प्रलय की संभावना अवश्यभावी हो गयी है जिससे समय समय पर राजनीतिक भूकम्प ऊत्पन्न होते रहते हैं जिससे आम जनसाधारण के संवेदनशील व्यक्ति के मन में नजदीक आते हुए एक अनजाने खतरे का भय बना ही रहता है । इसलिए सभी इस अणुशक्ति को लेकर चिन्तित दिखाई देते हैं ।

७. आधुनिकता की चेतना......... निर्णायक तत्व है आनन्द और कल्याण ।

उ : प्रस्तुत गद्यांश गद्य-गौरव के ''आधुनिकता और साहित्य'' से लिया गया है इसके रचयिता नगेन्द्र जी हैं ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने जीवन में आधुनिकता की चेतना और साहित्य सर्जना को एक ही विधि माना है । दोनों के लिए अनुभूति का होना अनिवार्य माना है । प्रस्तुत पंक्ति में इसी पर चर्चा की गई है ।

आधुनिकता की चेतना जितनी प्रछन्न तथा जितनी अन्तर्व्यापी होगी वह समाज के लिए उतनी उपयोगी होगी । साहित्य सर्जना में भी अन्तर्निहित अनुभूति की आवश्यकता होती है तभी वह साहित्य समाज में ग्रहणीय होगी । इस प्रकार कहीं न कहीं आधुनिकता और साहित्य सृजन में अनुभूति का तारतम्य जुड़ा हुआ है । किसी विधि को लेकर साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है क्योंकि प्रबल अनुभूति की सफल अभिव्यक्ति अर्थात् जिस भी चीज को अनुभव किया जाए वह अन्तरात्मा से की जानी चाहिए और उसकी अभिव्यक्ति भी स्वतन्त्र होनी चाहिए, तभी वह साहित्य का मूल तत्व

कहलाएगा । इसी तत्व के आधार पर ही उस साहित्य के गुण और स्वरूप का आकलन किया जा सकता है क्योंकि अनुभूतिहीन साहित्य समाज को दिग् भ्रमित कर सकता है। और ऐसे समाज में आधुनिकता की चेतना लाना कठिन हो सकता है । अनुभूति के मूल्यांकन की कसौटी उसके मानवीय गुणों द्वारा की जाती है, और मानवीय गुण के मूल आधार हैं आनंद और कल्याण । अगर किसी साहित्य में विश्व कल्याण का आदर्श न हो एवं जिसे पढ़कर मनुष्य के जीवन में आनंद की स्थापना न हो तो वह साहित्य नीरस है,इसी प्रकार मानवीय भावना तथा विश्व कल्याण से रहित आधुनिकता समाज के लिए विकासहीन है । अत: सत्य और मानवीय गुणों पर आधारित साहित्य तथा आधुनिकता देश तथा समाज को विकास की ओर ले जाती है ।

संक्षिप्त प्रश्नोत्तर

प्र.१. 'आधुनिकता समय सापेक्ष है '' समझाइए ?

उत्तर – आधुनिकता एक विशेष कालावधि का द्योतक है। आधुनिकता का संबध वर्त्तमान से है और वर्त्तमान समय-सापेक्ष होता है। समय-सापेक्ष एक प्रकार की धारा है जो भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न होती है। उदाहरण स्वरूप, भारतीय इतिहास में आधुनिक युग का आरम्भ १८ वीं शती के उत्तरार्ध में माना जाता है। जब की देश के दक्षिण -पश्चिम और पूर्वी प्रदेशों में ब्रिटिश शासन पहले ही हो गया था। इसकी रूपरेखा १८५७ के बाद सामने आई।

प्रश्न २- 'कालवाचक' अर्थ से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – 'कालवाचक' से तात्पर्य यह है कि यह वर्त्तमान को बताने वाला है और वर्त्तमान हर युग में बदलता रहता है। सामान्य अर्थ में आधुनिक अतीत से भिन्न है या हम यह भी कह सकते हैं कि नये को बताने वाला है। इस प्रकार आधुनिक का संबध हमारे वर्त्तमान युग से नहीं रह जाता। पुराने इतिहास में भी आधुनिकता रही होगी, मगर आज यह पुराने हो गए हैं। उदाहरण स्वरूप, बौद्ध काल आज प्राचीन बन चुका है परन्तु जब इसकी शुरूआत हुई थी तब यह आधुनिक था।

प्र.३- विचारपरक अर्थ में 'आधुनिकता' को परिभाषित कीजिए ?

उत्तर - विचार की दृष्टि से आधुनिक एक विशिष्ट दृष्टिकोण है। मध्ययुगीन विचार पद्धति से अलग नए जीवन-दर्शन का वाचक है, जिसमें ऐतिहासिकता घुली-मिली है। आधुनिकता की मूल-धारणा में ऐतिहासिक चेतना के दर्शन होते हैं। विचारपरक अर्थ में आधुनिक को समय-सीमा में नहीं बाँधा जा सकता बल्कि यह एक विशिष्ट धारणा का परिचायक है।

प्र. ४. 'अस्तित्ववाद' का क्या अर्थ है ?

उत्तर - किरके गार्द ने आस्था के माध्यम से और नास्तिक सार्त्र ने अनास्था के माध्यम से क्षण-केन्द्रित जीवन के आधार पर अपने-अपने ढंग से अस्तित्ववाद की स्थापना की है। अस्तित्व मनुष्य का एकमात्र सत्य है और वर्त्तमान क्षण का अनुभव एक मात्र सत्य है। और इस क्षणवादी धारणा की देन अस्तित्ववाद है।

प्र.५ -अस्तित्ववाद का आज के समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

उत्तर - आज के विनाशकारी विज्ञान युग में आस्तित्ववाद का साम्राज्य बहुत बढ़ गया है। चोरी, व्यभिचारी, कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, जमाखोरी आदि का जन्म अस्तित्व से ही हुआ है। अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए मनुष्य हर तरह से व्यभिचारी हो गया है। आध्यात्मिक नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों के विघटन के फल-स्वरूप आधुनिकयुग के प्रतिनिधि जिस जीवन-दर्शन का विकास हुआ है वह अस्तित्ववाद के कारण ही है।

प्र.६. आधुनिकता के प्रेरक एवं निर्वाचक तत्व क्या हैं ?

उत्तर - वर्तमान में आधुनिकता के प्रेरक तत्व अणु-शक्ति का अनुसंधान, अंतरिक्ष-विजय और अन्तर्जीवन में चेतन और अवचेतन मन का उद्घाटन जिससे मानव जीवन और उसकी चेतना पर इसका प्रभाव पड़ा है और बुद्धिजीवी वर्ग का कलाकार अपनी सूक्ष्म संवेदनाओं के द्वारा इनके प्रभावों को सीधा ग्रहण करता है और जनसाधारण इसके स्थूल प्रभावों से प्रभावित होता जा रहा है जिससे सार्वभौम की संभावना नजर आ रही है ।

प्र.७. पाश्चात्य विचारकों ने आधुनिकता की क्या व्याख्या की है ?

उत्तर - पाश्चात्य विचारकों ने आज की आधुनिकता को एकमात्र अंधेरा और अवसाद भरा माना है। वे आधुनिक युगबोध की निराशामयी व्याख्या करते हैं। क्या ऐसी आधुनिकता आज के युग में मूल्यवान है या मूल्यहीन ।

प्र.८. साहित्य के संदर्भ में आधुनिकता का क्या महत्व है ?

उत्तर - साहित्य के संदर्भ में जीवन का जिस प्रकार महत्व है उसी प्रकार आधुनिकता के संदर्भ में भी साहित्य का महत्व है और जीवन का संबंध वर्तमान से है और वर्त्तमान भोगलिप्त है। साहित्य के लिए वर्तमान का अनुभव अनिवार्य है क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है इसलिए समाज की अनुभूति साहित्य सृजन का मूल है उसी प्रकार आधुनिकता में भी अनुभूति जरूरी है ।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

१. ''आधुनिकता और साहित्य' नामक निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

उ : ''आधुनिकता और साहित्य'' डॉ. नगेन्द्र द्वारा लिखा हुआ एक गंभीर, विचारोत्पादक स्पष्ट अभिव्यक्ति से पूर्ण निबंध है । इस निबंध में निबंधकार ने दर्शन और मनोविज्ञान का सुन्दर समन्वय किया है । आधुनिकता और साहित्य के समन्वय पर विचार करते हुए कई प्रश्न उठाए हैं और उसका समाधान भी प्रस्तुत किया है ।

डॉ नगेन्द्र कहते हैं कि सर्वप्रथम आधुनिकता समय सापेक्ष है । इसलिए भारतीय इतिहास में आधुनिक युग का आरम्भ १८वीं शती के उत्तरार्ध में मानते हैं जब कि देश के दक्षिण-पश्चिम-पूर्वी प्रदेशों में ब्रिटिश स्थापित हो गया था। यद्यपि आधुनिक भारत की रुपरेखा वस्तुतः १८५७ के बाद विस्फुटित हुई। लेकिन यूरोप के इतिहास में आधुनिक युग का आरम्भ १५वीं शती के युग के आरम्भ के पुनर्जागरण के साथ साथ हो गया था । दूसरी तरफ नगेन्द्र जी

आधुनिकता शब्द का विश्लेषण करते हुए कहते हैं कि आधुनिकता वर्तमान को बताने वाला है । युग के साथ आधुनिकता भी बदलती है । यह अतीत से भिन्न तथा नवीन का धोतक है । पुराने इतिहास में भी आधुनिकता रही होगी जो अब प्राचीन बन चुका है । उदाहरण स्वरूप बौद्ध काल अपने समय में आधुनिक विचारों से संपूर्ण था लेकिन आज वह पुराना हो गया ।

डॉ. नगेन्द्र ने आधुनिक का दूसरो अर्थ पर विचार किया है । उनके अनुसार आधुनिक एक दृष्टिकोण है । ऐतिहासिक चेतना आधुनकिता की मूल धारण है । इसका प्रथम और आधारभूत तत्व है देश काल के साथ जीवन और चेतना का संबंध । जैसे मध्य युग पुरातन-काव्य में जीवन दृष्टि परिवेश से प्रभावित थी । परन्तु वह उसके प्रति प्रतिबद्ध नहीं थी क्यों कि इतिहास की चेतना का विकास उस समय नहीं हुआ था । लेकिन आधुनिकता अपने देशकाल के प्रति, अपने परिवेश के प्रति तथा अपने इतिहास के प्रति प्रतिबद्ध है । जिसमें कल्पना और आदर्श के लिए आकर्षण कम है, और व्यावहारिक एवं यथार्थ परक जीवन दृष्टि के प्रति आकर्षण अधिक है । इसलिए कह सकते हैं कि आधुनिकता और नवीनता एक दूसरे के पर्याय हैं ।

तीसरे अर्थ में नगेन्द्र ने आधुनिक को संकुचित अर्थ में 'समसामयिक' भी कहा है। इस संदर्भ में आधुनिकता केवल वर्तमान का युग-बोध ही रह गया है। दूसरे महायुद्ध की विभीषिकाओं के बाद विज्ञान का विकास अभूतपूर्व वेग से बढ़ गया है। जिससे कुछ परिणाम स्पष्ट दिखाई देते हैं जैसे प्रादेशिक सीमाओं का टूट जाना, देश और काल की बाधाओं का सरल हो जाना और सबसे भयंकर बात हुई शक्ति का संघर्ष। विज्ञान ने इतनी अधिक विनाशकारी सामग्री जुटाई है कि विश्व का संतुलन भंग होने लगा है।

आज मनुष्य अपने अस्तित्व को लेकर चिन्तित है। आज के विनाशकारी विज्ञान युग में अस्तित्व-अर्थ का साम्राज्य बहुत बढ़ गया है। आज हर आदमी अपने अस्तित्व को बचाने के लिए व्यभिचार की सीमा लाँघ गया है। आध्यात्मिक, नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों का विघटन हर क्षेत्र में नजर आ

रहा है। इसलिए पाश्चात्य विचारकों ने आधुनिकता को अवसाद और अंधेरों से भरा हुआ माना है।

आगे नगेन्द्र जी साहित्य के संदर्भ में आधुनिकता के महत्व पर विचार करते हुए लिखते हैं कि जीवन में वर्त्तमान का बहुत महत्व है और वर्त्तमान भोग से लिप्त है और क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है इसलिए साहित्य के लिए वर्तमान का अनुभव अनिवार्य है। जिस प्रकार जीवन की स्थिति अतीत के संस्कार तथा अनागत के स्वप्न के बिना संभव नहीं हो सकती।

अंत में नगेन्द्र जी कहते हैं कि 'आधुनिक' का अर्थ व्यापक और गत्यात्मक ही मानना चाहिए। आधुनिकता का लक्षण युगबोध, परम्परा का संशोधन, विकास की आकांक्षा तथा अपने पर्यावरण के माध्यम से आत्मसिद्धि होना चाहिए। समाज के विघटन, निराशा और अवसाद में किसी भी युग की आधुनिकता सीमित कर देना यर्थाथ-बोध नहीं है। जो जीवन का लक्षण नहीं वह आधुनिकता का लक्षण नहीं हो सकता। आधुनिकता की चेतना साहित्य सर्जना की विधि का ही अंग है। साहित्य तथा आधुनिकता में संप्रेक्षण की क्षमता होनी चाहिए।

प्र. २ 'आधुनिकता और साहित्य' में लेखक की विचार धारा को व्यक्त कीजिए ?

उ : प्रस्तुत निबंध नगेन्द्र द्वारा लिखा गया एक विचारशील निबंध है । जिसमें लेखक ने आधुनिक जीवन की परिभाषा को साहित्य द्वारा परिभाषित किया है । नगेन्द्र कहते हैं कि हर युग में आधुनिकता की परिभाषा बदलती रहती है और हर समय आधुनिकता को लिए हुए होता है । परम्परा के साथ आधुनिकता कभी नहीं बदलती क्योंकि आधुनिकता समय सापेक्ष है । यह एक विशेष समय के अन्तराल को बताने वाला है । सभी समय में एक ही धारा सभी स्थानों पर प्रभावित हो, यह जरूरी नहीं है । विभिन्न स्थानों पर इसका समय भिन्न-भिन्न होता है । जैसे भारतीय इतिहास में आधुनिक इतिहास का आरम्भ १८ वीं सदी के उत्तरार्द्ध को माना जाता है । जब कि दक्षिणी-पश्चिमी पूर्वी

प्रदेशों में ब्रिटिश शासन पहले ही हो गया था जब कि आधुनिक भारत की रूपरेखा 1857 ईं के बाद आई थी । अत: लेखक कहना चाहते हैं कि आधुनिकता समय सापेक्ष है ।

पुरानी परम्पराओं का प्रभाव लगातार चलता रहता है । लेकिन समय के अनुसार उसमें परिवर्त्तन जरूरी है और हर मान्यता समय के अनुसार परिवर्तित होती है । लेखक कहते हैं कि जो पुरानी परम्परा जीर्ण हो गई है उसे त्यागकर नयी पद्धति को अपना लेना चाहिए और रूढ़ियों के विरुद्ध क्रान्ति की आवश्यकता है । समय की माँग के अनुसार हमें अपने विचारों में परिवर्त्तन करना चाहीए । शायद यही आधुनिकता है ।

लेखक के अनुसार आज की बदलती रहन- सहन में अपने अस्तित्व को बचाए रखना मुश्किल हो गया है । पुरानी मान्यताओं के बदलने पर मनुष्य अपने अस्तित्व के लिए चिन्तित है और अपने अस्तित्व को बचाने के लिए वह व्यभिचारी हो गया है विज्ञान ने उसे अमानवीय बना दिया है । विज्ञान विश्व को परमाणु शक्ति के जरिए भयभीत बना दिया है । मानव इसकी विभिषिका को लेकर चिन्तित है ।

आज सामाजिक परम्परा चरमरा गई है । पुरानी मान्यताओं की जगह नयी परम्परा आ गई है । आज मानव असुरक्षित हो गया है । आज विज्ञान के बाद मानव का स्थान आता है । और इसी जीवन दर्शन को आज आधुनिक मान लिया गया है । मनुष्य के हाथ परमाणु शक्ति का एक नया खिलौना आ गया है । जिससे दुनिया में भय का वातावरण फैल रहा है । आज दुनिया में साधन सीमित होते जा रहे है ।

ऐसे में आधुनिक वर्ग का एक संकुचित अर्थ समसामयिक उभर कर सामने आया है । जिसे हम वर्तमान का युगबोध कहते हैं ।

डॉ. नगेन्द्र कहते हैं कि विज्ञान का नियम संगठन है, विघटन नहीं और जीवन का उद्देश्य भी संगठन है, लेकिन आनन्द ही समस्त जैविक जीवन का आधार है । कला का आधार अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यक्ति की सफलता

है । जिस तरह जीवन में वर्त्तमान का बहुत महत्व होता है उसी प्रकार भोग भी अनिवार्य है । साहित्य के लिए वर्तमान का अनुभव जरूरी होता है । क्योंकि साहित्य, समाज का दर्पण है । किसी भी कला की सर्जना के लिए अतीत के संस्कार, और अनागत का स्पप्न बहुत जरुरी है ।

जिस प्रकार किसी भी आधुनिकता को सीमित कर देना यथार्थ नहीं है और जो जीवन का लक्षण नहीं है वह आधुनिकता का लक्षण नहीं हो सकता । उसी प्रकार प्रबल अनुभूति की सफल अभिव्यक्ति ही साहित्य का मूल तत्व है । अनुभूति के मूल्यांकन की कसौटी है उसका मानवीय गुण और मानवीय गुण के निर्णायक तत्व हैं मानव और कल्याण । अंत में लेखक कहते हैं कि आधुनिक का अर्थ व्यापक और गत्यात्मक ही मानना चाहिए तथा युग-बोध, परम्परा का संशोधन अपने पर्यावरण के माध्यम से आत्म सिद्धि, विकास की आकांक्षा आदि है ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने आधुनिकता और साहित्य के विकास को एक दूसरे का पूरक माना है ।

चर्चित कहानियाँ

ठाकुर का कुआँ

प्रेमचन्द

प्र.१. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए ?

उत्तर - "ठाकुर का कुआँ" कहानी के कहानीकार उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द जी हैं। प्रेमचन्द समाज के प्रति प्रतिबद्ध कहनीकार हैं। उनकी कहानियों में समाज की कुरीतियों , राजनीतिक उथल-पुथल, किसानों एवं मजदूरों की दयनीय दशा तथा सामाजिक बंधनों में तड़पती भारतीय नारी के अन्तर्मन का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण मिलता है। प्रस्तुत कहानी में दलित एवं शोषित के प्रति आन्तरिक संवेदना पाठक को सचेत एवं जागरूक बनाती है। 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में भारतीय जाति व्यवस्था की विडम्बना को रेखांकित किया गया। प्रस्तुत कहानी कुछ इस प्रकार है –

गंगी का बीमार पति जोखू पानी पीने के लिए लोटा मुँह में लगाता है , तभी पानी से बदबू आती है और वह गंगी से कहता है कि पानी में बदबू क्यों आ रही है। गंगी कहती है कि कुआँ दूर था इसलिए कल शाम को ही पानी भर लायी थी । लेकिन कल तो पानी में कोई बदबू नही थी जरूर कोई जानवर पानी मे गिर कर मर गया होगा । जोखू यह सुन थोड़ी देर चुप रहता है कुछ देर बाद प्यास के मारे कहता है -"ला थोड़ा पानी नाक बंद करके ही पी लूँ " । मगर गंगी उसे पानी नहीं पीने देती, क्योंकि वह जानती है कि वह गंदा पानी पीने से बिमारी बढ़ जाएगी । मैं दूसरा पानी ला देती हूँ । गंगी की यह बात सुनकर जोखू आश्चर्य से गंगी की ओर देखता है और कहता है – "पानी तो छोड़ो, अगर ठाकुर के कुएँ के पास जाओगी तो हाथ पैर ही तुड़वाओगी । ठाकुर ओर साहुकार तो हम मर भी जायें तो हमारे दरवाजे भी नही आएँगे । ऐसे लोग क्या कुएँ से पानी भरने देंगे।" गंगी जानती है कि जोखू जो कह रहा है, वह कड़वा

सत्य है, फिर भी वह उसे बदबू भरा पानी नहीं पीने देती । गंगी के सामने यह समस्या है कि वह साफ पानी कहाँ से लाए । और रात में वह चुपके से पानी लाने चल पड़ती है । रात नौ बजे ठाकुर के सभी मजदूर सो गए थे। ठाकुर के घर में कुछ कानूनी बातें हो रही है जिससे यह पता चलता है कि ठाकुर पैसे के जोर पर हारे हुए मुकदमे को भी जीत में बदल दिया था । यह सब सुन गंगी सोचने लगती है कि हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँचे हैं इसलिए कि ये लोग गले में तागा डालते हैं, चोरी ये करें, जाल-फरेब ये करें । झूठे मुकद्मे ये करे, मदजूरी करा व र मजदूरी न दें, फिर ये किस बात के लिए ऊँचे हैं । कहने के लिए ऊँचे हैं। इस प्रकार गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी-पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगता है । तभी कुएँ पर किसी के आने की आहट होती है। दो स्त्रियाँ पानी भरने आती हैं, और उनके पानी भरके जाते ही गंगी कुएँ की जगत पर चढ़ जाती है और इधर उधर देखती है कहीं कोई नजर नही आता और आहिस्ते से वह कुएँ से घड़ा डालती है तथा पानी से भरे घड़े को ऊपर खींचने लगती है कि तभी अचानक ठाकुर का दरवाजा खुलता है । घबराहट में उसके हाथ से रस्सी छूट जाती है । ठाकुर चिल्लाता है, कौन है ? कौन है ? आवाज सुनकर गंगी बेतहासा भागती है और घर पहुँच कर देखती है कि जोखू वही गंदा पानी पी रहा है और यहीं कहानी समाप्त हो जाती है ।

उपर्युक्त कहानी में जाति प्रथा और अस्पृश्यता की अमानुष परम्परा ने जीते जागते इंसानों को पशुओं से बदतर बना दिया । प्रेमचन्द ने भारत के इसी घिनौने यथार्थ को 'ठाकुर का कुआँ'' कहानी में प्रस्तुत किया है ।

२. कहानी कथा की दृष्टिकोण से 'ठाकुर का कुआँ' कहानी की समीक्षा कीजिए ?

उ : मुन्शी प्रेमचन्द द्वारा रचित 'ठाकुर का कुआँ' यथार्थवाद पर आधारित है । जातिवाद के कुप्रभाव से दलितों के जीवन की मार्मिक कथा को प्रेमचन्द जी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है ।

कहानी के तत्वों के आधार पर 'ठाकुर का कुआँ' कहानी की समीक्षा निम्नलिखित प्रकार से है–

कथावस्तु :– प्रेमचन्द ने 'ठाकुर का कुआँ' लेखनी में जाति प्रथा, छूआ-छूत, अस्पृश्यता जैसी हीन भावना के कारण निम्न-वर्ग का क्या दुष्परिणाम होता है, गंगी तथा जोखू के माध्यम से हमें दिखलाने की कोशिश की गई है ।

जोखू बीमार है वह पानी पीना चाहता है परन्तु पानी दूषित था । दलित होने के कारण ठाकुर या साहुकार के कुएँ से पानी लेना मना था । पति की यह हालत देख गंगी बहुत साहस जुटाकर ठाकुर के कुएँ से छिपकर पानी लेने जाती है । ऊँच-नीच के इस भेदभाव से उसका मन विद्रोही हो रहा था । ऊँची जाति के लोग सारे दुष्कर्म करने के बाद भी इज्जत की जिन्दगी जीते हैं ।'' रात के सन्नाटे में मौका पाते ही गंगी पानी भरने लगती है । परन्तु जैसे ही घड़ा कुएँ की जगत पर रखने जाती है, ठाकुर का दरवाजा खुलता है। डर के मारे गंगी के हाथ से रस्सी छूट जाती है । ठाकुर, कौन है, कौन है ?'' पूछता है गंगी भाग खड़ी होती है और घर पहुँच कर देखती है जोखू वही गंदा पानी पी रहा था ।

चरित्र-चित्रण : चरित्र चित्रण की दृष्टि से ''ठाकुर का कुआँ'' कहानी में केवल दो पात्र हैं - गंगी और जोखू । पूरी कहानी मे गंगी ही छायी रहती है वह एक साहसी तथा आत्मनिर्भर महिला है । अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करने की भावना प्रबल है । जोखू एक गौण पात्र के रूप में चित्रित है वह गंगी का बीमार पति है। प्यास के कारण गंदा पानी पीने के लिए मजबूर है। दलित होने के कारण ठाकुर के कुएँ का पानी पीने की पाबंदी है । जाति अजाति की इस दोहरी मनोवृत्ति के कारण गंगी का मन विद्रोह करता है । वह सोचती है कि समाज उनके साथ ऐसे दुर्व्यवहार क्यों करता है । समाज में श्रेष्ठ कहे जाने वाले ये लोग व्यभिचारी है सारे दुष्कर्म करते हुए भी इज्जत की जिन्दगी जीते हैं । प्रस्तुत कहानी में जोखू मजबूर दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है तथा गंगी युगों-युगों से पीड़ित दलित वर्ग के उत्थान के लिए विद्रोह कर रहे वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रही है ।

कथोपकथन तथा संवाद

कहानी में नाटक की तरह कथोपकथन की अनिवार्यता नहीं होती । लेकिन कथासूत्र को आगे बढ़ाने के लिए और पात्रों के चरित्र को उभारने के लिए कहीं-कहीं कथोपकथन या संवाद का सहारा लिया जाता है । प्रस्तुत कहानी से कुछ संवाद कहानी के उद्देश्य को लिए हुए है जैसे जोखू दलित और ऊँच-नीच भावना से पीड़ित मजबूर है । निम्नलिखित संवादों से उसकी पुष्टि होती है ।

जोखू आश्चर्य से उसकी और देखता है "दुसरा पानी कहाँ से लाएगी :

"ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे ।

"हाथ पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा।"

गंगी का विरोधी स्वभाव समाज के सफेदपोश लोगों के चरित्र को उजागर करते हुए गंगी द्वारा कहे यह संवाद सशक्त बन पड़े हैं ।

"चोरी ये करें, जाल फरेब ये करें, झूठे मुक़दमे ये करें । अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिये की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद में मार कर खा गया । इन्हीं पण्डित जी के घर में तो बारहों मास जुआ होता है । यही साहुजी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं । काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है । किस बात में हैं हमसे ऊँचे ।

प्रस्तुत कहानी में संवाद सरल एवं संवेदनशील है जो पाठक की संवेदना को उभारकर रख देते हैं। नीच जाति की भावना को प्रेमचन्द जी ने पात्रों के संवादों से उभारा है। अत: हम कह सकते हैं कि संवाद पात्रानुकूल एवं उद्देश्यमूलक हैं ।

देशकाल तथा वातावरण : प्रेमचन्द की कहानियाँ ग्रामीण जन जीवन के उतार चढ़ाव की कहानी होती है जहाँ शोषित वर्ग की प्रधानता होती है । झूठी परम्पराएँ, रूढ़ियों की जंजीरों में निम्नवर्गीय लोग जकड़े हुए होते हैं । इसी वातावरण को दर्शाता है यह कहानी "ठाकुर का कुआँ" गाँव में हो रहे

अमानवीय व्यवहार का चित्रण जोखू एवं गंगी के दयनीय कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । एक तरफ समाज के एक वर्ग को अछूत कह कर अलग रखा गया है तथा घृणा का पात्र बनाया गया है । और वायु और पानी जैसी बुनियादी आवश्यकताओं पर भी उच्च वर्ग का अधिकार दिखाया गया है । आज भी भारत के गाँव में निम्नवर्ग के प्रति जो अमानुषिक अत्याचार हो रहें है । उसकी साफ तस्वीर इस कहानी में दिखाई देती है ।

भाषा शैली : प्रेमचन्द की भाषा बड़ी ही सरल एवं पात्रानुकूल होती है। इस कहानी में जोखू और गंगी पिछड़े गाँव के निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । उनके बोलने का ढंग तथा उनकी भाषा दिखावटी नहीं होकर बहुत ही सहज और मार्मिक है । बड़े से बड़े आदर्श की बातों को भी बड़े ही सरल ढंग से पात्रों के माध्यम से कहलवाना प्रेमचन्द की विशेषता है ।

उद्देश्य : इस कहानी के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त जाति-व्यवस्था के दुष्परिणाम का खौफनाक चित्रण उभर कर सामने आता है । वायु ओर पानी जैसी जीवन की आवश्यकताओं पर भी निम्नवर्ग के लिए पाबंदी दिखाई गई है । जो भारतीय समाज के लिए एक कलंक है । परम्परावादी और रूढ़ियों के प्रति एक विद्रोह है क्यों कि हवा पानी और रोटी पर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है । यह कहानी दलित और शोषित के प्रति आन्तरिक संवेदना से ओतप्रोत है एवं पाठक को इसके प्रति सचेत तथा जागरुक बनाती है ।

हार की जीत

सुदर्शन

१. 'हार की जीत' कहानी की समीक्षा कीजिए ?

उ : हार की जीत' कहानी सुदर्शन द्वारा लिखी गई है । सुदर्शन अपनी कहानियों के माध्यम से ही जाने जाते हैं । इनकी कहानियाँ सामाजिक समस्याओं पर ही आधारित होती हैं। ये आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रभावित थे जिसके कारण इनकी कहानियों में सामाजिक कुरितियों का चित्रण मिलता है तथा उनका समाधान भी दिखाई देता है । इनकी कहानियों में अक्सर उपदेशवादिता और शिक्षा का स्वर सुनाई देता है ।

प्रस्तुत कहानी 'हार की जीत' सुदर्शन जी की शिक्षाप्रद कहानी है । इस क़हानी का पात्र बाबा भारती एक नेक दिल इंसान है । उनके पास एक घोड़ा है, जो रुप रंग और गुण में अद्वितीय है । बाबा उसे अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करते हैं जिस प्रकार माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर आनन्द होता है उसी प्रकार बाबा को अपने घोड़े को देखकर आनन्द प्राप्त होता है । बाबा उसे 'सुल्तान' कह कर पुकारते हैं । उसकी सेवा सुश्रुषा स्वयं अपने हाथों से करते थे । उसके लिए उन्होंने सबकुछ त्याग दिया था । यहाँ तक की नगर जीवन भी । और एक छोटे से मन्दिर में रहकर भगवान का भजन करते थे । अक्सर उन्हें यह भ्रांति होती कि वे सुल्तान के बिना नहीं रह सक़ते । शाम होते ही हर दिन सुल्तान के पीठ पर सवार होकर आठ-दस मील चलकर न लगा लें तो चैन न मिलता ।

उसी इलाके में खडग् सिंह नाम का डाकु रहता था, जिसके नाम से ही सभी लोग काँपते थे । सुल्तान की कीर्ति सुनकर उसे देखने की लालसा होने लगी । और वह एक दिन उसे देखने के लिए बाबा भारती के समक्ष पहुँच जाता है। वह बाबा भरती से कहता है कि मैंने आपके सुलतान की काफी प्रशंसा सुन

रखी है आज उसे देखने की अभिलाषा मुझे यहाँ खींच लायी है । अस्तबल में घोड़े को देख खडग्सिंह के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा । और सोचने लगा कि ऐसा घोड़ा तो मेरे पास होना चाहिए । ये साधु के पास क्या कर रहा है । और बड़े ही चालाकी से उसने बाबा से कहा बाबा इसकी चाल न देखी तो क्या देखा ! बाबा तो मनुष्य ही थे सुल्तान की प्रसन्नता सुनकर उनका मन अधीर हो गया और उन्होंने तुरन्त घोड़े को खोल दिया । घोड़ा अस्तबल छोड़ते ही वायुवेग से दौड़ने लगा । खडग् सिंह उसकी तेज गति को देख गद्‌गद् हो गया । और वह चेतवानी देते हुए बाबा से कहा कि बाबा अब मैं यह घोड़ा आपके पास नहीं रहने दूँगा। बाबा सक्ते में आ गए और डर गए और दिन रात अस्तबल की निगरानी में जुट गए । हर दिन की तरह वह अपने सुल्तान पर सवार होकर प्रसन्न मुद्रा में सैर के लिए निकल पड़े । अचानक आवाज आयी – 'ओ बाबा इस कंगाल की भी सुनते जाना' । करुण आवाज सुनकर बाबा का हृदय पिघल गया और वहीं रुक कर पूछा- 'क्या कष्ट है तुम्हें ?' वह कहने लगा मैं अपाहिज हूँ मुझे अपने गाँव तक पहुँचा दीजिए । बाबा यह बात सुनकर उसे घोड़े पर बैठा दिया और खुद घोड़े की लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे । सहसा लगाम छूट गयी और खडग् सिंह घोड़े को लेकर फरार हो गया । बाबा ने जोर से आवाज लगायी खडग्सिंह रुक जाओ, मेरी एक बात सुनो । आवाज सुन खडग् सिंह रुकता है और कहता है अब मैं घोड़ा नहीं दूँगा और कोई सेवा हो तो बताइए । अच्छा, नहीं मैं घोड़े के बारे में कुछ नहीं कहूँगा । अब यह घोड़ा तुम्हारा हो गया । लेकिन मेरी एक प्रार्थना है इस घटना का जिक्र तुम किसी के सामने मत करना । यह बात सुन खडग् सिंह आश्चर्य से बाबा को देखने लगा वह समझ न पाया कि बाबा क्या कह रहे हैं। और बाबा से पूछा आपको किसका डर है । तो बाबा ने बड़े ही शांत भाव से जवाब दिया कि अगर इस घटना की बात किसी को पता चल जाएगा तो कोई गरीब पर विश्वास नहीं करेगा । बाबा चले गए लेकिन बाबा की बात खडग् सिंह के कानों में गूँजने लगीं । वह बाबा के उच्च विचारों और पवित्र भावनाओं का कायल हो गया और सोचने लगा कि ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता ही हो सकता है ।

रात्रि के अन्धकार में खडग् सिंह चुपके से सुल्तान को बाबा भारती के अस्तबल में बाँध निकल पड़ा । चौथा प्रहर आरम्भ होते ही स्नान के बाद जब

बाबा भारती अस्तबल में आए तब मालिक के पाँव के चापों की आवाज सुनकर घोड़ा हिनहिनाने लगा । बाबा भारती प्रसन्न हो गए और सुलतान को प्यार करने लगे । जैसे कोई पिता अपने पुत्र को गले लगाता है । थोड़ी देर बाद जब वे अस्तबल् से बाहर निकले तो उनकी आँखो से आँसू बह रहे थे । ये आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्ग सिंह खड़ा होकर रोया था ।

दोनों के आँसुओं का उसी भूमि की मिट्टी पर मिलाप हो गया ।

प्रस्तुत कहानी में बुराई पर अच्छाई की जीत दर्शाई गयी है । अपने प्रिय वस्तु का त्याग मानवजाति के हित के लिए करना चाहिए क्योंकि यह त्याग मनुष्य को सत्मार्ग में ले जाने के लिए सहायक होती है ।

कहानी का शीर्षक 'हार की जीत' बहुत ही सशक्त बन पड़ी है । बाबा भारती हार कर भी जीत जाते हैं तथा अपने सरल व्यक्तित्व से खड्ग सिंह जैसे दुष्ट डाकू का भी मन परिवर्त्तन कर देते हैं । अत: कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी एक आदर्श कहानी है ।

२. **कहानी तत्वों के आधार पर 'हार की जीत' का मूल्यांकन कीजिए ?**

उ : 'हार की जीत' कहानी सुदर्शन जी द्वारा लिखी गई है । प्रेमचन्द के सच्चे उत्तराधिकारी सुदर्शन जी से परिचित है सामाजिक समस्याओं पर इनकी पहली दृष्टि रहती है तथा समाज से बुराई को किस प्रकार समाप्त करना चाहिए, इनका मुख्य उद्देश्य रहता है । 'हार की जीत' भी इसी प्रकार की एक शिक्षाप्रद कहानी है ।

कथावस्तु : बाबा भारती का एक घोड़ा है जो कि रूप-रंग, गुण से अद्वितीय है । वे उसे बहुत अपने बेटेकी भाँति प्यार करते थे । प्यार से उसे 'सुल्तान' कहकर पुकारते थे । उनकी ऐसी भ्रन्ति थी कि वे 'सुल्तान' के बिना नही रह सकेगें । डाकू खड्ग सिंह सुलतान की चर्चा सुन उसे देखने आया और उसे देख मुग्ध हो गया था उसे पाना चाहता था । वह बाबा भारती को चेतावनी दे गया मैं घोड़े को आपके पास नहीं रहने दूँगा । एक दिन बाबा भारती घोड़े पर सैर कर रहे थे । डाकू खड्ग सिंह गरीब के भेष में बाबा को धोखा दे कर घोड़ा

को ले भागा । बाबा ने उसे रोककर कहा यह बात किसी से न कहना, वरना कोई मनुष्य किसी गरीब पर विश्वास नहीं करेगा। यह बात सुन खड़ग् सिंह का मन परिवर्तन हो गया और वह घोड़े को बाबा के अस्तबल में बाँध आया, सुबह बाबा घोड़े को देख प्रसन्न हुए और उनकी आँखों में आँसू आ गए । उनका आँसू उसी स्थान पर गिरे जहाँ खड़ग् सिंह के आँसू गिर कर मिट्टी भीग गयी थी ।

पात्र एवं चरित्र चित्रण : कहानी विधा की दृष्टिकोण से प्रस्तुत कहानी में केवल दो ही पात्र हैं इन दो पात्रों के दरम्यान यह पूरी कहानी गुँथी गई है । कहानी में पात्र वही माने रखते हैं जैसे शरीर में रीढ़ की हड्डी । पात्र अपने चरित्र के माध्यम से कहानी को आगे बढ़ाते हैं । बाबा भारती नायक हैं तो खड़ग् सिंह खलनायक । चरित्र के आधार पर बाबा नायक एक आदर्श व्यक्तित्व के नेक इंसान हैं । जो बढ़ती उम्र में संसार की मोहमाया से मुक्त हो चुके हैं । जिसमें आध्यात्मिक गुण कूट कूट कर भरे हैं । दूसरी ओर रचना का खलनायक खड्ग सिंह एक बाहुबली खलनायक है सभी उससे डरते हैं खड्ग सिंह के चरित्र को कहानीकार ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है । प्रस्तुत कहानी में खड्ग सिंह के अर्न्तद्वंद को कहानीकार ने बड़े ही सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है । खड्ग सिंह के भीतर छुपे अच्छे गुण को कहानीकार ने बड़े ही रोचक ढंग से उभारा है । मनुष्य का जानवर के प्रति लगाव और प्रेम को भी इस कहानी का एक हिस्सा बनाया गया है । बाबा भारती और खड़ग् सिह के चरित्र का सही आकलन इस कहानी में किया गया है । और एक आदर्श की स्थापना की गई है ।

संवाद : संवाद कहानी को रोचकता प्रभावमयीता एवं कथा को विकास तथा वातावरण निर्माण में सहायक होते हैं । इस कहानी में भी संवाद बड़े ही सरल रोचक, नाटकीय एवं पात्रानुकूल हैं और दिल को छू जाने वाले हैं । एक ही संवाद पूरे व्यक्तित्व को बदलने की क्षमता रखता है। यथा- बाबा भारती ने उत्तर दिया ''लोगों को यदि इस बात का पता लग जाए तो वह किसी गरीब पर विश्वास न करेंगें । खड्ग सिंह के मन परिवर्तन हो जाने के पश्चात् घोड़े को पुन: अस्तबल में देख बाबा का यह संवाद कि ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा'' । बड़ा ही प्रभावोत्पादक बन पड़ा है । इस प्रकार कई ऐसे संवाद कहानी को रोचक बनाती है ।

देशकाल व वातावरण : – वातावरण की दृष्टि से प्रस्तुत कहानी बड़ी ही स्वाभाविक लगती है । आध्यात्मिक परिवेश पर ही पूरी कहानी चलती है तथा गाँव में डाकुओं का डर भी प्रस्तुत किया गया है । साधारण गाँव की झलक इस कहानी में दिखाई पड़ती है जहाँ जानवरों के प्रति भी मनुष्य में सहानुभूति एवं अपनापन दिखाया गया है । इस प्रकार देशकाल व वातावरण के आधार पर यह कहानी बहुत ही प्रेरणादायक है ।

भाषाशैली : प्रस्तुत कहानी में कहानीकार कथावाचक ही नजर आ रहा है । पूरी कहानी में वह उपदेशात्मक शैली को प्रधानता दी गई है, जो पाठक के हृदय में प्रभाव जमाने में पूर्ण रूप से सफल हुई है । भाषा बोलाचाल की इतनी सरल है कि पाठक को दिमागी कसरत नहीं करनी पड़ती है। और वह कहानीकार के उद्देश्य को तुरंत समझ जाता है । इस प्रकार भाषा और शैली के आधार पर कहानी ही सरल और सहज है ।

उद्देश्य : आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रभावित सुदर्शन बुराई पर अच्छाई की जीत दिखाना चाहते हैं, किस प्रकार हार कर भी व्यक्ति दूसरे के मन को परिवर्त्तन कर सकता है । यही शिक्षा कहानीकार ने कहानी के माध्यम से देनी चाही है ।

३. बाबा भारती एवं खड्ग सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए ?

उ : बाबा भारती का चरित्र चित्रण :

बाबा भारती एक सरल नेक दिल इंसान थे । इंसान तो इंसान, जनवरों के प्रति भी उनके मन में प्यार भरा था। भारती इस कहानी के नायक हैं । उनका इस सांसारिक मोह माया से मन मुक्त हो गया है वे सारा ससांर छोडकर मन्दिर में पूजा पाठ करते हुए अपने घोड़े 'सुल्तान' के साथ बिताते थे । अपना अधिक से अधिक समय भगवत भक्ति में लगाते थे । घोड़ा उनकी कमजोरी है । वे एक परिश्रमी व्यक्ति हैं और अपना तथा घोड़े का सारा काम स्वयं करते थे । बाबा भारती का व्यक्तित्व हृदय परिवर्तन करने की क्षमता रखता है । वे समाज के हित के लिए किसी प्रकार की भी व्यक्तिगत हानि बरदास्त कर सकते थे । बाबा भारती का विशेष गुण सदाचार तथा भावुकता है । बाबा चरित्र के महान थे लेखक ने समाज के लिए ऐसे ही आदर्श व्यक्तित्व के गठन पर जोर दिया है ।

खड्ग सिंह का चरित्र चित्रण : खड्ग सिंह एक कमजोर व्यक्तित्व वाला व्यक्ति है तथा कर्म से डाकू है । लोगों को डरा धमकाकर अपना दबदबा कायम रखता था । खड्ग सिंह का चरित्र बुराई का प्रतिनिधित्व करता है । जो आदर्श के अभाव में भटक गया है लेकिन जैसे ही उसे आदर्श का रास्ता दिखाने वाला मिल जाता है, उसके हृदय के साथ उसका व्यक्तित्व भी परिवर्तित हो जाता है। यह तभी सम्भव हो सकता है जब की व्यक्ति मानवीय गुणों से रिक्त न हो। खड्ग सिंह डाकू होते हुए भी उसका हृदय कोमल है । कोमलता पर अज्ञानवश कठोरता का आवरण चढ़ा हुआ था जिसे बाबा भारती के आचरण ने उठा दिया और खड्ग सिंह का व्यक्तित्व निराशावादी से आशावादी हो गया। खड्गसिंह का दम्भ और घमण्ड आदर्शं के सामने घुटने टेक देता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बाबा भारती और खडग सिंह विपरीत व्यक्तित्व के होते हुऐ भी भावना की धरातल पर एक हो जाते हैं ।

१. 'आदमी का बच्चा' कहानी का कथासार अपने शब्दों में लिखो ?

उ : यशपाल द्वारा रचित 'आदमी का बच्चा' एक मार्मिक कहानी है । आज के संभ्रांत वर्ग में एक प्रकार की झूठी शान के चलते मनुष्य को कर्म के अनुसार जानवर से भी बदर व्यवहार करने लगा है । इस कहानी मैं बगा साहब एक मील में चीफ इंजीनियर के रूप में कार्यरत थे । शिक्षा विलायत में होने के कारण उनका रहन सहन विलायती साहबों जैसा हो गया है । नियम, अनुशासन के इर्दगिर्द ही उन्होंने अपनी जीवन-शैली बना ली है । घर में उनके साथ अंग्रेजी पढ़ी-लिखी अत्याधुनिक पत्नी है, एक छोटी बेटी डौली है तथा उसकी देखभाल करने वाली आया है । डौली एक आधुनिक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने जाती है । उसके लिए बहुत सी पाबंदियाँ हैं। घर के अहाते में ही माली और धोबी का घर है । जिनके अत्यधिक बच्चे होने के कारण आर्थिक परेशानी बनी रहती है ।

डौली अकेलेपन का शिकार है तथा वह उन बच्चों के साथ खेलना चाहती है । वह माली के छोटे से बच्चे को गोद में लेकर खिलाना चाहती है । डौली की माँ को यह सब पसन्द नहीं कि उसकी लड़की इन गंदे बच्चों के साथ मिले जुले । लेकिन डौली का बालसुलभ मन उन बच्चों से खेलने को आतुर है और वह एक दिन चुपके से माली के बच्चों के साथ खेलने चली जाती है । बच्चे को घर पर न पाकर डौली की माँ आया बिन्दी को बहुत डाँटती है । जब उसे पता चलता है कि डौली माली के बच्चे के साथ खेलकर आयी है तो वह डौली को डाँटते हुए कहती है कि माली का बच्चा बहुत गंदा है। ऐसे बच्चों के साथ खेलने वाले गंदे बच्चे कहलाते हैं । तुम उन बच्चों के साथ मत खेला करो । और वह आया को हिदायत देती है कि वह डौली को खेलने के लिए मैनेजर के

घर ले जाया करे । एक दिन डौली अपने कुत्ते के बच्चे को गर्म पानी में डुबो डुबोकर मारते हुए देखती है । बग्गा साहब उस कुत्ते के बच्चे को इसलिए मरवा देते हैं कि कहीं उस नस्ल का कुत्ता किसी और के पास न रह जाए । इस बात का डौली के बाल मनोविज्ञान पर गहरा असर पड़ता है । एक दिन माली का बच्चा भूख से जोर जोर से रोता है । तब डौली बड़े भोलेपन से कहती है कि इसे गर्म पानी में डालकर मार दो । माँ उसे बार बार समझाती है कि आदमी के बच्चे के लिए इस तरह की बातें नहीं कहते । और एक दिन अचानक माली का बच्चा मर जाता है । तब डौली भोलेपन से आया से पूछती है कि माली ने बच्चे को क्या गरम पानी से डुबो दिया ? आया उसे कहती है कि वह भूख से मर गया । भूखसे मरने का मतलब डौली नहीं जानती थी । वह कहती है कि हम भी एक दिन भूख से मर जाऐगें । तब आया झुंझला कर कहती है कि भूख से तो कमीने आदमी के बच्चे मरते हैं । यह कहकर आया का गला रुँध जाता है उसे अपना लल्लू याद आ जाता है । वह दो बरस पहले मर गया । कहानी यहाँ खत्म हो जाती है ।

२. कहानी के तत्वों के आधार पर ''आदमी का बच्चा'' कहानी की समीक्षा कीजिए ?

उ: 'यशपाल' मार्क्सवादी दृष्टिकोण रखने वाले लेखक हैं । परम्परागत मूल्यों और रूढ़ियों के विरुद्ध व्यंग्य उनकी कहानी में झलकता है । पूंजीवाद ही समाज में फैली बुराईयों की जड़ है । प्रस्तुत कहानी अत्यंत संवेदन शील भाव को प्रस्तुत करती है । दीनों , उपेक्षितों और असहायों के प्रति संवेदनता 'यशपाल' जी की इस काहानी में दिखाई देता है । कहानी के तत्वों के आधार पर कहानी की समीक्षा निम्नलिखित है ।

कथावस्तु : बग्गा साहब चीफ इंजीनियर हैं । इनकी शिक्षा-दीक्षा विदेश में हुई है । जिससे उनका रहन सहन विदेशी शैली का अंग बन गया है । संभ्रांत परिवारों के साथ मेल-जोल के कारण उनका जीवन भी दिखावटी हो गया है जिससे उनकी पत्नी को बड़ा ही गर्व है । अंग्रेजी स्कूल में पढ़ रही उनकी बच्ची डौली को माली और धोबी के बच्चों के साथ खेलने को मना ही है । डौली की देखभाल बिन्दी नामक एक आया करती है । डौली की माँ

डौली को हमेशा माली के परिवार में जाने से रोकती है । बग्गा साहब के घर बड़े लोगों के चोंचले हैं। उनके यहाँ एक कुत्तिया है जिनके बच्चों को बग्गा साहब गर्म पानी से डुबोकर इसलिए मरवा देते हैं कि कहीं उस नस्ल का कुत्ता किसी और के घर न रहे । डौली के मन में इसकी छवि अंकी हुई है । एक दिन जब माली का छोटा बच्चा भूख से बिलखकर रोता है तो डौली बड़े ही सहज ढंग से माँ से कहती है कि माली क्यों नहीं अपने बच्चे को गर्म पानी में डुबाकर मार देता। माँ उसकी बात सुनकर आश्चर्य चकित हो जाती है और उसे समझाती है कि आदमी के बच्चे को इस प्रकार नहीं मारते ।

कुछ दिनों बाद माली का बच्चा मर जाता है डौली आया से पूछती है कि माली का बच्चा कैसे मर गया आया कहती है भूख से मर गया । डौली कहती है क्या हम भी भूख से मर जाऐंगे ? आया यह सुन झुंझलाकर कहती है कि 'नहीं' भूख से तो कमीने आदमी के बच्चे मरते हैं ।

इस प्रकार कई प्रश्नों को जन्म देकर कहानी समाप्त हो जाती है ।

पात्र एवं चरित्र चित्रण : कहानी के दृष्टिकोण से एक सफल कहानी में कम से कम पात्र होने चाहिए । इस कहानी में भी कम से कम पात्र हैं । बग्गा, साहब, उनकी आधुनिक पत्नी, उनकी भोली भाली बेटी डौली तथा अज्ञाकारी आया बिन्दी । कहानी के पात्र संभ्रांत वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं तो एक ओर माली और धोबी निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । संभ्रांत परिवारों में किस प्रकार निम्न वर्ग के बच्चे 'आदमी का बच्चा' कहलाते हैं, इसी का चित्रण इस कहानी में हुआ है । इस कहानी में पांत्र सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के शिकार हैं । पढ़े लिखे लोग तथा धनी वर्ग किस प्रकार दिखावटी चलन से युक्त हैं जिससे उनकी भावनाएँ अमानुषिक हो गई हैं । और मानवीय मूल्यों को त्याग कर जानवर बन गए हैं । बग्गा साहब और उनकी पत्नी के मन में घृणा और ऊँच-नीच का भेद भाव है । वे माली के बच्चे को आदमी का बच्चा नहीं समझते, इसलिए अपनी बच्ची को उससे दूर रखते हैं । कहनीकार ने डौली का चरित्र चित्रण बाल मनोविज्ञान की दृष्टिकोण से किया है । डौली के मन में माली के नवजात शिशु के प्रति बहुत प्रेम है उसका बालसुलभ मन अभिजात वर्ग

और निम्न वर्ग में अन्तर नहीं समझता। कहानीकार ने उसके माध्यम से समाज की आर्थिक विषमता तथा पूंजीवाद में फैली बुराइयों को उजागर किया है।

कथोपकथन : संक्षिप्त एवं सठीक कथोपकथन को कहानी की विशेषता माना गया है । इस कहानी में भी छोटे कथन बहुत गहरी चोट करते हैं । यशपाल की कहानियों में सांकेतिकता, व्यंग्यात्मकता का पुट नज़र आता है । इस कहानी के कुछ कथोपकथन इस प्रकार हैं - जब माली का बच्चा रोता है डौली माँ से कहती है कि ''मामा माली का बच्चा क्यों रो रहा है ।'' माँ कहती हैं - ''भूख से रो रहा है ।'' तब डौली कहती है - ''मामा माली के बच्चे को गर्म पानी में डुबा दो, तब वह नहीं रोएगा ।'' तब माँ कहती है - ''दिस इज वैरी सिली डौली- कभी आदमी के बच्चे के लिए ऐसा कहा जाता है ।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत कहानी में सरल और सहज कथोपकथन के माध्यम से कितनी व्यंग्यात्मक बात कही गई है । अतः हम कह सकते हैं कि इस कहानी में कथोपकथन संक्षिप्त मगर सशक्त है ।

देशकाल व वातावरण : देशकाल व वातावरण कहानी को जीवन्त और विश्वसनीय बना देता है । भारतीय अधिकारियों पर किस प्रकार अंग्रेजियत का प्रभाव पड़ा है । इस कहानी से इस की झलक दिखाई देती है। बग्गा साहब के रहन-सहन, तौर-तरिके, यहाँ तक की भावनाएँ भी किस् प्रकार कुत्रिमता को लिए हुए हैं इस कहानी में वह स्पष्ट नजर आता है । कहानी का वातावरण अति आधुनिकता लिए हुए है । संभ्रांत वर्ग में परिवार में हो रही विषमताओं का सजीव चित्रण किया गया है । और बच्चों को किस प्रकार नौकरों के बच्चों से दूर रखा जाता है तथा नौकरों के बच्चों को आदमी का बच्चा कहकर व्यंग्य किया गया है । इस कहानी में उसकी झलक दिखाई देती है ।

भाषाशैली : 'यशपाल' व्यंग्यकार लेखक हैं । इसलिए इनकी भाषा सरल हाते हुए भी पैनी है जो पाठकों के मर्म तक बरबस पहुँच जाती है । प्रस्तुत कहानी में भाषा कहीं भी जटिल नहीं हो पाय़ी है और शैली बहुत ही प्रभावशाली है । भाषा में पात्रानुकूल अंग्रेजी का भी प्रयोग किया गया है जिससे कहानी बहुत वास्तविक और सजीव हो गयी है ।

उद्देश्य : बिना उद्देश्य के कोई भी कहानी प्रभावशाली नहीं हो सकती। इस कहानी में यशपाल जी ने पूंजीवादी समाज में हो रहे मानवीय मूल्यों के हनन को प्रस्तुत किया है। किस प्रकार आधुनिक समाज आधुनिक की आड़ में कृत्रिम होता जा रहा है तथा भावशून्य होता जा रहा है। मानवीय भावनाएँ उसके लिए कोई मूल्य नहीं रखती। उसका गरीबों के प्रति दृष्टिकोण हीन भावना से ग्रसित हो जाता है। बग्गा, उसका पूरा परिवार अंग्रेजी संस्कृति में रंगा हुआ दिखाई देता है। दूसरी ओर जानवरों के प्रति हो रहे अमानवीय अत्याचार को भी दर्शाना है। अपनी झूठी शान के खातिर किस प्रकार वह जानवर के बच्चों को मरवाते हैं। प्रस्तुत कहानी उद्देश्यात्मक है। अपने उद्देश्य में यह कहानी पूर्ण रूप से सफल है।

पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद

प्रश्न १. 'पुरस्कार' कहानी का सारांश लिखिए ?

उ : जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'पुरस्कार' कहानी ऐतिहासिक घटनाचक्र के ताने-बाने से बुनी हुई है। कौशल राज्य के कृषि उत्सव से कहानी का आरम्भ होता है, जिसमें कौशल राज्य का नरेश कृषक बनकर अपने हाथों से बीज बोता है, जिसमें भाग लेने कंई युवक और राजकुमार आए हुए हैं जिनमें मगध का राजकुमार अरुण भी शामिल है । इस बार खेती के लिए सिंहमित्र की एक मात्र कन्या मधूलिका हाथ में बीज का थाल लेकर कौशल नरेश की मदद करती है। मगध का राजकुमार अरुण मधूलिका के सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है। वह मधूलिका के पूर्वजों की जमीन है। राज्य के नियम के अनुसार वह राजा का खेत हो जाता है, इसलिए पुरस्कार स्वरूप वे उसे स्वर्ण मुद्राएँ देते हैं। मगर मधूलिका आभार सहित पुरस्कार को अस्वीकार कर देती है और कहती है हम इसे बेच नहीं सकते। यह सुनते ही राजा मंत्री से पूछते हैं कि इस उत्सव का परम्परागत नियम क्या है। मंत्री कहता है जिस भूमि को इस उत्सव के लिए चुना जाता है वह राजा का खेत हो जाता है। तब मधूलिका कहती है कि मुझे भूमि समर्पण करने का कोई विरोध नहीं है, किन्तु मूल्य स्वीकार करना असम्भव है। राजा के पूछने पर कि यह कन्या कौन है? मंत्री उत्तर देता है कि महाराज यह वीर सिंहमित्र की कन्या मधूलिका है । महाराज चौंककर कहते हैं, वही जिसने मगध के सामने कौशल की लाज़ रखी थी।

मधूलिका खेत की सीमा पर वृक्ष के नीचे अनमनी सी चुपचाप बैठी है। मगध का राजकुमार अरुण घोड़े पर सवार वहाँ पहुँचता है और मधूलिका से

प्रणय-याचना करता है तथा राजा से उसके खेत को वापस दिलवाने की बात कहता है। राजकुमार को अपनी ओर आकृष्ट देख मधूलिका स्पष्ट शब्दों में कह देती है कि राजकुमार का हृदय राजकुमारियों की ओर न खींचकर एक कृषक बालिका की ओर खींचना उसका अपमान है। राजकुमार वापस चला जाता है।

राजा से रक्षण न लेने के कारण मधूलिका के दिन गरीबी में व्यतीत होते हैं। वह दूसरों के खेत में काम करके अपना जीवन व्यतीत करती है और एक झोपड़ी में रहती है। वह सोचती है कि क्यों उसने राजकुमार का प्रस्ताव ठुकरा दिया। तभी दरवाजे पर दस्तक होती है बाहर कोई व्यक्ति आश्रय के लिए निवेदन कर रहा है । दरवाजा खोलकर मधूलिका सामने राजकुमार अरुण को देख खुशी से झूम उठती है। राजकुमार अपने को मगध का विद्रोही बताता है और एक नए राज्य की स्थापना करना चाहता है तथा मधूलिका को राजरानी बनाना चाहता है। दोनों एक-दूसरे को प्रेम करने लगते हैं। राजकुमार मधूलिका को दक्षिण नाले के समीप की जंगली भूमि को राजा से मांगने को कहता है। ताकि वह उस भूमि को विकसित कर सके। मधूलिका के निवेदन पर राजा वह भूमि देना स्वीकार करते हैं। राजकुमार नौ सैनिकों को लेकर उस भूमि को समतल करने में जुट जाते हैं। मधूलिका अरुण और उसके सैनिकों द्वारा इतने बड़े काम को देखकर आश्चर्य चकित होती है और पूछती है कि तुम नौ सैनिकों को लेकर स्वतंत्र राष्ट्र के अधिपति बन जाओगे। राजकुमार उसे कहता है अभी तुम घर जाओ । मधूलिका का हृदय भयभीत हो जाता है । पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न होता है कि यदि वह सफल न हुआ तो और श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी अधिकार में क्यों चला जाए । मगध, कौशल का चिर शत्रु, उसकी विजय ! और मैं कौशल के रक्षक वीर की पुत्री मधूलिका हूँ आज यह क्या करने जा रही हूँ। वह अन्धकार में चली जा रही थी कभी उसे पिता की छवि दिखती कभी अरुण की। अचानक सामने से अश्वारोही चले आ रहे हैं। कौशल का सेनापति मधूलिका से प्रश्न करता है– 'तुम कौन हो ?'' । मधूलिका चिल्ला

उठती है । मुझे बाँध लो, मेरी हत्या कर दो। सेनापति हँसकर कहता है – पगली है। मधूलिका कहती है, ''श्रावस्ती का दुर्ग एक प्रहर में दस्युओं के हस्तगस्त हो जाएगा। दक्षिण नाले से उस पर आक्रमण होगा।'' मधूलिका की बात सुन मधूलिका को बन्दी बना लिया गया और उसे राजा के सामने ले गए। राजा तथा उनके सैनिकों ने अरुण तथा उसकी सेना पर काबू पा लिया और अरुण को बन्दी बना लिया गया तथा उसे प्राण दण्ड देने का निर्णय लिया गया और मधूलिका को पुरस्कार मांगने के लिए कहा गया। मधूलिका ने एक बार बन्दी अरुण की ओर देखा , अरुण हँस पड़ा। मधूलिका ''तो मुझे भी प्राण दण्ड मिले'' कहती हुई अरुण के पास खड़ी हो गई ।

प्र.२. कहानी कला की दृष्टि से 'पुरस्कार' कहानी की समीक्षा कीजिए ?

उत्तर - ऐतिहासिक घटना पर आधारित 'पुरस्कार' जयशंकर प्रसाद की महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है। इस कहानी में नारी हृदय की कोमल भावना 'प्रेम' और 'कर्त्तव्यपराण्यता' के बीच हो रहे द्वन्द का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। क़हानी कला के तत्वों पर आधारित 'पुरस्कार' की समीक्षा निम्नलिखित है ।

कथावस्तु - 'पुरस्कार' कहानी की नायिका मधूलिका के खेत को कृषि उत्सव के लिए चुना गया है। मगध राज्य का राजकुमार अरुण मधूलिका पर मुग्ध हो जाता है क्योंकि वह अपने खेत का मूल्य अस्वीकार कर देती है । वह एक स्वाभिमानी स्त्री है। अरुण मधूलिका को प्रेम का प्रस्ताव देता है, परन्तु उसे भी वह इन्कार कर देती है तथा दूसरों के खेतों में काम करके अपना भरण-पोषण करती है । एक दिन अचानक मधूलिका के दरवाजे पर दस्तक होती है। दरवाजा खोलने पर अरुण को देख वह प्रसन्न हो जाती है। अरुण उसे मगध का विद्रोही बताता है और एक नए राज्य की स्थापना के साथ-साथ मधूलिका को अपनी पटरानी बनाने की इच्छा जाहिर करता है। मधूलिका उसके प्रस्ताव को स्वीकार करती है तथा अरुण के कहने पर कौशलराज से दक्षिणी नाले के पास की जमीन माँग लेती है। अरुण कौशल राज्य पर आक्रमण करना चाहता है।

यह बात जानकर मधूलिका आक्रमण की सूचना कौशलराज को दे देती है । जिसके परिणाम स्वरूप अरुण को प्राणदण्ड की सजा मिलती है। मधूलिका ने भी प्राणदण्ड ही माँगी तथा अपने-आप को प्रेम के लिए उत्सर्ग कर दिया।

पात्र-तथा चरित्र-चित्रण - प्रस्तुत कहानी 'पुरस्कार' में मुख्य दो पात्र हैं- मधूलिका एवं अरुण। कर्त्तव्यशील स्वाभिमानी, देशभक्त, सच्ची प्रेमिका के चरित्र के रुप में मधूलिका को जय शंकर प्रसाद जी ने इस कहानी में उद्भासित किया है। मधूलिका को अपने पैतृक सम्पति से भी प्रेम है। कृषि उत्सव के लिए उसके खेत को चुने जाने पर वह उसका मूल्य अस्वीकार कर देती है। इस तरह वह एक पूर्ण व्यक्तित्व की नारी है । दूसरा मुख्य पात्र अरुण एक संघर्षशील एवं राज्य से निर्वासित निर्भीक युवक है । मधूलिका के प्रति वह प्रेम की भावना रखता है । प्रसाद जी के इस दोनों प्रात्रों में अन्तर्द्वन्द होता है ।

संवाद – प्रसाद जी की संवाद योजना बड़ी ही सशक्त है । संवादों द्वारा पात्रों के चरित्र को उद्भासित करने में सफल हैं । यथा स्वाभिमानीता को दर्शाते हुए मधूलिका का यह संवाद– "यह मेरे पितृ पितामहों की भूमि है । इसे बेचना अपराध है । इसलिए मूल्य स्वीकार करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है ।"

अरुण का यह संवाद– "मेरा हृदय तुम्हारी उस छवि का भक्त बन गया है देवी !" प्रेम को दर्शाता है ।

मेरे उस अभिनय का– "मेरी विडम्बना का आहा ! मनुष्य कितना निर्दय है ।" यह संवाद-मधूलिका की मार्मिक दशा को व्यक्त करता है ।

देशकाल व वातावरण : 'पुरस्कार' कथा उस समय की कहानी है जब देश में राजतन्त्र का प्रशासन था । 'कृषि-उत्सव' जैसे प्रथा में कृषकों की जमीन को राजकीय संपत्ति का अंश बना दिया जाता था तथा उस जमीन के बदले में उन्हें चार गुना मूल्य दिया जाता था तथा इसके माध्यम से निम्न वर्ग की दशा को भी रेखांकित किया गया है । कहानी के लिए देश काल व वातावरण सामान्य हैं ।

भाषा शैली : प्रसाद जी ने खड़ीबोली का प्रयोग किया है । कहीं-कहीं पर व्यंग्यात्मक ढंग से तथा सामान्य बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया है ।

उद्देश्य : प्रसाद जी ने प्रेम तथा कर्त्तव्य के बीच हो रहे द्वन्द को चित्रित किया है और आखिर में कर्तव्य को श्रेष्ठता दी है । परन्तु प्रेम-भावना को भी उन्होंन महत्व दिया है। कथा के माध्यम से इन्होंने अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए प्रेरित किया है। प्रेम में व्यक्ति तथा सामाजिक रूप का दर्पण दिखाने की कोशिश की है ।

अन्ततः कहानी कथा के तत्वों पर आधारित 'पुरस्कार' नारी में मन का अन्तर्द्वन्द, देश भक्ति की भावना, कर्त्तव्य, प्रेम का सठीक चित्रण किया गया है ।

प्र.३. 'पुरस्कार' कहानी के आधार पर मधूलिका का चरित्र चित्रण कीजिए ?

उत्तर - 'पुरस्कार कहानी प्रसाद द्वारा लिखित प्रेम और कर्त्तव्य के बीच अर्न्तद्वन्द को प्रस्तुत करती है । प्रस्तुत कहानी मधूलिका के इर्द-गिर्द घूमती है । मधूलिका के चरित्र को इस कहानी में पूर्णता मिली है । मधूलिका के चरित्र का चित्रण हम यहाँ निम्नलिखित रूप से कर सकते है ।

साहसी एवं स्वावलम्बी नारी : प्रसाद की कहानियों में नारीं पात्र का विशेष चित्रण मिलता है । उनकी कहानियों से नारी अबला नहीं, सबला के रूप में परिचित होती है तथा पुरुष के साथ कंधे में कंधा मिलाकर काम करती है । प्रस्तुत कहानी में 'मधूलिका' वीर सैनिक सिंहमित्र की पुत्री है, जो पिता के शहीद होने पर भी अपना भरण-पोषण स्वयं अपने पैतृक खेत द्वारा करती है। पिता की तरह उसमें भी वीरता के गुण कूट कू ट कर भरे हैं । सरकारी नियम के अनुसार जब उसका खेत 'कृषि-महोत्सव' के लिए चुना जाता है और उसके बदले उसे चौगुनी रकम देने का ऐलान किया जाता है , तब वह स्पष्ट शब्दों में उसे लेने से इन्कार कर देती है और कहती है, 'मैं अपनी पैतृक सम्पत्ति

के बदले कोई धन नहीं लूँगी बल्कि उसे देश के नाम समर्पित कर दूँगी।'' इससे उसके स्वावलम्बी होने का परिचय मिलता है ।

देश के प्रति समर्पित : पिता की तरह वह भी अपने देश से बहुत प्रेम करती है । जिस मिट्टी की खातिर उसके पिता शहीद हुए हैं। जब उसे पता चलता है कि मगध का राजकुमार उसके बहाने कौशल की भूमि पर आक्रमण करने का इरादा करता है तब वह सकते में आ जाती है । तब वह बिना समय गंवाए कौशल के राजा को इसकी सूचना दे देती है तथा अपने को देशद्रोही मान मृत्यु की याचना करती है । इस प्रकार वह अपने देश के प्रति समर्पित है।

कर्त्तव्यशील नारी : प्रसाद जी ने मधूलिका को कर्त्तव्यशील नारी के रूप में उद्भासित किया है । जब उसके पैतृक संपत्ति को राजसूय यज्ञ के लिए चुना गया था और उसके बदले में खेत की चार गुनी कीमत देने का निर्णय लिया गया तो मधूलिका उसको लेने से इन्कार कर देती है तथा अपने खेत को दान कर देती है । इससे यह साबित होता है कि वह अपने पैतृक संपत्ति के प्रति तथा अपने देश के प्रति भी कर्त्तव्यनिष्ठ है । कर्त्तव्यशीलता का एक और उदाहरण प्रसाद जी ने प्रस्तुत किया है । मधूलिका की सहायता से अरुण कौशल पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था । कुछ समय के लिये मधूलिका प्रेम के प्रति आशक्त हो अपने कर्त्तव्य को भूल गई थी । लेकिन जब उसे कर्त्तव्य का बोध हो आया, तब वह सोचती है कि सिंहमित्र कौशल का रक्षक वीर, उसी की कन्या आज क्या करने जा रही है ? और वह तुरंत अरुण के आक्रमण की सूचना कौशल नरेश को दे देती है । इस प्रकार वह अपने कर्त्तव्य का पालन करती है ।

सच्ची प्रेमिका : मधूलिका एक सच्ची प्रेमिका के रूप में प्रस्तुत हुई है। अरुण के बन्दी होने पर वह अपने लिये पुरस्कार के रूप में प्राणदण्ड माँगती है। इस प्रकार वह अपने प्रेम के प्रति भी सत्यता का परिचय देती है ।

अरुण के प्रथम प्रणय आग्रह में मधूलिका उसे मना कर देती है लेकिन जब वह बार-बार प्रणय निवेदन करता है तब उसका नारी हृदय प्रेम में अभिभूत

हो जाता है । और वह प्रेम के खातिर सबकुछ करने को तैयार हो जाती है । यहाँ तक पुरस्कार स्वरूप वह नाले वाली जमीन माँग लेती है । वह अरुण के साथ सुनहरे जीवन का स्वप्न देखने लगती है । लेकिन कर्त्तव्य की बलि-वेदी पर उसका स्वप्न दम तोड़ देता है । उसके न चाहते हुए भी प्रेम और कर्त्तव्य के बीच कर्त्तव्य की विजय हो जाती है और वह कर्त्तव्य पर प्रेम को न्यौछावर कर देती है, लेकिन सच्ची प्रेमिका होने के नाते अपने प्रेमी के साथ प्राण दण्ड को स्वीकार कर लेती है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद ने मधूलिका के माध्यम से नारी को एक आदर्श रूप प्रदान किया है । मधूलिका सुन्दर होने के साथ-साथ स्वावलम्बी भी है । प्रसाद ने 'मधूलिका' को भाव प्रधान नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है । इसलिये कहा जा सकता है प्रसाद ने 'पुरस्कार' कहानी के नारी पात्र में महान आदर्श एवं महान कर्त्तव्य का समावेश किया है । 'मधूलिका' एक पूर्ण नारी के रूप में हमारे सामने आती है ।

सदाचार का तावीज़

हरिशंकर परसाई

१. **'सदाचार का तावीज़' कहानी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए ?**

उ : हरिशंकर परसाई द्वरा रचित 'सदाचार का तावीज़' एक व्यंग्यात्मक कहानी है । इस कथा के माध्यम से हालात के शिकार लोग किस प्रकार समाज में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते रहे हैं । इसी तथ्य को उन्होंने यहाँ बड़ी ही सूक्ष्मता से दर्शाया है ।

प्रस्तुत कथा सार कुछ इस प्रकार से है । एक राज्य का राजा बड़ा नेक है परन्तु उसके राज्य में भ्रष्टाचार फैल गया है, इस सूचना से वह बहुत परेशान है कि किस प्रकार राज्य से भ्रष्टाचार को समाप्त किया जाए । दरबारियों की सलाह से एक साधु का संधान मिलता है जिनके तावीज़ के प्रभाव से व्यक्ति सदाचारी बन जाता है । भ्रष्टाचार को खत्म करने का यह तारीका राजा को पसन्द आता है और वे पूरे राज्य के लिए तावीज़ बनवाने का ठेका साधू को पाँच करोड़ रुपये पेशगी देकर देते हैं ।

राज्य के प्रत्येक व्यक्ति, सरकारी कर्मचारी की भुजा पर तावीज़ बँध जाती है । भ्रष्टाचार की समस्या के सरल हल से राजा और दरबारी खुश थे । ताबीज़ का प्रभाव देखने की राजा के मन मे उत्सुकता जागी और वे एक कर्मचारी को कई काम बतलाकर उसे पाँच रुपये का नोट देने लगे । इस पर कर्मचारी ने उन्हें डाँटा और कहा - ''भाग जाओ । घूस लेना पाप है ।'' ताबीज ने कर्मचारी को ईमानदार बना दिया था । इस पर राजा बहुत खुश हुए । कुछ दिन बाद राजा फिर वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गए और रिश्वत देने लगे तो कर्मचारी ने रुपये जेब में रख लिया । राजा ने उसे अपना परचिय दिया और

कहा ''क्या तुम आज सदाचार का तावीज़ बाँधकर नहीं आये ?'' कर्मचारी ने बाँधा है कहकर अपना तावीज दिखलाया । राजा असमंजस में पड़गए । उन्होंने तावीज पर कान लगाकर सुना । तावीज में से स्वर निकल रहे थे - ''अरे, आज इकतीस है । आज तो ले ले ।''

इस प्रकार 'परसाई ' जी ने अपनी दैनिक जरुरतों की पूर्त्ति के लिए असमर्थ व्यक्ति किस प्रकार भ्रष्टाचारी बन जाता है अपनी कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

२. कहानी कला की दृष्टि से 'सदाचार का तावीज' कहानी की समीक्षा कीजिए ?

उ : 'सदाचार का तावीज' परसाई जी की एक व्यंग्यात्मक रचना है । इन्होंने इस कहानी के माध्यम से भ्रष्टाचार की ओज तक पहुँचने की कोशिश की है। आर्थिक अभाव को भ्रष्टाचार का क़ारण बतलाया है एवं उसकी समस्या के निराकरण की राह दिखाई है । कहानी कला के तत्वों के आधार पर कहानी की समीक्षा निम्नलिखीत हैं-

कथावस्तु : 'सदाचार का तावीज' एक काल्पनिक तथा व्यंग्यात्मक कहानी है । राज्य में भ्रष्टाचार बढ़ जाने के कारण राजा चिन्तित थे तथा दरबारियों की सलाह से एक साधु की खोज होती है जिनके ताबीज के प्रभाव से व्यक्ति सदाचारी बना ज़ाता है । राजा को यह तरकीब पसन्द आती है । और वे पूरे राज्य के लिए ताबीज बनावाने का ठेका साधु को देते हैं । तावीज के प्रभाव से सभी कर्मचारी ईमानदार हो जाते हैं । परन्तु महीने के आखिर तारीख इकतीस को वेश बदले हुए राजा द्वारा कर्मचारी रिश्वत लेता है। राजा ने तावीज पर कान लगा कर सुना तो भीतर से आवाज आई !''आज इकतीस तारीख है, आज तो ले ले ।

चरित्र चित्रण : 'परसाई' जी के इस कथा में राजा का चरित्र शुरू से अन्त तक दिखाई देता है । थोड़े समय के लिए दूसरे पात्र जैसे मंत्री, विशेषज्ञ, साधु एंव कर्मचारी नजर आते हैं । इन्ही पात्रों के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का वास्तविक आकलन किया गया है । राजा और दरबारी दोनों ही

चरित्र सुलभ हैं एवं राज्य में फैले भ्रष्टाचार के कारण चिन्तित हैं । परन्तु आर्थिक अभाव के कारण हालात से मजबुर होकर राज्य का कर्मचारी भ्रष्टाचारिता की ओर अग्रसर होता है । लेकिन जब उसकी परिस्थिति अच्छी रहती है तब वह रिश्वत लेने से इन्कार कर देता है । इस प्रकार परसाई जी ने भ्रष्टाचार , घुसखोरी को परिस्थिति से प्रेरित बताया है ।

कथोपकथन व संवाद : प्रस्तुत कहानी का संवाद सहज एवं सरल है । परसाई जी ने व्यंग्यात्मक ढंग से कथा के बोलचाल को प्रस्तुत किया है । कथा का यह संवाद भ्रष्टाचार के स्वरुप को दिखाने में सक्षम है ।

राजा ने पूछा - 'विशेषज्ञो, क्या तुम्हें भ्रष्टाचार मिला ।

'जी, बहुत सा मिला ।''

राजा ने हाथ बढ़ाया - लाओ मुझे दिखाओ ।

देखूँ, कैसा हाता है.... ।

विशेषज्ञों ने कहा - ''हुजुर वह हाथ की पकड़ में नहीं आता । वह स्थूल नहीं सूक्ष्म है । अगोचर है । पर वह सर्वत्र व्याप्त है । उसे देखा नहीं जा सकता । अनुभव किया जा सकता है ।

राजा सोच में पड़ गये । बोले - ''विशेषज्ञो, तुम कहते हो कि वह सूक्ष्म है, अगोचर है और सर्वव्यापी है । ये गुण तो ईश्वर के हैं । तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है ?''

विशेषज्ञों ने कहा - हाँ महाराज, अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है ।''

इस कथन से समाज में फैले भ्रष्टाचार की व्यापकता का प्रमाण मिलता है ।

देशकाल तथा वातावरण : हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'सदाचार का तावीज' कहानी का वातावरण सजीव है । उस समय का शासन राजतन्त्र व्यवस्था द्वारा परिचालित होता था । महीने के शुरुआत में कर्मचारी रिश्वत लेने से इन्कार करता है परन्तु वही व्यक्ति आर्थिक तंगी के कारण महीने के आखिर में रिश्वत लेने से पीछे नहीं हटता है । इसी कथा के माध्यम से परसाई जी ने संकेत दिया है कि भ्रष्टाचार का मूल कारण है अर्थिक तंगी । भ्रष्टाचार

के निवारण के लिए हमें आर्थिक परिस्थिति को स्वच्छ रखना होगा । व्यक्ति को आर्थिक सुरक्षा दिए बिना भ्रष्टाचार का नाश कर सदाचार की स्थापना नहीं हो सकती ।

मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत इस कथा का वातावरण सजीव बन पड़ा है ।

भाषाशैली : प्रस्तुत कहानी की भाषाशैली सरल एवं साधारण बोल-चाल की है । व्यंग्यात्मक ढंग से इन्होंने अपने संवाद कहे हैं। इनकी शैली संवेदना प्रकट करती है । इन्होंने अपनी भाषा शैली के माध्यम से समाज में फैली बुराई, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, दुर्नीति आदि का बड़े ही सुन्दर एवं सूक्ष्म ढंग से विमोचन किया है । सदाचार की प्रधानता पूरे राज्य में पायी जाती है । परन्तु परिस्थितिवश वह टिक नहीं पाती । इनकी भाषाशैली में हास-परिहास का भी समावेश मिलता है । इनकी कथा का मकसद विचारणीय है ।

उद्देश्य : उद्देश्य की दृष्टि से कहानीकार ने मनुष्य की मानसिक स्थिति पर विचार करते हुए समाज में फैली कु-प्रवृतियों के कारणों को उजागर किया है तथा उसके निराकरण का उपाय बतलाया है । आर्थिक परिस्थिति स्वच्छल हुए बिना समाज से दुर्नीति को दूर करना सम्भव नहीं । किस तरह मनुष्य हालात के आगे नतमस्तक हो अपनी सदाचारिता का हनन करता है । इसका मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है । मानव समाज के कल्याण के लिए सदाचारिता की स्थापना अनिवार्य है और उसके लिए भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगें । जैसे ठेका है तो ठेके दार हैं तो अधिकारियों की घूस है । ठेका मिट जाए तो घूस मिट जाए । इस तरह के संवादों द्वारा लेखक ने भ्रष्टाचार को खत्म करने के उपाय बताए हैं ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कहानी कला की दृष्टि से 'सदाचार का तावीज' एक व्यंग्यात्मक, रोचक , विचारात्मक एवं प्रभावशाली कहानी है ।

हार

मन्नु भण्डारी

१. श्रीमती मन्नु भण्डारी द्वारा रचित 'हार' कहानी की कथावस्तु संक्षिप्त में लिखिए ?

उ : मन्नु भण्डारी द्वारा रचित 'हार' कहानी यर्थाथवाद पर आधारित है । इसमें लेखिका ने स्त्री की सच्ची और निरपेक्ष तस्वीर प्रस्तुत की है । समाज में स्त्री पुरुष की सहभागिनी और बराबर की हिस्सेदार है । राजनैतिक तथा सामाजिक प्रगतिवादी विचारधारा से प्रेरित 'दीपा' मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हार जाती हैं ।

कहानी की कथावस्तु कुछ इस प्रकार है - दीपा एक शिक्षित समझदार एवं राजनैतिक विचारधारा से युक्त स्त्री है । वह अपने पिताजी से प्रभावित राजनैतिक दल की सदस्या बन जाती है । स्वच्छंद विचारों वाली दीपा राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगती है । एक राजानैतिक वक्ता ने लड़कियों की राजनीतिक बुद्धि को लेकर ताना दिया था । उसे दीपा न भूल सकी । जिससे दीपा की संकल्प शक्ति और भी दृढ़ हो गई तथा वह उससे वाक-युद्ध करने लगी । स्त्रियों की स्थिति को और भी मजबूत करने की भावना उसमें प्रबल हो उठी ।

दीपा ने विपरीत विरोधी दल के सदस्य को अपना जीवन साथी चुना । दोनों ने विभिन्न राजनैतिक दलों से सम्बन्ध रखते हुए भी अपना वैवाहिक जीवन सामान्य बनाए रखा । दोनों अपनी अपनी पार्टियों को मजबूत करने में लगे रहे, कभी कभी उनमें तनाव आ भी जाता तो दीपा का पति शेखर मजाक का माहौल उपस्थित कर देता । इस प्रकार दीपा ने दो वर्षों में साबित कर दिया कि अपने लिए सही जीवन साथी चुना है । दो विपरीत राजनैतिक दलों से

सम्बन्ध रखते हुए भी उनके जीवन शैली में किसी प्रकार का परिवर्त्तन नहीं हुआ ।

स्वतन्त्रता के पश्चात् प्रथम चुनाव का दौर शुरू हो गया । सभी राजनैतिक पार्टियाँ अपना अपना प्रचार करने में जुटी थी । पार्टी ने दीपा को चुनाव में खड़ा करने का निश्चय किया था, परन्तु दीपा के मना करने पर अजीत मिश्रा को पार्टी ने टिकट दिया । दीपा ने पार्टी को अपना पूर्ण समर्थन देने का वादा किया एवं जी जान से चुनाव की तैयारी में जुट गई । दूसरी ओर पार्टी ने शेखर को चुनाव के लिए खड़ा किया । दीपा असमंजस में पड़ गयी उसने कहा अब मुझे तुम्हारी पार्टी के साथ-साथ तुम्हारा भी विरोध करना पडेगा । शेखर ने बड़ी ही सहजता से दीपा से अपना कार्य करने की सलाह दी । पार्टी के सदस्यों को दीपा पर सन्देह होता है, परन्तु दीपा ने अपनी पार्टी के जीत के लिए व्यक्तिगत भावनाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया। अन्ततः दीपा की लगन देख उसकी सराहना की । दोनों पति-पत्नी अपने अपने कार्य में व्यस्त हो गऐ । अपनी पार्टी की आर्थिक तंगी को देख दीपा अपने सारे गहने पार्टी को सौंप देती है। यह सब देखकर भी शेखर चुप रहता है ।

एक दिन जैसे ही दीपा घर पहुँचती है । शेखर को उसके मित्र के साथ बातचीत करते सुनती है । मित्र कह रहा था कि उसकी जीत निश्चित है । शेखर ने कहा- ''जीत की संभावना ही मुझे दुःखी कर रहा है । सोचता हूँ मैं हार भी गया तो उस लज्जा को सह लूंगा । पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा । वह हार का धक्का बर्दाश्त नहीं कर सकेगी । इसीलिए चाहता हूँ कि मैं हार जाऊँ ।'' शेखर के स्वर में हताशा थी।

मित्र ने कहा कि तुम्हारी इतनी निंदा के बावजुद दीपा के पक्ष में हो । शेखर ने कहा - स्त्री अपनी भावनाओं के विपरीत देश के लिए काम कर रही है । तो इस देश का भविष्य सुनहरा होगा । उसकी इसी बात पर तो उससे प्यार आता है ।

दीपा यह सारी बात सुन रही थी । जैसे तैसे रात बीती । सुबह आठ बजे वह अपना वोट अपने पति की पेटी में डाल आयी ।

लेखिका अपनी कथा दीपा के माध्यम से कहने में सफल रही हैं ।

२. **कहानी के तत्वों के आधार पर 'हार' कहानी की समीक्षा कीजिए ?**

उ : मन्नु भण्डारी द्वारा लिखित 'हार' की कहानी समाज में नारी की स्थिति और पति-पत्नी के पारस्परिक संबंध को दर्शाती है । प्रस्तुत कहानी में नारी के सच्चे स्वरूप और यथार्थता को ठेस पहुँची है ।

कथावस्तु : दीपा अपने माँ-बाप की इकलौती जिद्दी लड़की है जो मध्यम परिवार से सम्बन्धित है । पिता एक बुद्धिजीवी थे । वे निर्दलीय थे, मगर उनके घर राजनैतिक दलों के लोगों का आना-जाना लगा रहता था। दीपा का बचपन भी इन राजनैतिक बैठकों में बीता। धीरे धीरे वह राजनीति में रुचि लेने लगी । और बड़ी होकर पिता की अनुपस्थिति में उनकी भूमिका निभाने लगी । और अन्ततः वह एक राजनीति दल की सदस्या बन गयी और पुरुषों की तरह उस दल के लिए जी जान से काम करने लगी, सभा समितियों में बढ़-चढ़कर भाग लेती ।

एक दिन अचानक दीपा के जीवन में बदलाव आया और दूसरे दल के सदस्य जिसका नाम शेखर था, उसकी उससे घनिष्ठता बढ़ी और शादी में परिवर्तित हो गई । शादी के बाद दोनों ने एक दूसरे के विचारों को सम्मान करने तथा एक दूसरे के कार्य कलापों में दखल न देने की कसम खाई। दीपा की शादी का दीपा के पार्टी के लोग विरोध करने लगे । लेकिन दीपा ने उसे व्यक्तिगत बात कहते हुए बात को सम्भाल लिया । दोनों अच्छे पति-पत्नी साबित हुए जिससे दीपा के पिता की कड़वाहट खत्म हो गई ।

देश आजाद हो गाया । स्वतन्त्र देश में दोनों को ही दोनों दलों के लोगों ने चुनाव लड़ने के लिए खड़ा करना चाहा । दीपा ने आनाकानी की व स्वयं

नहीं खड़ी हुई। दीपा ने पार्टी और घर को अलग रखते हुए अपने गहनों को पार्टी के आर्थिक स्थिति के सुधार के लिए दे दिया एवं अपने ही पति के विरुद्ध प्रचार करने लगी । दीपा की कार्य दक्षता और विचारों को देखते हुए पार्टी के लोग उसका सम्मान करने लगे । चुनाव के कारण पति पत्नी कई दिनों तक मिल भी न पाते । दीपा अपने पति की व्यस्तता को अपना अपमान समझने लगी।

चुनाव के एक दिन पहले दीपा देर से घर लौटी तो देखा उसके पति की कमरे की लाइट जल रही है और शेखर किसी मित्र से बात कर रहा है। छुपकर दीपा उन दोनों की बातें सुनी की शेखर चुनाव जीतना नहीं चाहते, क्यों कि अगर वे चुनाव हार जाएगें तो अपने को सम्भाल लेगें । लेकिन दीपा इस हार को बरदास्त नहीं कर पाएगी, वह टूट जाएगी । इतना सुनते ही दीपा हतप्रत हो गई । यह सुनते ही दीपा में अपने पति के प्रति सम्मान बढ़ गया । अगले दिन सुबह वह देर से उठी और चुनाब केन्द्र गई तथा अपना वोट पति के लिए बक्से में डाल आई और अपनी हार अपने आप चुन ली ।

पात्र व चरित्र-चित्रण : प्रस्तुत कहानी दीपा नामक पात्र के इर्दगिर्द घुमती है । समाज में जब नारी को पुरुष अपने समान हक नहीं प्रदान करता तथा राजनीति जैसे क्षेत्र में उसका वहिष्कार करता है तब यह कहानी नारी के आत्मसम्मान तथा राजनीति में सक्रियता को खुले दिल से स्वीकार करती है । यहाँ दोनों ही पात्र दीपा एवं शेखर समाज के उन पति-पत्नी का प्रतिनिधित्व करते हैं जो एक ही क्षेत्र में कार्यरत हैं और एक दूसरे की भावनाओं तथा विचारों का सम्मान करते हैं । व्यक्तिगत भावनाओं को कार्य क्षेत्र में स्थान नहीं देते । दीपा एक जिद्दी, लाड़ली बेटी है । उसकी परवरिश राजनैतिक माहोल में हुई है। यह बात शेखर जानता है । पति-पत्नी का रिश्ता बहुत नाजुक होता है । लेखक ने शेखर के जरिए पुरुषों के अहं को नकारा है । तथा नारी को समान अधिकार देने के पक्ष की वकालत की है । दीपा को भी शेखर के इस निर्णय से अपने जिद्दीपन पर सोच होता है और उसमें बदलाव आता है । वह भी शेखर के प्रति अपने कर्त्तव्य को महसुस करती है और जीती हुई बाजी को हार जाती है ।

लेखक ने दोनों के माध्यम से पुरुष और स्त्री को परस्पर एक दूसरे का पूरक माना है । तभी समाज में स्त्री पुरुष के द्वारा पनप रही समस्या का समाधान किया है । और अबला कही जाने वाली नारी सबला हो सकती है । लेखक ने शेखर में एक आदर्श पति की कल्पना की है ।

संवाद : प्रस्तुत कहानी का कुछ अंश लेखिका की आत्मकथा है । इस कहानी का संवाद साधारण है । अच्छे संवादो के कारण कहानी तीव्र एवं गतिशील बन पड़ी है। संवादों से कथा का विकास एवं वातावरण का पता चलता है । संवाद्रों द्वारा पात्र के चरित्र को कुछ इस प्रकार उभारा गया है ।

एक राजनीतिक व्यक्ति ने कहा ''अब लड़कियों से राजनीति के मामले में बहस कौन करे - राजनीति की ए बी सी डी तो जानती नहीं ।

इस पर दीपा कहती है - ''हाँ राजनीति का ठेका तो आप लोगों ने ले रखा है न ? भेड़िया धसान की भांति काम करते हैं और राजनीति की डींग हाँकते हैं ।''

इस प्रकार पात्र के संवाद माध्यम से देश की परिस्थिति एवं चरित्र को दर्शाने की सफल चेष्टा की गई है ।

देशकाल व वातावरण : प्रस्तुत क़हानी देश की आजादी से पूर्व से शुरू होकर आजादी के पश्चात् हो रही राजनैतिक परिस्थिति में उथल पुथल का सजीव चित्रण किया गया है । यहाँ नारी का स्थान तथा उसके सम्मान का विषय प्रमुख है। 'हार' नामक कहानी लगभग १९४५ से १९४७ तक के समय का प्रतिनिधित्व करती है । लेखिका ने वातावरण का ध्यान रखते हुए समाज में नारी की स्थिति तथा उसके अधिकारों की बात कही है ।

भाषाशैली : प्रस्तुतत कहानी की शैली कथात्मक है । तथा भाषा सरल व बोधगम्य है । लेखिका ने अपनी आत्मकथा कहते हुए साधारण वार्त्तालाप के माध्यम से कथा को आगे बढ़ाती है । कहीं कहीं पर उनकी शैली भावनात्मक तथा संवेदनशील बन पड़ी है । पात्रों का चरित्र एवं उसके विचार आत्मकथानक शैली में उभर कर सामने आते हैं ।

उद्देश्य : प्रस्तुत कहानी में मुख्य उद्देश्य नारी मुक्ति और उसको समाज में बराबरी का दर्जा देने का है । स्वतन्त्रता से पहले हर क्षेत्र में नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लडती रही । आजादी के बाद उसी नारी की आकृति को समाज में तोड़ा मरोड़ा गया और उसे स्वप्न में विचरित अलौकिक मूर्ति में तबदील कर दिया । जिससे नारी की सच्चे और यथार्थ तस्वीर सामने नहीं आ पाई । मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानी में उस स्त्री की साफ और सच्ची तस्वीर प्रस्तुत की है । नारी सामाज में पुरुष की सहकर्मी, सहधर्मी होने के साथ-साथ बराबर की हिस्सेदार भी है । पति पत्नी के भावात्मक रिश्ते तथा व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य के टकराव की कहानी 'हार' है । एक ही राजनैतिक क्षेत्र में रह कर भी पति पत्नी आपसी व्यक्तिगत गुणों और भावनाओं का आदर सत्कार करते हुए अपने अपने कार्य क्षेत्र में योगदान दे सकते हैं । इसी उद्देश्य से ओतप्रोत मन्नु भण्डारी की यह कहानी 'हार' है ।

प्र.२ 'हार' कहानी के आधार पर 'दीपा' का चरित्र चित्रण कीजिये ?

उ : मन्नु भण्डारी द्वारा रचित 'हार' कहानी की नायिका दीपा प्रधान एवं सशक्त पात्र है । दीपा एक मध्यम वर्गीय परिवार की इकलौती लड़की है तथा उसका बचपन बड़े ही लाड़-प्यार से बीता है जिसके कारण उसका स्वाभाव जिद्दी है । वह एक स्वच्छन्द विचारधारा की नारी है तथा अपने पिता से प्रेरित वह राजनीति में सक्रिय भाग लेती है ।

दीपा के चरित्र की कुछ निम्नलिखीत विशेषताएँ प्रस्तुत हैं

लाड़-प्यार में पली संतान : दीपा एक मध्यमवर्गीय परिवार सम्बन्धित अपने माता-पिता की इक लौती संतान है । बचपन में अधिक लाड़ प्यार मिलने के कारण वह थोड़ी जिद्दी स्वाभाव की है। पिता को अपना आदर्श मानती है । पिता के राजनैतिक दिलचस्पी के कारण उसपर भी राजनीतिक क्रियाकलापों का प्रभाव पड़ा जिसके कारण वह राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगती है ।

स्वाभिमानी एवं महत्वाकांक्षी : मन्नु भण्डारी ने दीपा को एक स्वाभिमानी एवं महत्वाकांक्षी नारी के रूप में चित्रित किया है । दीपा ने अपना व्यक्तित्व समानता एवं स्वतन्त्रता के रूप में विकासित किया है । जब एक वक्त के किसी कथन पर दीपा आपत्ति प्रकट करती है, तब वक्त ने उसे झिड़कते हुए कहा, ''अब लड़कियों से राजनीति के मामले में कौन बहस करे - राजनीति की ए.बी.सी.डी. भी तो जानती नहीं।'' इस कथन से दीपा के स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है तथा उसकी राजनीति के क्षेत्र में महत्वाकांक्षा और भी बढ़ जाती है । इन्हीं गुणों के कारण वह अपने पति की भी परवाह नहीं करती है तथा उनके विपक्ष में खड़ी होकर चुनाव प्रचार करती हैं ।

आधुनिक स्वच्छन्द नारी : लेखिका ने दीपा के व्यक्तित्व से उसकी स्वच्छन्दता को उजागर किया है । वह नारी को पुरुषों के समान समझती है तथा पुरुषों को प्राप्त सभी अधिकारें का उपयोग करती है । वह एक कर्मयोगी महिला है एवं अपने काम के सिलसिले में वह देर रात तक बाहर रहती है । दीपा एक स्वतंन्त्र विचार वाली नारी है । वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने में विश्वास करती है । इन्हीं विचारों के कारण उसने अपने विरोधी पार्टी के कार्यकर्ता को अपना जीवन साथी बनाया । वह अपनी पारिवारिक एवं राजनैतिक जिम्मेदारियों को बखुबी निभाती है तथा पारिवारिक एवं राजनैतिक समस्याओं का प्रभाव किसी पर नहीं पड़ने देती है । इस प्रकार यह ज्ञात होता है कि दीपा एक आधुनिक स्वतंत्र विचारों वाली नारी है ।

भावुक नारी : लेखक ने दीपा के कोमल भावनाओं का चित्रण किया है । दीपा की भावुकता कथा के अन्त में नजर आती है । एक दिन जब दीपा घर आती है तो वह शेखर को अपने मित्र से बातें करते सुनती है । मित्र ने कहा - ''पता नहीं क्यों तुम दो-तीन दिन से बड़े खिन्न दिखाई देते हो । अरे, मुझसे शर्त लगा लो; जीत तुम्हारी निश्चित है ।''

शेखर ने बड़े हताश और बुझे हुए स्वर में कहा – ''इसी का तो गम है भाई, मेरी जीत की संभावना ही मुझे खिन्न बनाये दे रही है । सोचता हूँ मैं हार

भी गया तो उस लज्जा को सह लूँगा । पुरुष हूँ, और सहने का आदी पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा । तुम देखते हो, पगली हो गयी है इसके पीछे । वह हार का धक्का बर्दाश्त नहीं कर सकेगी और सच पूछो तो इसीलिए चाहता हूँ कि मैं हार जाऊँ ।"

इन बातों को सुनकर दीपा के मन में अपने पति के प्रति कोमल भावना जाग्रत हुई और वह दूसरे दिन सुबह अपना वोट अपने पति के पेटी में डाल आयी ।

इस प्रकार मन्नु भण्डारी ने दीपा के जरिए नारी की संपूर्ण भावना को जागृत करने की कोशिश की है ।